2673
2674
2674

शीर्षकहीन

(कहानी, निबंध कविताएं)

डॉ. रामप्रसाद मिश्र

आदरणीय श्री बी. एल. राजदान जी
को सादर,

उपप्रधान

17.7.2010.

2673

शीर्षकहीन

(कहानी, निबंध कविताएं)

शीर्षकहीन

(कहानी, निबंध कविताएं)

डॉ. रामप्रसाद मिश्र

267

नमन प्रकाशन
नई दिल्ली–110002

© लेखक
ISBN : 81-8129-263-4
ISBN : 978-81-8129-263-6
पहला संस्करण, 2010
मूल्य : 250/-

ISBN 81-8129-263-4
9788181292636

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोनः 23247003,23254306

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रेस, मौजपुर, दिल्ली-110053 में मुद्रित।

समर्पण

साहित्यिक जीवन के 'कृपालुओं' को सादरः

1. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र (लखनऊ)

2. डॉ. चक्रधर 'नलिन' (रायबरेली)

3. डॉ. राजकुमार (जबलपुर)

4. डॉ. सुधांशु नायक (भुवनेश्वर)

5. डॉ. रमेशचंद्र शर्मा (कानपुर)

कृतज्ञः रामप्रसाद मिश्र

यह संग्रह

कविताएं, निबंध, कहानी प्रभृति का सोमरस (एक लता को निचोड़कर उसके रस में दूध, दही, माखन, घी, मधु मिलाकर बनाया गया अद्‌भुत पेय जो सोम-देवता माना गया और जिस पर मानव के आदिग्रंथ ऋग्वेद में एक हज़ार मंत्र हैं)? खिचड़ी? कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा?...जो चाहे कहे; किंतु प्रार्थना है, पढ़कर ही निर्णय दें। बिना पढ़ी आलोचना बहुत भड़कीली होती है; जो चाहे कहो या लिखो! अर्से से रोगी था। 2002 ई० से शय्या-बंदी हुआ। तब से जो लिखा वह ('मधुमेहः विषमरु' रोगकथा या 'डाइबिटीज़ः डाई-बाइट्स' डिजीज़ोलॉग को छोड़कर) यहाँ प्रस्तुत है। रोग की भयावहता, मृत्यु की निकटता, आग्रहवश चिन्तना, हँसने की विवशता, यह वह...! अपने ढंग की अकेली पुस्तक।

पर्याप्त है न? अधिक तो नहीं लिख गया?

रामप्रसाद मिश्र

अनुक्रम

		पृष्ठ
1.	माँ! दूध	9
2.	महामना भारतभूषण मालवीय	14
3.	सरदार था वह क्योंकि था असरदार भी!	18
4.	महावीर हनुमान : कथा और इतिहास	23
5.	रस-चर्चा	26
6.	सांस्कृतिक उपन्यास	28
7.	अप्रतिम गीतकार : शैलेश	30
8.	हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ	35
9.	करगिल	36
10.	माँ! भेजो ये जामुन करगिल	38
11.	कश्मीर	40
12.	केरल	41
13.	महाराष्ट्र	43
14.	स्वतंत्रता का युद्ध अनवरत	45
15.	जो जीवन से जुझे वह साहित्यकार है	47
16.	देशद्रोहियों के विकराल काल बन जाओ!	48
17.	प्यारा हिंदी-गीत महान्	49
18.	विश्वकवि तुलसी	51
19.	संसद	53
20.	रक्तदान	54
21.	मैं बिकाऊ हूँ!	55
22.	हरसिंगार : इक्कीसवीं सदी	57
23.	बीसवीं सदी का सारांश	58
24.	गीत	59
25.	बेईमान दुनिया में कविता भी बेईमान हो गई है!	60
26.	तराना इक्कीसवीं सदी का	61
27.	आह, शोकतंत्र!	62
28.	कैसे गाऊँ गीत प्रीत के वाणी रूठी?	63
29.	मैं बूढ़ा हो गया...	64
30.	क्यों देखता हूँ?	67
31.	पूजे जाते यहाँ राष्ट्रद्रोही, अपराधी	69

32. अब शरीर छल करने लगा है 70
33. आह, पराजय-अंधकार में विजय-दीप किस भाँति जलाँऊ? 72
34. परिचय 74
35. पता नहीं क्या होता जीवन? 75
36. कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा? 77
37. अतीत निहारा करता 79
38. घर का घमंड 80
39. आपे से बाहर बुढ़ापा 83
40. सब हैं अपने, सभी पराए 84
41. हाइकु-पत्र 85
42. आस्था हिलती लगती 86
43. कसाइयों और कसाईघरों में 88
44. दिन में जीता, रात में मरता 89
45. अब तो लिखने पढ़ने से भी मन कतराता है 90
46. मृत्युपूर्व (?) की क्षणिकाएं 91
47. रोग शय्या पर 92
48. दर्पण झूठ बोलता है 93
49. तपेदिक-सौंदर्य 94
50. ये ही 'अतिम शब्द' हों! 95
51. हाल-बेहाल 96
52. समाचारपत्र में पढ़ा, फागुन आया! 97
53. सेक्युलरइज़्म 98
54. सम्राज्ञी सोनिआ महान्! 100
55. भारत-चालीसा 102
56. द्विपद-चालीसा 106
57. हिंदू-चालीसा। 110
58. समस्या-चालीसा 114
59. काँग्रेस-चालीसा 118
60. भाजपा-चालीसा 122
61. कॉम्युनिस्ट-चालीसा 126
62. गांधी-चालीसा 130
63. नेहरू-चालीसा 134
64. विषनाथ-चालीसा 138
65. सोनिआ-चालीसा 142
66. उर्दू-चालीसा 148
67. 'सेक्यूलर'-चालीसा 149

1. माँ! दूध

किरण गुमसुम बैठी बिखरे-बिखरे विचारों में खोई हुई हैः किशोरावस्था कितनी सुहानी होती है। वह भी विद्यालय-परिधान में उछलती-कूदती जाती तो यह स्वप्न भी न देखा था कि ज़िन्दगी कितनी सख्त होती है। और, वह दृष्टिदान। लड़का समवयस्क भी था, सुंदर भी! कई वर्ष बीत गए। क्या पुलक थी! क्या मुस्कान थीः जाति, गुण, मिलते सब थे। पर सौतेली माँ ने विवाह नहीं होने दियाः लड़की गाँव घर से दूर बिजनौर में होगी। अपना चमोली जिले का सुंदर गाँव। यह वह पिता पुलिसमैन थे। जब माँ हुई दूसरी तब बाप हुआ तीसरा! आयु में अंतर या 'माँ' का पूरा रोब! पिता को राजयक्ष्मा हो गया। पहले ध्यान न दिया। बाद में समय चूक चुका था। पहली पत्नी से एकमात्र संतान किरण के विवाह की इच्छा तीव्र होना स्वाभाविक था। 'माँ' ने एक रिश्ता बतायाः 'लड़का' गोरा-चिट्टा है, फौज़ी। घर-द्वार, गोशाला, पेड़, खेत, सब चौकस! हाँ, उमर कुछ ज्यादा है...

कितनी?

दस-बारह साल होगी? पहाड़ में तो आम बात है। सुना है, यूनान में बड़ी उमर के पति का रिवाज़ है और विवाह हो गया। धीरे-धीरे पता चला, अट्ठाईस साल बड़ा है और पाँचवा विवाह है। एक पत्नी तो यही गाँव में ही मौजूद है जहाँ आता-जाता भी है, एकाध-और जीवित है। वैसे, यह इतनी यातना देता है कि पत्नियाँ मर जाती हैं। इसे संतान की इच्छा नहीं, बस मज़े लूटने से सरोकार है झूठ-मूठ की बातों के बल पर नई-नई पत्नियाँ लाता रहता है। बला का शराबी है। उसे यह भी लगा, कानों में भनक भी पड़ती रही कि सौतेली-माँ ने चुपचाप कुछ रुपए भी लिए हैं।

पर, अब क्या? पतिदेवता साक्षात् ईश्वर! पीकर पीटता भी। अत्याचारों की अकह-कहानी। प्रायः एक घटना आँखों के सामने प्रायः कौंध जाती हैः मेले में चूड़ियाँ पहन रही थी। कई रंगों की बढ़िया चूड़ियाँ। और अत्याचार और प्रवंचन भूलकर खूब पहनी। पैसे पूछे। उत्तर मिला सोलह रुपए! पति भगवानसिंह आगबबूला हो गया। उसने मेले की भारी भीड़ और दुकान पर कई ग्राहकों के सामने जूते पहने पैर से ऐसा मारा

कि वह बैठे से गिर पड़ी। ग़नीमत कि दुकानवाले की चूड़ियाँ नहीं टूटीं अन्यथा अधिक भरना पड़ता और तकरार होती सो अलग। भगवानसिंह की आज्ञा पर चूड़ियाँ उतार दी गई।...उस समय किरण ने आत्महत्या पर विचार किया था। लेकिन गर्भवती थी। पुत्र के आसार थे।

इसी समय तीनों सौतेले-भाई मेला घूमते-घूमते आ गए। पता चलने पर भगवानसिंह को आड़े हाथों लिया, खूब खरी-खोटी सुनाई। तीन नवयुवकों के सामने ज़हर का घूँट पीने में ही ख़ैर दीखी।

यथासमय माँ बनी। आयु अठारह से भी कम। भाइयों के कारण भगवानसिंह की इच्छा कि यह मायके भाग जाए या आत्महत्या कर ले या मर जाए, पूरी न हो पाई, उधर भाइयों तथा अन्यों ने समझा कि भगवानसिंह सुधर रहा है। किरन गाली-गलौज पर ध्यान देतीः

अन्न की छार, पिया की गारी।
ई जनि मेट्यो, राम! हमारी।।

मारपीट भी सहतीः भाग्य की बात! करम गति टारे नहिं टरी!...लड़का उस पर गया था पतली काठी, ठीकठाक कद, ठीकठाक रंग। भगवानसिंह लगभग छिआलीस साल का प्रौढ था। अतः अब पिता बनने पर बहुत असंतुष्ट न था। फिर भी एक तो पार्वत्यजन आयु में कम लगते हैं, दूसरे सेना में काम कर चुका था, तीसरे चुस्त-दुरूस्त गोरा-चिट्टा बंदा था, चौथे आदतन नई-नई पत्नियों का अभ्यस्त। अतएव, स्वभाव बेचैन कर देता था। संतानोत्पत्ति पर स्वयं एक कानी कौड़ी खर्च न की थी, किंतु पहली संतान पर मायके की ओर से कुछ सहायता मिल गई थी। जच्चा, बच्चा दुर्बल तो थे पर बचे रहे।

धुर पहाड़ी इलाका। घर दूर-दूर। हर घर के चारों ओर खुली जगह या लगभग था असमतल पर्वतांश। किरण का घर, वस्तुतः भगवानसिंह का घर, नदी-तट पस्सा था, अतः एक ओर निर्जन। गोशाला नदी-पार। पहाड़ी नदी। चट्टानों भरी। नारी के काम अनेक, नर का हल चलाना एक। जो शौकीन, वह शराब बनाता। जो सैनिक थे वे कुछ बचाकर लाते, कुछ नगर की 'कैंटीन' या सरकारी-दुकान से लाते जहाँ सैनिकों को बहुत सस्ती मिलती है, और चौगुने दामों में बेचते। मँहगी शराब संपन्न किसान, दुकानदार, कारीगर वगैरह ही खरीद सकते थे। शेष या तो स्वयं बनाते या कलाल-कलालिन के यहाँ जाकर सस्तीवाली पीते। भगवानसिंह इसी वर्ग का व्यक्ति था। कुछ समय इस चक्कर में निकलता, कुछ एक पूर्वपत्नी के साथ, कुछ इधर-उधर गप्पाष्टक में कुछ घर में लड़ने या किरण को पीटने में, शेष सोने में, हल के समय हल लगा देता, बस। किरण चाय-पानी, रोटी-दाल-चावल, घास, पशुचिंता, दोहन इत्यादि में खपी रहती। इस-सब से उसे

असंतोष न था क्योंकि यह इस क्षेत्र की जीवन-प्रणाली थी जिसका अनुगमन धनी महिलाएं भी करती थी। उसे दुःख पति की मारपीट और पूर्वपत्नीरुचि से था। कुछ स्त्रियों से गपशप भी करता था। ऊपर से, किरण पर संदेह भी करता था।

फिर गर्भवती हुई। लक्षण पुत्र के ही लगे और बताए गए। जब प्रसवकाल निकट आया तो नन्हें पुत्र को ननिहाल भेज दिया गया। भगवानसिंह ने आत्मीयजन, स्वजन, परिजन, सब को दूर-सा रखा। उसने इस बार पक्का इरादा कर लिया था कि घर-गिरस्ती का जंजाल अधिक न बढ़ाएगा। एक पुत्र बहुत है और वह भी न होता तो क्या? अपनी ज़िन्दगी मौज-मस्ती में बीतनी चाहिए। इस बार वह जच्चा-बच्चा दोनों से परित्राण पाना चाहता था। बच्चे का जन्म हो गया। गाँव की दाई या नर्स थी, कुछ स्वजन थे। बस। अब चालीस दिन का वह काल सामने था जिसमें जच्चा अशुद्ध समझी जाती है और प्रसव-कक्ष में ही रहती है। किरण के लिए न हरीरा था, न मेवे, न दूध। उधर, भगवानसिंह ने देखा कि मैदान साफ़ है। मूँछा पर ताव देता अपने एक शराबी दोस्त के यहाँ पीने चला गया।

दोस्त भतीजों के साथ रहता था क्योंकि दूसरे विवाह में नई-नवेली दुल्हन और फिर से दहेज के फेर में पड़कर एक चट्टान के सिरे पर घास काटती पत्नी को धकेल कर चलता तो किया, शव को भी ठिकाने लगा दिया, पर हत्या का संदेह दूर-दूर तक फैल गया और छड़ा-का-छड़ा रह गया। खेती थी। शराब बनाता, पीता, पिलाता, बेचता और निश्चिंत रहता। बोलाः ये जो शराब हम पी रहे है वो चावल या गन्नारस या अनन्नास वगैरह की नहीं है, महुए की है। क्या चीज़ है महुआ भी! टपकता है तो मोती, सुखाकर भूनौ तो गरीबों की किशमिश, शराब बनाओ तो गन्न हटेदार-भन्नहटेदार। नशा ऐसा जोरदार-मरोड़दार कि बड़े-बड़े शैम्पेन या जॉनीवाकर या वोदका पीनवाले भी हैं बोल जाए। जरा-सा तेज़ाव पड़ा हो तो जैसे भाँग की पिसाई में ताँबे के पैसे की रगड़...ये ताड़ी से तेज़...

राम भजो, ताड़ी तो इसके आगे ताड़ी बजा-बजाकर भाँवरे भरती है। कहते हैं कि यही ग़नीमत रही कि अंगूर के बेटा न हुआ। लेकिन, महुआ अंगूर का बाप जरूर है। दोनों ने डटकर चढ़ाई और बहकने लगेः यार भगवानसिंह, तू तो अब घर-गिरस्ती-दार शरीफ़...

किसने कहा? अबकी ऐसी स्कीम बनाई है कि छठवीं भाभी शीघ्र हो... मारनेवाले से बचानेवाला बड़ा है। जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय... सब बकबास! तूने किस तरक़ीब से...

पर तेरी तो बच गई।

अबकी देखना! न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

उधर, घर में किरण भूख प्यास से विकल थी। स्तनों में दूध कम था। बच्चा किसी तरह जी रहा था; बस। किंतु, चालीस दिन का नियम। कहीं जा न सकती थी।

सोअर की आग में किसी तरह मूँग की दाल चढ़ाई। पानी पिया गरम-गरम तो दाल के स्वाद का पता चला। दाल खाई। कई दिनों तक ऐसा किया। पर, कितने दिन खींचती? भगवानसिंह ने ऐसी निरापद योजना बनाई थी कि त्राण न था। वह केवल रात्रि में आता और लंबी तान देता। किरण खिड़की से देखती कि कोई स्त्री निकले तो पुकारे और कुछ व्यवस्था करे। किंतु ऐसा योग भी न बन पाता था क्योंकि ज़ोर-से बोलने की ताकत न थी। स्तनों में दूध न था। बच्चे को दाल का पानी या चावल की ढीली-ढीली माडी पिलाने का यत्न करती। बाप पर गया गोरा बच्चा हड्डियों का ढाँचा भर रह गया था। प्रायः आँखें बंद किए पड़ा रहता या शक्ति के अभाव में धीरे-धीरे रोता। माँ-बेटे की आँखें दो-चार बार ही मिल पाती। माँ के मौन आँसू, बेटे की निस्संग-प्रियमाण दृष्टि। एक दिन एक महिला ने किरण की पुकार सुन ली। अपेक्षाकृत निकट थी। अपरिचित भी। बुलाने पर घर में आई और किरण के बताने पर आटा-दाल-चावल, लकड़ी-माचिस वगैरह ढूँढ-ढ़ाढ़ कर रख गई। थोड़ा-थोड़ा ही क्योंकि अधिक था ही नहीं घी-दूध की एक बूँद नहीं। उसे जाना था। किरण में जान न थी पर किसी तरह लस्टम-पस्टम आटा-पानी का गर्म घोल तैयार किया। नमक पड़ा। गुड़ या खाँड़ या शक्कर नदारद। पिया तो लगा अमृत मिल गया। बच्चे को पिलाया। परंतु दो दिनों बाद लगा कि वह तो शायद प्रसूतिकक्ष के चालीस दिन खींच-खाँच कर निकाल ले, पर बच्चा न निकाल पाएगो। रोती रहती। चुपचाप। गुमसुम। स्तनों में दूध न निकल सका। जब लगा कि बच्चा अब चला, अब चला, तब एक पतली-छोटी चाकू से दाँई कनीनिका से रक्त निकलने का उपक्रम किया तथा बच्चे के मुँह में लगा दिया। बच्चे में भी जिजीविषा थी। थोड़ा-सा चूसा किरण गद्‌गद नित्य स्वयं आटा-पानी-नमक-घोल या दाल या खिचड़ी बनाती और बच्चे को घोल पिलाती और रक्त चुसवाती परंतु दोनों को पर्याप्त अशन न प्राप्त हो पा रहा था और ऊर्जा का ह्रास स्पष्ट प्रतीत होता था।

छब्बीसवाँ दिन था। 'रक्तपान' कराते हुए किरण मूर्च्छित हो गई। बच्चा अपनी दुर्बलता के अनुरूप 'जीवनयत्न' करता रहा।

भगवानसिंह रात में लौटा तो एकदम सन्नाटा पाया। बाँछे खिल गई। दूर से झाँककर देखा तो माँ-बच्चा दोनों निढाल मौन पड़े थे। दौड़ा-दौड़ा भाई के घर गया। एकन्दो पड़ोसियों से भी कहा। ढ़ाडें मारकर रोताः हाय किरण! हाय बेटा! जितने लोग उस कंठिन पार्वत्य अंचल में एकत्र हो सकते थे, हुए। किरण की साँसें चल रही थीं। पानी के छीटे दिए गए। उसने आँखें खोल दी। मेरा बच्चा! मेरा लाल! मेरे कलेजे का टुकड़ा!...

बच्चा मर चुका था। किरण के पास अधिक विलाप का बल भी न था। उसने देखा, बच्चे की आँखें बंद हैं और अधर-ओष्ट चौस्यमुद्रा में!

भगवानसिंह सकते में। परंतु शोक का ईषत्-नाटक करता रहा। किरण ने उसकी और देखा भी नहीं। भगवानसिंह ने श्वेत-वस्त्रावृत बच्चे का शव उठाया। उसके भाई के

कंडे की आग उठाई। लोग शिशु को समाधिस्थ करने चले गए। किरण के साथ भाभी तथा दो-तीन महिलाएं बैठी रहीं। कुछ देर बाद कार्य और कारण वश वे भी अपनी राह लग लीं। वह अकेली चुपचाप बैठी थी; आँखों के आँसू भी दग़ा दे गए थे। यथासमय भगवानसिंह वगैरह लौटे। पूछने पर देवर ने बतायाः बड़े वाले खेत के नदी की ओर के दक्षिणी कोने में दफ़न...

गहरे किया है न? जानवर...?

बहुत गहरे और ऊपर ढेरों पत्थर तथा झाड़-झंखाड़ जमा दिए हैं।

किरण ने कृतज्ञ दृष्टि से देखा। चुप रही।

फिर वही गति। पृथिनी सतत-गतिशील है अतः उसका प्रत्येक पदार्थ गतिशील है। हृदयजन्म के पूर्व से ही गतिशील रहता है और गति रूकी कि अंत हुआ। घर-द्वारा, घास काटना और गोशाले में आँखों-कानों को एक केन्द्र बड्ड भिए बैलों की जोड़ी तथा 'ओ...यँ...ओयँ, करती भैंस के आगे लगाना, गोबर हटाकर खाद या कंडे-उपले बनाना, पशुओं की सफ़ाई-नहलाना, लकड़ियाँ लाना, यह, वह दम लेना दूभर। बीच-बीच काल को देखकर अपनी वापसी तथा शिशु का हृदय विचारक अवस्दान और बिजनौर वाला लड़का जूनिअर एंजिनीअर होकर देहरादून में बस गया है जिसमे अपने बनवाए घर का नाम 'किरण रखा है।...

एक दिन सवेरे उठी तो चाय देते समय 'पति' से बतायाः अभी, जगने से दो पल पहले ही सपना देखा कि बच्चा पुकार रहा है, :'माँ! दूध...', माँ! दूध...

भगवानसिंह ने उसे ध्यान से देखा; तीन वर्ष पूर्व की सुडौल नटखट लड़की आज खडखड-काया व्यथा-निमज्जित प्रौढ़ा। उसने बच्चे को जीवितावस्था में कुछ पल ही देखा था मृतावस्था में देर तक। कुछ पल चुप रहा। किरण उसकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में थी। जब न प्रतिक्रिया हुई तब लौटने लगी। भगवानसिंह ने कहाः अभी दूध लेकर समाधि पर चलते है। चटपट चाय पी लो।...'

चकित किरण लौटी। चाय केतली में ही ढँक दी; लौटकर पिएगीः सवेरे का सपना सच होता है उसने नंदादेवी, काली माता, दुर्गा माता और हनुमान जी को 'मानता' भी मानी। दो मीठे बिस्किट्स और एक कुल्हड़ दूध लेकर फटाफट आ गई। भगवानसिंह ने कुल्हड़ पकड़ा, वह बिस्किट्स लिए थी। नदी पार कर दोनों समाधि पर पहुँचे। कुल्हड़ और बिस्किट्स रखे। कुछ देर रूककर भगवानसिंह ने कहाः अब चले।

किरण ने कहाः नहीं, बच्चा 'माँ! दूध...' कहता प्रकट होगा, उसे लेकर आऊँगी, सवेरे का सपना कभी झूठा नहीं होता!...भगवानसिंह की आँखों में दो बूँदे झलकीं। कुछ रूककर वह घर चला गया और किरणे बच्चे की प्रतीक्षा करती रही।

2. महामना भारतभूषण मालवीय

हे लोकमान्य के महामना, हे गांधी के भारतभूषण,
तुम रोम-रोम से पुण्यश्लोक, गांधी छूते थे दिव्य चरण!
जब तक भारत, संस्कृत, हिंदी, जब तक गंगा-यमुना में जल,
तब तक तुम जीवित हो भू पर, हे निर्विकार त्यागी निर्मल!

आधुनिक भारत के निर्माताओं में महामना मालवीय जी का स्थान बहुत ऊँचा है। वे वस्तुतः 'मद-न मोह-न' थे। पूर्वज मालवा (मध्य प्रदेश—एक मालबा पाकिस्तान में भी है) के निवासी थे जो तीर्थराज-प्रयाग में आकर बस गए थे। पांडित्य-पारंगत थे। स्वयं मालवीय जी श्रीमद्भागवत-महापुराण के मनोहारी कथावाचन के आचार्य थे। उनका जन्म पावन प्रयाग (इलाहाबाद) में 25 दिसंबर 1891 को हुआ था। इसी पावन प्रयाग में मध्यकालीन भारत के एक महत्तम निर्माता रामानंद का जन्म हुआ था जो कबीर, रैदास, धना, सेन इत्यादि संतों के गुरू थे। रामानंद ने भारत की आत्मा काशी को कर्मभूमि-तपोभूमि बनाया था, मालवीय जी ने भी। प्रयाग में ही प्रातः स्मरणीय भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, अमर हुतात्मा गणेशशंकर विद्यार्थी (अतरसुइया या अत्रि-अनसूया में—मूलस्थान पार्श्ववर्ती जनपद फतेहपुर में), सफल प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी इत्यादि के जन्म हुए। बालकृष्ण भट्ट, सुभद्राकुमारी चौहान, बच्चन प्रभृति साहित्यसेवी भी उत्पन्न हुए। श्रेष्ठतम अभिनेता अमिताभ बच्चन भी। ऋषि भरद्वाज, दार्शनिक कुमरिल भट्ट, महाराज छंग, निराला-पंत-महादेवी इत्यादि काव्यस्रष्टा भी संबद्ध रहे। महिमा में प्रयाग की तुलना नहीं।

मालवीय जी असाधारण अधिवक्ता एवं महान् वक्ता थे। चौरीचौरा-हत्याकांड के अनेक अभियुक्तों के प्राण उन्होंने ही बचाए थे और इस सत्य को विद्वान् न्यायाधीश ने उनकी स्तुति करते हुए स्वयं बताया था। वे संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी और उर्दू में पृथक्-पृथक् अथवा स्वतंत्र रूपों से धाराप्रवाह भाषण दे सकते थे। एक बार इम्पीरिअल लेजिस्लेटिव असेंबली में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दुर्दशा पर भाषण दे रहे थे, तो

लॉर्ड हार्डिंज रो पड़े थे। काँग्रेस के शीर्ष नेताओं में उनकी प्रतिष्ठा थी। द्वितीय अधिवेशन जो मद्रास (चेन्नो जो चेन्नई के रूप में जानी जाती है) में हुआ था, उसमें भाग लेते समय उनकी आयु केवलमात्र चौबीस वर्षों की थी, परंतु सभी अभिभूत हो गए थे। काँग्रेस के अध्यक्ष प्रायः ईसाई, पारसी, मुसलमान होते थे। मालवीय जी प्रथम हिंदू थे। वस्तुतः, तिलक के साथ समसामयिक नेताओं में मालवीय जी का नाम ही जीवंत-प्रभवंत है। वे अजातशत्रु थे। किंतु 'सर' की पदवी स्वीकार न की थी। उनकी अमृतवाणी सदैव अनुद्वेगकर रही।

मालवीय जी का जीवन इतना अधिक विराट्-आयामी रहा कि उसके किस पक्ष पर पहले विचार किया जाए?—उत्तर कठिन है। किंतु सर्वसामान्य जनता उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में अधिक जानती है। एक विराट् परिसर में अधिकाधिक विषयों का समावेश, प्राध्यापकादि के आवास, संग्रहालय, दो सौ बावन फुट ऊँचा मंदिर इत्यादि देखकर आश्चर्य होता है। भारतीय शिल्प के भवन एक श्रद्धाभाव की सृष्टि करते हैं। विशाल भूमि-अधिग्रहण में समस्याओं की कल्पना की जा सकती है, किंतु मालवीय जी की प्रतिभा ने समाधान किया था। एक पैसे (आज के दो रुपए) से एक लाख रुपए तक के भिखारी मालवीय जी ने अकल्पनीय श्रम किया था। इस विषय में उनकी धुन इतनी गहरी थी कि नाई तक को योजना समझाते। एक रोचक कथा प्रचलित हैः निज़ाम से चंदा लेने गए तो एक जोड़ी जूते मिले किंतु मालवीय जी ने उनकी नीलामी की घोषणा कर दी जिससे निज़ाम की भद्द उड़ी और उसने गलती महसूस कर अच्छी राशि प्रदान की! मालवीय जी ने शारीरिक बल का भी ध्यान रखा और विख्यात श्री राममूर्ति को प्रोफ़ेसर बनाया। किशोर-युवा कालों में मालवीय जी अखाड़े में भी जाते थे। जब गामा ने विश्व-चैम्पियन जिबेस्को को परास्त किया तब मालवीय जी ने विश्वविद्यालय बुलाकर उसका सम्मान किया। आयोजन भव्य था। विद्वानों ने भारतीय मल्लकला के इतिहास एवं कौशल पर प्रकाश डाला। गामा को राष्ट्रीय गौरव का एक प्रतीक माना गया। गामा मुसलमान था, किंतु मालवीय जी को चरणस्पर्श द्वारा सम्मानित करता था। आयोजन के अंत में 'मुख्य अतिथि' का भाषण होता ही है। गामा बहुत सकुचाया, किंतु मालवीय जी का आदेश मानना ही पड़ा। बोलाः मैंने जिबेस्को को पटक दिया तो बहुत तारीफ़ हो रही है, लेकिन 'मालवीया' जी ने तो गोरी-सरकार को ही पटक दिया है...! किसी 'मुख्य अतिथि' का इतना संक्षिप्त किंतु अतिसार्थक भाषण न हुआ होगा! मालवीय जी ने सारे भारत के चुने-चुने विद्वानों से विश्वविद्यालय को भर दिया था। डॉ० सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् उन्हीं में से एक थे। हिंदी-विभाग भी बना जिसमें आचार्य श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य केशव प्रसाद मिश्र, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्येतिहास-पुरुष प्रदान किए। प्रत्येक विभाग का ऐसा ही गौरवशाली इतिहास रहा। संसार के इतिहास में किसी एक व्यक्ति ने इतने विशाल विश्वविद्यालय की स्थापना एवं विकास नहीं किया।

हिंदूधर्म के हेतु मालवीय जी की सेवाएं महान् रहीं। अंग्रेज़ हरिद्वार (हरद्वार, माया, कनखल इत्यादि रूपों में प्राचीनकाल से अभिहित एवं ख्यात—महाभारत में 'गंगाद्वार') को नहर और विकास के नाम पर गंगारहित कर रहे थे। इस पर आंदोलन का नेतृत्व कर मालवीय जी ने सफलता प्राप्त कीः हर की पौड़ी पर उनकी पावन प्रतिभा एक इतिहास छुपाए है! उनके अदालतों में हिंदी-प्रवेश के आंदोलन के नेतृत्व को सफलता प्राप्त हुई। अखिल भारतीय स्तर पर सनातन धर्म महामण्डल की स्थापना भी उनका एक स्मरणीय कार्य है।

हिंदी के इतिहास में मालवीय जी को पूज्य स्थान प्राप्त हैं। हिंदी साहित्य सम्मेलन, भारती परिषद्, काशी नागरी-प्रचारिणी सभा इत्यादि की स्थापनाओं को उनका वरदहस्त प्राप्त था। वे टंडन जी, श्यामसुंदरदास जी इत्यादि के प्रेरक-महापुरुष थे।

सामाजिक दृष्टि से अस्पृश्यता-निवारण की दिशा में मालवीय जी ने स्मरणीय सेवाएं की। वे अनुसूचित-जाति के बंधुओं को यज्ञोपवीत धारण कराते थे, उनके साथ मिल-जुल कर मंत्र सिखाते थे। इसके लिए उन पर हिंस्र आक्रमण भी हुआ, उनकी निंदा भी की गई। विश्वविद्यालय में 'अनुसूचित' छात्रों का प्रवेश होता था। जब छात्र-रूप में जगजीवनराम जी उनके पास गए और शिकायत की कि कहार उनके बर्तन नहीं माँजते तब उन्होंने धैर्यपूर्वक सुना; उत्तेजित युवक ने ज़ोर-से प्रश्न कियाः कौन माँजेगा मेरे बर्तन? मालवीय जी ने कहाः मैं माँजूगा तुम्हारे बर्तन! जगजीवनराम पर इसका प्रभाव अंत तक रहा। अपने अवसान से दो मास पूर्व जब डॉ० भीमराव राम अम्बेडकर ने बौद्धधर्म स्वीकार किया तब जगजीवनराम से भी आग्रह किया था जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

मालवीय जी बहुत गंभीर और दूरदर्शी देश सेवक थे। गाँधी की राजनीति उन्हें भी पसंद न थी। तिलक ने मृत्युशय्या पर सन्निपात-दशा में चिंता प्रकट की थीः गाँधी भारत को कहाँ ले जाएगा? चतुरसेन शास्त्री वहाँ एक वैद्य के रूप में विद्यमान थे, जिन्होंने आत्मकथा में उल्लेख किया है। एनी बेसेंट ने असहयोग आंदोलन पर लिखा थाः आप भारत में अराजकता फैला रहे हैं जिसके परिणाम भयानक होंगे। विदेशीवस्त्र-दहन पर रवीन्द्र ने लिखा थाः जिस देश में करोड़ों लोग नंगे रहते हो उसमें विदेशी कपड़ों की होली अनुचित है। आसफ़अली ने आत्मकथा (अंग्रेजी) में इन दोनों प्रतिक्रियाओं का उल्लेख किया है। गांधी ने अपने विरोध पर मानवेन्दु नाथ राय (एम.एन. रॉय), नारायण भास्कर खरे, सुभाष इत्यादि को काँग्रेस छोड़ने पर बाध्य किया था। धर्मवीर कृत 'हरदयाल' शीर्षक जीवनी (अंग्रेजी) एवं खरे की आत्मकथा (अंग्रेजी) में ऐसे बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है। मालवीय जी ने काँग्रेस छोड़कर हिंदू महासभा का गठन किया। लाला लाजपतराय, डॉ० हेडगेवार, जिन्ना इत्यादि ने अलग-अलग कारणों से काँग्रेस छोड़ी। एक लम्बा इतिहास! भारत-विभाजन, कश्मीर-विभाजन, बेहद कम आबादी के बावजूद नागालैण्ड, मिज़ोराम, मेघालय के ईसाई राज्यों का गठन, व्यापक अराजकता

इत्यादि का इतिहास साक्षी है कि गांधी का नेतृत्व एवं उसकी प्रतिक्रिया भयावह ही रही है। किंतु गांधी अपने युग (1920-48 ई०) को सर्वाधिक शक्तिशाली नेता थे और उनका व्यापक प्रभाव आज भी विद्यमान है, इसमें संदेह नहीं। उनकी विश्व-ख्याति अप्रतिम है।

एक निष्कलंक मनुष्य, एक कुशलतम अधिवक्ता, एक महान् वक्ता हिंदुओं के श्रेष्ठतम युगनेता, संस्कृत एवं हिंदी के एक पुण्यश्लोक सेवक, काँग्रेस के एक श्रेष्ठतम नेता, एक अजर-अमर राष्ट्रवादी जननायक प्रभृति अमित आयामों के विराट्-पुरूष मालवीय जी ने 22 नवंबर 1946 को पवित्र काशी-धाम में शरीर छोड़ा। उनके निधन पर अपार जनसमूह उमड़ा, सारे राष्ट्र ने शोक मनाया, संसद में' नेहरू ने उन्हें 'भारतीय राष्ट्रवाद का जनक' बनाया। इतिहास में उन जैसे पतितपावन मानव बहुत-कम मिलते हैं।

3. सरदार था वह क्योंकि था असरदार भी!

स्वतंत्र भारत के सर्वश्रेष्ठ निर्माता वल्लभभाई झवेरभाई पटेल (31 अक्टूबर 1875-15 दिसंबर, 1950 जन्मस्थान ननिहाल नड़ियाद, पैतृकस्थान करमसद गुजरात, निधनस्थान मुंबई) कण-कण से माटी के लाल थे जिन्हें विश्वख्याति-रोग एव नोबेल पीस प्राइज़ इत्यादि का वह रोग कभी नहीं लगा जो बहुतों को चर गया। सरदार किसान का बेटा था। वैसे, उनके पिता झवेरभाई झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की सेना में थे और लड़े भी थे (संयोगात् आधुनिक हिंदी के सर्वश्रेष्ठ निर्माता और साहित्येतिहास में युगप्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पिता रामसहाय भी इसी सेना में थे और लड़े भी थे)। सरदार पाँच भाई थे। इनके अग्रज विट्ठलभाई पटेल वीर-विट्ठल के रूप में प्रख्यात थे तथा अंग्रेजी-शासन की संसद में प्रथम भारतीय अध्यक्ष के रूप में अमर हैं। दोनों प्रखर स्वातंत्र्य सेनानी थे। बारदोली-सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के कारण गांधी ने वल्लभभाई को 'सरदार' कहा और गुजरात में तो वे 'सरदार' के रूप में ही जाने-माने जाते हैं। उन्होंने दस वर्ष कारागार में बिताए थे।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात बचपन में एक ऐसा फोड़ा हुआ जो ठीक ही न होता था। यह माना गया कि यदि जलता लोहा छुआ दिया जाये तो हो जाएगा। किंतु यह कठिन कार्य करे कौन? कसाई को राज़ी किया गया। पर ऐन मौक़े पर कोमल बालक के तन पर जलता लोहा लगाने से उसका कलेजा भी हिल गया। इस पर बच्चे ने उसके हाथ से लोहा लेकर स्वयं ही लगा लियाः ऐसे तो यह ठंडा हो जाएगा!

वल्लभ और विट्ठल कृष्ण और बलराम थे। विलायत जाकर वकालत पढ़ने पर दोनों ने परिश्रम किया और पैसा इकट्ठा किया। अब 'तुम पहले' का विवाद हुआ। एक-एक कर दोनों हुए। सरदार प्रसिद्ध वकील और तत्पर जनसेवक थे। एक बार अदालत में बहस के दौरान तार मिला जिसे देखकर उन्होंने जेब में रख लिया और वहस करने लगे। बाद में पूछा गया तो प्रशांत उत्तर थाः मेरी पत्नी का देहांत हो गया है।

उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। उनकी पुत्री पिता की महान् सेविका थीं। मणिबेन आजीवन कुमारी रही। पुत्र डाह्याभाई सांसद रहे।

सरदार ने करमसद-क्षेत्र में विलक्षण कार्य किए उनकी प्रेरणा से निष्पन्न वल्लभ विद्यानगर विश्व-विद्यालय, अमूल, एन.डी.डी.बी. इत्यादि इसके प्रमाण हैं। अहमदाबाद पालिका के प्रधान के रूप में उन्होंने स्मरणीय सेवाएं कीं। जिस काँकड़िया तालाब एवं क्षेत्र की उड़ती धूल और प्रचंड ग्रीष्म से विकल होकर शराबी और विलासी जहाँगीर ने 'अहमदाबाद का नाम दोज़खाबाद' (आत्मकथा) रखा था उसे उन्होंने सुरम्य पर्यटन-स्थल बना दिया। उनका हाथ कल्पवृक्ष था, उनकी वाणी कामधेनु थी। केवल दो शब्द ही कार्य संपन्न करा देते थे। मोरारजी देसाई, त्रिभुवनदास पटेल, जी.एम.पटेल इत्यादि को काम सौंपे, वे आशातीत रूप से सफल रहे।

एक बार उनकी ग्रामयात्रा पर बहुत-से किसान आए और दूध के संदर्भ में अपने शोषण की शिकायत करने लगे। सरदार ने कहाः...तो सहकार करो! उन्होंने मोरार जी को संकेत किया जिनके नेतृत्व में त्रिभुवनदास पटेल ने शानदार सेवाएं की। अमूल आणंद मिल्क यूनिऑन लिमिटेड) आज विश्वविख्यात है। वस्तुतः अमूल के अनेक उत्पाद, नेशनल डेअरी डेवलपमेंट बोर्ड (एन.डी.डी.बी.), धारा इत्यादि की गंगोत्री पटेल थे।

1931 ई० की ऐतिहासिक कराची काँग्रेस के अध्यक्ष पटेल ही थे। इसमें अनेक क्रांतिकारी प्रस्ताव पारित किए गए थे। वैसे भी, 1931 ई० क्रांति-वर्ष थाः 27 फरवरी को इलाहाबाद में शहीद-सम्राट चंद्रशेखर आजाद ने बलिदान+आत्मबलिदान का विलक्षण इतिहास बनाया, 23 मार्च को हुसैनी बंग्ला में शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, सांडर्स पर पहली गोली चलानेवाले क्रांतिकारी राजगुरु जो मराठा थे, क्रांतिकारी सुखदेव ने अमरता प्राप्त की, 25 मार्च को कानपुर के भयानक दंगों में हिंदू-मुसलमानों की रक्षा में सन्नद्ध महान् नेता गणेशशंकर विद्यार्थी एक धर्मान्ध मुसलमान के द्वारा हुतात्मा बने जिस पर कराची में गांधी ने कहा थाः मुझे उनकी मृत्यु से ईर्ष्या है।

अपने क्षेत्र एवं अहमदाबाद की स्मरणीय सेवाएं, बारडोली-सत्याग्रह, कराची काँग्रेस, सोमनाथ-मंदिर निर्माण सरदार पटेल के चार महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य हैं। सरदार की सागर-स्नान में बड़ी रुचि थी। सोमनाथ में सागरस्नान करते ही उन्होंने भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प लिया था। गांधी ने सुना तो कहा, सरकार का एक पैसा न लगना चाहिए। सरदार ने ट्रस्ट बनाया। शानदार मंदिर बन गया। आज मंदिरद्वार पर उनकी विशाल धातु-प्रतिभा ठीक ही खड़ी मिलती हैं। किंतु उनका सर्वश्रेष्ठ कार्य लगभग छह सौ भारतीय रियासतों का विलय कर विराट् भारत का निर्माण रहा, जिसके कारण लोगों ने उन्हें 'भारतीय बिस्मार्क' कहा (यद्यपि जर्मनी का एकीकरण भौगोलिक, आर्थिक धार्मिक, ऐतिहासिक दृष्टियों से न भारत-जैसा विराट् था, न जटिल) और गुजरात के एक प्रसिद्ध नेता, मुख्यमंत्री एवं राजनयज्ञ डॉ० जीवराज मेहता ने ठीक ही कहा थाः जो कार्य अशोक और अकबर न कर पाए थे वह पटेल ने किया। वास्तव में, पटेल चाणक्य,

चंद्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य और अकबर के सदृश अमर राष्ट्र-निर्माता थे। हैदराबाद का 'पुलिस एक्शन' उनके राजनैतिक जीवन की महानतम् उपलब्धि थी (जो नेहरू की भीरु-राजनीति के विरोध के बावजूद शत-प्रति-शत सफल रहीं)। हैदराबाद-यात्रा पर उनकी मुस्कान और नमित निज़ाम की दयनीयता वाला हाथ मिलाता चित्र आधुनिक भारतीय इतिहास का सर्वश्रेष्ठ चित्र है! मैंने यह तत्कालीन समाचारपत्रों में देखा था अनंतर करमसद के संग्रहालय में भी देखा। 1929 ईस्वी की लाहौर काँग्रेस में उनको अध्यक्ष बनाने की अनुशंसा पाँच राज्यों ने की थी, नेहरू की तीन ने। 1947 ई० में संविधान परिषद का बहुमत उनके पक्ष में था। किंतु गांधी ने हर बार नेहरू को वरीयता प्रदान की। 1950 ई० में पुरुषोतमदास टंडन की काँग्रेस-अध्यक्ष पद पर विजय उनको प्राप्त बहुमत की ही सूचक थी। मैं गुजरात में जहाँ-जहाँ गया (आणंद, अहमदाबाद, बड़ोदरा, सोमनाथ, द्वारिका इत्यादि) वहाँ-वहाँ सुना कि बापू ने पटेल को प्रधानमंत्री न बनाकर भारी भूल की। अब यह चर्चा सारे देश में होती है। जैसे तिलक, मालवीय, सावरकर, सुभाष, टंडन प्रभृति के अवमूल्यन या अनाकलन के यत्न किए ही जाते रहे हैं तथा किए भी जा रहे हैं, वैसे पटेल के भी किए गए किंतु वे सर्वथा व्यर्थ प्रसिद्ध हुए। आज उनका नाम स्वतंत्र भारत के सर्वश्रेष्ठ नेता के रूप में जाज्वत्यमान् है।

राज्यों का विलय एक जटिल समस्या थी क्योंकि धूर्त अंग्रेज़ों ने उन्हें भारत या पाकिस्तान में से किसी एक में मिलने अथवा स्वतंत्र-सत्ता के रूप में विद्यमान रहने के विकल्प दे दिए थे और छठा-भारतशत्रु मॉउंटबैटेन और उसकी लेडी एडविना और पुत्री पॉमीला तीनो ही नेहरू को कनीनिका पर नचा रहे थेः युद्ध न हो जाए! गांधी एवं नेहरू (अपने प्रधानमंत्री रहने के काल में अटल की भाँति) नोबेल पीस प्राइज़ के प्रबल आकांक्षी थे। गांधी का नाम लिया जा चुका था किंतु निर्णायकों ने उन्हें 'पॉलीटीशिअन' कहकर टाल दिया था क्योंकि यह पुरस्कार या तो अराजनैतिक जनसेवकों को दिया जाता है या एकता के अथक प्रयासियों को या शांतिस्थापना के दूरगामी प्रभावों से निष्पन्न पूर्व-राजनीतिज्ञों को माउटबेटन्स उन्हें पुरस्कार के अनुरूप कार्य ही करने का परामर्श दे रहे थे। कश्मीर का विभाजन और राजनैतिक नासूर इसी का परिणाम है।

सरदार ने सामनीति अथवा शांतिनीति से भी काम लिया, दाननीति से भी, दंडनीति से भी, भेदनीति से भी। राष्ट्र, वह भी भयावह रूप से विभक्त राष्ट्र, की एकता एवं गरिमा के बिंदुओं ने प्रायः सारे राजाओं एवं महाराजाओं को विलय हेतु सहर्ष प्रस्तुत कर लिया; यह सामनीति की महान् विजय थी जो राम से लेकर समुद्रगुप्त तक की परंपरा को विकसित करने वाली थी। उन्होंने उचित-राशि (प्रिवी पर्स) की भी व्यवस्था की, जो दान नीति की सूचक थी। हैदराबाद के संदर्भ में दंडनीति का प्रयोग इतना कारग़र साबित हुआ कि दोबारा प्रयोग नहीं करना पड़ा। जूनागढ़ का नवाब हीरे-जवाहरात इत्यादि लेकर रातोंरात भागा। यथासमय सरदार ने महिलाओं तथा अन्य इच्छुकों को सादर पाकिस्तान की सीमा तक पहुँचवाने की व्यवस्था कर दी। भोपाल का नवाब कन्नी

काट रहा था। एक बार रुग्ण सरदार के औपचारिक दर्शनार्थ देहरादून पहुँचा। सरदार ने अपने सचिव से कहा, भोपाल की फ़ाइल लाओ! आदेश-पालन तत्काल होना ही थी क्योंकि सरदार से सारे महाधिकारी परिचित थे। सरदार ने फ़ाइल उलट-पलट कर एक पृष्ठ पर ध्यान दिया और स्थान-विशेष की ओर संकेत करते हुए नवाब को आदेश दियाः यहाँ साइन कर दीजिए। जोधपुर का महाराजा पाकिस्तान में विलय की सोच रहा था। आत्मघात-प्रवृत्ति! सरदार ने पहले ही उसे सारे राजस्थानी राजाओं-महाराजों से अलग-थलग कर दिया था जो भेद-नीति के अनुरूप था, बाद में बुलाकर उसकी ग़ैरत को ललकारा, उसकी राजपूती-आन-बान-शान की स्मृति कराई तो कश्मीर-समस्या महाराज हरिसिंह और नेहरू को व्यक्तिगत मनमुटाव और शेख़ मोहम्मद अब्दुल्ला की कट्टर-कठोर 'मुस्लिम कॉफेरेंस' (कालांतर में नेशनल कॉंफेरेंस') के 'कश्मीर छोड़ो' (हिंदू -डोगरों को कश्मीर से निकलने का प्रचंड आंदोलन) के भय का परिणाम थी। तीनों दोषी थे। दूसरे, जान बचाकर भागते आक्रांताओं के साथ 'युद्धविराम' भयानक भूल थी। तीसरे, विषय को संयुक्त राष्ट्र संघ ले जाकर स्वतः अंतर-राष्ट्रीय रूप प्रदान कर दिया गया जिसका सरदार ने विरोध किया था। चौथे, जनमत-संग्रह की बात स्वीकार की गई जिससे मुकरने पर, विश्व-जनमत पाकिस्तान के पक्ष में हो गया। पाँचवें, नेहरू ने कश्मीर-समस्या को अपने पास (वे विदेशमंत्री भी थे अतः समस्या का अंतर-राष्ट्रीयकरण पुख़्ता हो गया) रखा परिणामः

लम्हों ने ख़ता की धी
सदियों ने सज़ा पाई।

शेख़ अब्दुल्ला के कश्मीर का वजीर-ए-आजम (प्रधानमंत्री जो पहले सारे मुख्यमंत्री हुआ करते थे) बनने के ही महाराज हरिसिंह को जम्मू भागना पड़ा और इस प्रकार मुस्लिम कॉंफ़ेरेंस का 'कश्मीर छोडो' आंदोलन सफल हो गया। पाक-आक्रमण के समय मेरे वरिष्ठ मित्र एवं प्रख्यात राष्ट्रीय नेता प्रो० बलराज मधोक (जन्म इस्कर्दू जो अब पाक-अधिकृत कश्मीर में हैं—25-2-1920 को) श्रीनगर में प्राध्यापक थे। उन्हें जान के लालेख लुकते-छिपते पैदल ही जम्मू भागना पड़ा तथा बाद में शेख़ ने परिवार को भी घाटी से निकाल बाहर किया (पाक-अधिकृत कश्मीर के हिंदू-सिखों को घाटी में नहीं रखा गया तथा उन्हें आज तक 'शरणार्थी का स्तर भी नहीं प्राप्त)। मधोक नई दिल्ली में सरदार से मिलेः घुटनों से ऊपर तक खादी की धोती और अधबाँही-बंडी किंतु तेजोदीप्त आनन सरदार 'वृद्धश्रवा' (भूरिश्रवा, विश्रवा) थे; सुनते रहे। अंततः बोले : "यू आर ट्राइंग टु कन्विंस ए कन्विंस्ड पर्सन" —आप एक स्वीकर्त्ता से स्वीकरण का यत्न कर रहे हैं। मुझे सब ज्ञात है। किंतु कश्मीर-समस्या समग्रतः नेहरू ने अपने हाथों में ले रखी है और मैं लाचार हूँ! मधोक पर सरदार को सहज सादगी और बेबाक साफ़गोई का भारी प्रभाव पड़ा। आज भी वे सरदार के भक्त हैः वे नेहरू से भी मिले जिन्होंने शेख़ पर कुछ

भी सुनने से इंकार कर दिया, पर यह जानकर कि युवा-प्राध्यापक बस से लौटेगा, कार+ ड्राइवर की व्यवस्था करा दी। वे नेहरू के कठोर आलोचक थे और हैं।

सरदार की अद्भुत महानता एवं प्रतिपल-जागरूकता का एक प्रमाणः मेरे एक वरिष्ठ मित्र स्व० श्री चंदूलाल चंद्राकर काँग्रेसी नेता, श्रमिक नेता, पत्रकार, छह बार लोकसभा-सदस्य और दो बार राज्यमंत्री रहे। काँग्रेसी-प्रवक्ता भी। बताया कि एक दिन सचिव का दूरभाष आया कि सरदार ने याद किया है। युवा-पत्रकार गदगद। सर पर पाँव रखकर दौड़े गए। सरदार ने पूछाः रामपुर के नवाब के ख़जाने में आगे का समाचार देखा? चंद्राकर जी ने 'हाँ' में उत्तर दिया। सरदार ने कहाः रामपुर में कोई परिचित है? चंद्राकर जी ने बताया कि सरकारी कॉलेज के एक मुस्लिम-प्राध्यापक मित्र हैं। सरदार ने आदेश दिया : जाकर पता लगाओ! चंद्राकर जी गए। भोजन के समय सहज वार्ताक्रम में अग्निकांड की चर्चा चलाई। प्रोफ़ेसर साहब ने हँसते हुए एक सेवक को बुलाया (जो नवाब का सरकारी कर्मचारी था क्योंकि कॉलेज भी ऐसा ही था) और बात चलाई। वह बोलाः साहब, हम ठहरे ख़ादिम; जब आग लगाने का हुक्म हुआ तब औरों के साथ लगाई और जब बुझाने का हुक्म हुआ तब वैसे ही बुझा दी। चंद्राकर ने दिल्ली आकर यह तथा अन्य सूचनाएं जो प्राप्त की थीं, सरदार को दीं। नवाब को सरदार के नई दिल्ली में पेश होने का आदेश दिया गया। पहुँचा। सरदार केवल बहुत बड़े महाराजाओं, नवाबों वगैरह से मिलते थे और दो मिनिट्स का समय निश्चित रहता था। अन्यों से मेनन, शंकर प्रमृति उनके विख्यात सचिव मिलते थे और दो मिनिट्स की सीमा में ही। खड़े-ही-खड़े नवाब ने खीसें निपोर कर कहाः हुज़ूर, किसलिए तलब किया गया है? उत्तर मिला कि सरदार को अग्निकांड का सत्य ज्ञात है और वे बहुत रुष्ट हैं...। परिणाम? ख़ज़ाना भारत को प्राप्त हो गया।

सरदार था वह क्योंकि था असरदार भी
बर्फ़ से ढँका ज्वालामुखी-उद्गम भी!

सरदार का स्फीत कार्य एवं विराट् साफल्य कोई समर्थ कवि महाकाव्य में भी चित्रित न कर पाएगा। ऐसा नेता चाणक्य के ही समकक्ष हो सकता है। उस इतिहास-पुरूष को कोटि-नमन!

4. महावीर हनुमानः
कथा और इतिहास

हनुमान को पराक्रम का प्रतीक देवता माना जाता है। वे अभयदाता एवं वरदाता माने जाते हैं। उनकी पूजा भारत, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश इत्यादि के हिंदू तो करते ही है, बौद्ध देशों के लाखों लोग भी करते हैं। चीन के महान् नेताओं के शयनकक्ष में हनुमान का चित्र टँगा रहता था और उन्होंने हनुमान पर 'महाकविराज जैसी अनेक कविताएँ रची हैं। अनेकानेक आदिवासी हनुमान के उपासक है। 'अंडमान' हनुमान का ही नाम है। श्रीलंका में सेतुबंध को हनुमान कृत माना जाता है। थाईलैंण्ड के बहुत-से लोग, जिनमें ओलिम्पिक स्वर्णपदक विजेता भी सम्मिलित है, हनुमान के भक्त हैं। भारत में जितने अधिक हनुमान-मंदिर है, उतने राम के भी नहीं: राम ते अधिक राम कर दासा! यूरोप तथा अन्यत्र भी जहाँ हनुमान की विशाल प्रतिमाएँ स्थापित की गई है, वहाँ उनका पर्याप्त प्रभाव है। हनुमान का ध्यान बहुत प्रभावी एवं लाभदायक है। मैं तो इन तीन रचनाओं का एक-एक अथवा एक साथ, कवच के रूप ध्यान या वाचन लाभप्रद मानता हूँ (इनके अतिरिक्त हनुमान-चालीसा एवं हनुमान-बाहुक महान् लाभकारी कृतियाँ हैं।):

1. मनोजवं मारुत-तुल्य वेगं
   जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
   वातात्मजं, वानरयूथमुख्यं
   श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

2. अतुलितबलधाम, स्वर्णशैलाभदेह,
   दनुजबनकृशानुं, ज्ञानिनामग्रगण्यम।
   सकलगुणनिधानं, वानराणामधीशं,
   रघुपतिवरदूतं, वाताजातंनमामि।।

3. बंदउँ पवनकुमार, खलबनपावक, ज्ञानधन।
जासु हृदय-आगार, बसहि राम सरचापधर।।

"ॐ श्रीहनुमतेनम" का मंत्रजाप भी फलदायी है। "हनुमान शरणस्थान" का जाप भी प्रभावी है।

कथा धर्म की आत्मा है। प्रत्येक धर्म में कथाएं प्राप्त हैं। महान् भक्त विश्वकवि तुलसीदास ने कथा के माहात्म्य पर महान् प्रकाश डाला है। कथा इंद्रजाल से भी बढ़कर प्रभाव डालती है। हनुमान के दिव्यजन्म की कथाएं शिव एवं मरुत् को पिता के रूप में चित्रित करती है; बाल्यकाल में फल समझकर सूर्य का भक्षण करने तथा देवताओं की प्रार्थना पर छोड़ने, अनंतर शिक्षा हेतु सूर्य के पास जाने पर सूर्य द्वारा अपने गति-कर्त्तव्य के कारण उनके रथ के समक्ष से पीछे दौड़ने आकाशमार्ग सुरक्षा की परीक्षा पर-विराट् मुख-प्रस्तार तथा उसके शता-योजन-आननप्रसार पर अतिलघु-रूप धारणकर मुखप्रवेश तथा बहिर्गमन द्वारा सफल होने, लंका के मशक-सदृश रूप धारण करने, लंकादहन के समय अभ्रस्पर्शी विराट् रूप धारण करके, लंका में कई बार आकाश युद्ध करने, राम-दरबार में हृदय फाडकर राम के दर्शन करने इत्यादि की कथाएं श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती हैं तथा अनमोल हैं।

किंतु, राम के सदृश, हनुमान एक ऐतिहासिक व्यक्ति भी हैं। वे वानर-राजा केसरी के पुत्र थे। केसरी भी लंका युद्ध में गए थे। वानर-जाति आजकल वानियार कहलाती है। प्राचीनकाल में आदिवासी जातियाँ सिंह, भल्ल, वानर, गृद्ध (भास), कोल इत्यादि को पूर्वज मानती थीं। नृसिंह, वराह (कोल) इत्यादि अवतार तथा जाम्बन्त (जामवंत) हनुमान, जटायु, रामवनगमन के समय उनका स्वागत करने वाले कोल -किरात-भिल्ल इत्यादि के रूपों में अमर हैं। प्राचीनकाल में पशुओं और पक्षियों का व्यापक सम्मान था। यह अद्वेतवाद के दर्शन के अनुरूप भी था। वानर-जाति पर्याप्त विकसित थी तथा आर्यों (श्रेष्ठ कहे जाने वालों) से उसका संपर्क भी था। उसके अग्रणी व्यक्ति संस्कृत भी जानते थे। वाल्मीकी-रामाण के अनुसार, किष्किन्धा क्षेत्र में प्रथम मिलन के अवसर पर हनुमान ने राम-लक्ष्मण से वार्ता संस्कृत में ही की थी। हनुमान इस समय नवयुवक एवं बहुत बलशाली थे— इतने कि राम-लक्ष्मण को पीठ (कंधों) पर चढ़ा कर पर्वत पर ले गए थे, जहाँ सुग्रीव इत्यादि विद्यमान पे। अपेक्षाकृत अल्पायु में भी हनुमान अत्यंत बुद्धिमान थे। सुग्रीव तथा विभीषण की राम से संधि कराके दोनों को नरेश बनवाने तथा लंकाविजय का पथ प्रशस्त करने में उनका बड़ा हाथ रहा। लंकायुद्ध में सर्वाधिक शत्रुसंहार उन्होंने ही किया, तब क्रमशः अंगद, सुग्रीव, नील प्रभृति ने, यद्यपि निर्णायक संहार राम (कुम्मकर्ण एवं रावण) तथा लक्ष्मण (मेघनाथ) द्वारा ही संभव हो पाया था। अयोध्या से हनुमान अपने राजा सुग्रीव के साथ किष्किन्धा लौट गए थे क्योंकि वे सुग्रीव के सचिव थे। तुलसीदास ने उन्हें रामसंपृक्त किया है; यही नहीं,

राम-दरबार में हनुमान की सतत्-उपस्थिति तथा राम-सीता-लक्ष्मण-हनुमान की युगपत् पूज्य और हनुमान की पृथक् पूजा का प्रवर्तन भी उन्हीं के द्वारा हुआ, जिससे हिंदू समाज को महान् शक्ति प्राप्त हुई, अपार लाभ हुआ क्योंकि उसके हाथ में धनुर्वाण भी आ गया गदा भी। ऐसा लगता है कि किष्किन्धा लौटकर महाराज सुग्रीव के आदेश पर हनुमान एवं अंगद के नेतृत्व में वानर-जाति ने सागरपंथ द्वारा व्यापक अभियान किए जिसके प्रमाण वालि (बाली)-द्वीप, अंडमान (हनुमान-द्वीप) तथा आज के इंडोनेशिया या मलेसिआ इत्यादि में हनुमान की अनवरत जीवंतता रही है। इस दिशा में गहन शोध अपेक्षाकृत है। अंडमान का नाम हनमुान हो तथा वहाँ सागरतट पर उनकी पाँच सौ फ़ीट की मूर्ति स्थापित की जाए तो उनके प्रति हमारी भक्ति साकार हो सकती है।

5. रस-चर्चा

रस-सिद्धांत भारतीय काव्यशास्त्र एवं जनमानस को प्रियतम रहा है। भरत रस-सिद्धांत के प्रवर्तक माने जा सकते हैं, यद्यपि 'रस' वेद-उपनिषद् में मूलभूत है। मम्मट और विश्वनाथ इसके सर्वप्रिय व्याख्याकार रहे है; जबकि जगन्नाथ अंतिम आचार्य। हिंदी में श्यामसुंदरदास, केशवप्रसाद मिश्र (मधुमती भूमिका), रामचन्द्र शुक्ल, प्रसाद, गुलाबराय (नवरस), रामदहिन मिश्र, नगेन्द्र इत्यादि ने आर्ष ग्रंथों के आधार पर अपने-अपने विवेचन किए हैं। भारतरत्न डॉ० भगवानदास, भारतरत्न काणे, वेद्वर डॉ० केलकर इत्यादि ने उच्चतर सामग्री प्रस्तुत की है। नगेंद्र ने 'रससिद्धांत' में सारी सामग्री का अच्छा उपयोग किया। इधर, डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी तथा डॉ० संदुरलाल कथूरिया इत्यादि ने प्रौढ़ तथा नवीन सामग्री प्रस्तुत की है। मैंने 'बौद्धिकरस' कवितासंग्रह (1964 ई०) तथा 'काव्य में बौद्धिकरस और आलोचना में वस्तुवाद' (1985 ई०) में 13 रसों का प्रतिपादन किया है। डॉ० त्रिपाठी ने इस ग्रंथ को विक्रम विश्वविद्यालय के एम०ए० में संस्तुत कराया था।

मूलतः आठ रस थे; किंतु मेरे विचार से, 'शान्तोऽपि, (शान्त, भी) बुद्ध, महावीर इत्यादि के प्रभाव का परिणाम था विश्वनाथ ने 'मुनीन्द्रसम्मत' (भरत-सम्मत) कहते-कहते अधूरे-मन (वियोगवात्सल्य का उदाहरण नहीं दिया) से वात्सल्यरस की चर्चा की। भक्तिप्रवण पुनरुत्थानकाल में 'भक्तिरस' का जुड़ना स्वाभाविक था; इसे ही प्रधान रस माना गया, अन्य रस अंगों के रूप में चर्चित हुए। 'नई' कविता की रस-व्याख्या हेतु मैंने 'बौद्धिकरस'; का प्रतिपादन किया जिसके कुछ उच्चतम विद्वानों ने पसंद भी किया किंतु जो मेरे राजनीति-विहीन एवं दल-विहीन होने के कारणों से विशेष चर्चित न हो पाया।

हिंदी के रस-विद्वानों में संस्कृत के आचार्यों के स्तर का कोई व्यक्ति नहीं हुआ क्योंकि बहुधंधी होने के कारण वे जीवनार्पित-आचार्यों की तन्मयता एवं दार्शनिकता नहीं ला सके। साधारणीकरण पर भी सार्वभौम विवेचन नहीं मिल पाता। आलम्बन धर्म का साधारणीकरण विवादास्पद है क्योंकि कवि की आलम्बन पर जीवन-व्याप्त साधना

साधारणीकृत नहीं हो सकती। कवि की अनुभूति का साधारणीकरण संभव नहीं, क्योंकि एक विराट् लोक कई बार एक छंद में व्यक्त हो जाता है। मेरे मत से, कवि जितना कथ्य अध्येता को संप्रेषित करना चाहता है उतने में निमग्नता ही साधारणीकरण है जो अध्येता के सामर्थ्य के अनुख भोजकत्व का रूप ग्रहण कर सकती है।

बौद्धिकरस अधुनातन रस हैः
बौद्धिकरस आधुनिक यंत्र की दुरूहता में
अश्रुतपूर्व संगीत
सभ्यता के, संस्कृति के नूतन रूप का गाम है...

(बौद्धिक रस)

रस-सिद्धान्त का आधार अद्वैतवाद रहा है। सारे रस (वीभत्स, भयानक इत्यादि भी) एक आनंद की सृष्टि करते हैं। करुण प्रसंग है; आँसू बह रहे हैं—यही करुणरस का आनंद है। रस-सिद्धांत प्रवृति पर आधृत है; लोकोत्तर-आनंद जीवन की ही एक निधि है। जुगुप्सा भी जीवन का एक सत्य है, भय जीवन का एद. व्यापकतर सत्य है (यदि कोई कहे कि वह डरता नहीं तो वह सत्य नहीं कह सका क्योंकि मृत्युभय, धर्मभय, समाजभय, परिवारभय इत्यादि अत्यंत व्यापक हैं। किंतु हिंदी में प्रसाद में भावपक्ष-विचारपक्ष के द्वैत का प्रतिपादन किया है (वैसे, काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध में उनका रस-विवेचन उच्चकोटि का है) ; इस दृष्टि से रामचंद्र शुक्ल नगेंद्र इत्यादि भी द्वैतवादी ही सिद्ध होते हैं। तुलसीदास गहनतर-प्रौढ़तर हैं जो स्वाभाविक भी है :

हृदय सिंधु, मति सीप समाना।
स्वाति सारदा, कहहि सुजाना।।
जौ बरसइ बर बारि बिचारू।
होइ कबित मुकुतामनि चारू।।

अभी हिन्दी के मम्मट, विश्वनाथ, जगन्नाथ की प्रतीक्षा है; भगवानदास के आंशिक रस-विचार तथा काणे, केलकर के गहनतर प्रतिपादन की आशा है।

6. सांस्कृतिक उपन्यास

हिंदी-उपन्यास की सभारंभ 1870 ई० में पंडित गौरीदत्त कृत 'देवरानी-जेठानी की कहानी, के साथ हुआ। उनके समसामयिक उपन्यासकारों में श्रद्धाराम फिल्लौरी (शुक्ल जी गलती से 'फुल्लौडी, लिख गए), श्रीनिवासदास (शुक्ल जी का इन्हें प्रथम उपन्यासकार मानना गलत है), बालकृष्ण भट्ट, जगमोहन सिंह इत्यादि ने प्रायः सामाजिक उपन्यास लिखे जो स्वभावतः नितांत प्राथमिक स्तर के थे। दूसरे दौर में देवकीनंदन खायी ने तिलिस्मी-ऐयारी तथा गोपालराम गहमरी ने जासूसी उपन्यास रचे और किशोरीलाल गोस्वामी ने सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक उपन्यासों की विशाल रचना की। किशोरीलाल गोस्वामी प्रेमचंद के पूर्ववर्ती उपन्यासकारों में प्रमुख है (नगेंद्र जी के 'हिन्दी-उपन्यास' शीर्षक उत्कृष्ट निबंध में उनका अभाव सर्वथा दोषपूर्ण है)। किंतु अतिमांसलता, हिंदूवाद तथा "इतिहास को दूर से ही नमस्कार" की प्रवृत्तियों ने उनकी क्षति की। ऐसी क्षति परवर्ती चतुरसेन शास्त्री, गुरुदत्त इत्यादि की भी हुई। जहाँ तक ऐतिहासिक उपन्यासकारों का संबंध है, वृंदावनलाल वर्मा वस्तुपरक, नारी-संवेदक (उनके मृगनयनी, झाँसी की रानी, रामगढ़ की रानी, विराटा की पद्मिनी उपन्यास नायिका प्रधान एवं उत्कृष्ट हैं) और सहज-स्रष्टा होने के कारण श्रेष्ठतम हैं। इधर, लगभग पचास वर्षों में पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक उपन्यासों की व्यापक रचनाएं या प्रस्तुतियाँ हुई हैं। कुछ में संबद्धयुग के साथ न्याय का यत्न किया गया है (जैसे हज़ारीप्रसाद द्विवेदी कृत श्रेष्ठतम-वर्गीय 'बाण भट्ट की आत्मकथा' में यद्यपि इसमें चरित्रचित्रण का पक्ष विशेष सशक्त नहीं है), कुछ में वस्तुपरकता का ध्यान नहीं रखा गया जैसे 'वैशाली की नगरवधू' इत्यादि में), कुछ में युग-चिर की बेमेल लगती खिचड़ी पकाई गई है (जैसे नरेंद्र कोहली के 'युद्ध' इत्यादि में)।

मनु शर्मा, युगेश्वर, नरेंद्र कोहली इत्यादि ने महाभारत, रामायण या उभय पर ढेरमढेर कृतियाँ प्रस्तुत कर जनता में इन अमर एवं चिरप्रभावी-चिप्रेरक कृतियों एवं इनके अजर-अमर चरित्रों की ओर ध्यान आकृष्ट कर राष्ट्र एवं साहित्य की सेवा तो की है,

सामान्य जनता को स्वस्थ मनोरंजन तो प्रदान किया है, स्वभावतः प्रचुर अर्थार्जन भी किया है, किंतु ये किशोरीलाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री, गुरूदत्त इत्यादि के अनुगामी मानें जाएंगे, वृंदावनलाल वर्मा, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी किसी सीमा तक अमृतलाल नागर ('मानस का हंस; खंजन नयन') इत्यादि के नहीं। रामायणकाल, महाभारतकाल का व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन, उसकी वैदिक पार्श्वभूमि-पृष्ठभूमि, खानदान, वस्त्रपरिधान, अस्त्रशास्त्र भवननिर्माण, वस्तुपरक युद्ध अथवा द्वंद्व इत्यादि-इत्यादि का, स्वयं इन महाकाव्यों के प्रक्षेपों की परख के साथ उनका परिहार करते, वैश्विक इतिहास से संगत्ति बैठाते बिंदु-प्रति-बिंदु चित्रण कोई नहीं कर पाया। स्वभावतः ये रचनाकार तो हैं, किंतु कलाकार नहीं। इनकी कोई एक कृति युगविवृति एवं चरित्रचित्रण में इकबाल बहादुर देवसरे के 'बाबा कहि-कहि जाहि' के समकक्ष नहीं थे स्फीत लेखन के बावजूद, इनमें से किसी की तुलना भारत के ऐतिहासिक-पौराणिक उपन्यासकारों में शीर्षस्थ कन्हैयालाल माणिक्रलाल मुंशी (गुजराती) से नहीं हो सकती (यद्यपि मुंशी में देशभक्ति वस्तुपरकता में आड़े आ गई है- मानव की सीमाएं स्पष्ट हैंः महान् टॉलस्टॉय कृत महान् 'युद्ध और शान्ति' तक शतशः वस्तुपरक नहीं है)।

भगवतीशरण मिश्र जी सौभाग्यवश त्वरित-लेखन एवं स्फीत-अर्थार्जन के फेर में नहीं पड़े। साथ ही, उन्होंने पौराणिक, ऐतिहासिक एवं भावात्मक, कई प्रकार के उपन्यास लिखे हैं। संबद्ध कृति के युग का व्यापक चित्रण तो वे भी नहीं कर सके, किंतु संबद्ध चरित्र के चरित एवं व्यक्तित्व का निरूपण बहुत धैर्य से किया है। किशोरीलाल गोस्वामी, चतुरसेन शास्त्री, गुरूदत्त की रंगीनी हो या अमृतलाल नागर (निस्संदेह हिंदी में प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा, जैनेन्द्र, मौलिकता-विपन्न अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा भाषणवादी भगवतीप्रसाद वाजपेयी के साथ अग्रणी उपन्यासकार) तक की कल्पनाप्रवण विस्तारवादी धुन से वे बचकर चले हैं बनारसी-झपाटा हो या पंजाबी-लिक्खाड़ापन वे एक मुक्त एवं सजग रचनाकार है। उनके सारे पौराणिक एवं ऐतिहासिक उपन्यास सांस्कृतिक उपन्यास हैं। उनकी राष्ट्र एवं राष्ट्रभाषा-सेवा प्रशस्य है।

7. अप्रतिम गीतकारः शैलेश

अपनी धरती पर अपने,
फूलों की रहे सुगंध।
आओ मिलकर करें आज,
कुछ ऐसे ही अनुबंध।
यह अंतर्विरोध लेकर,
हम कैसे जी पाएंगे
आँगन की तुलसी की गरिमा,
कैक्टस ले जाएंगे।
फिर से करें सुवासित कुछ तो
इस माटी के छंद।
ओ कबीर तुलसी के वंशज
तुमको है सौगंध।

(दर्पण के आर पारः आँगन की तुलसी)

मेरे घर का प्यार न बाँटो
तीज और त्यौहार न बाँटो
फूलों के मासूम नगर में,
नफ़रत के अंगार न बाँटो।..

(वहीः प्यार न बाँटो)

सठियाए पीपल से पूछो
बरगद छाँव घनी।
घर के गमलों में उपजाई
किसने नागफनी।

(वहीः मन कंगाल हुआ)

कोमल अनुभूतियों की कोमल अभिव्यक्ति के लिए जाने-माने गीतकार डॉ० सुमेरसिंह 'शैलेश' (10 अप्रैल 1943, मनकेशर, सतना) ने युगव्यथा एवं युग-विडंबना को भी व्यक्त किया है। वे एकता के कवि हैं, प्रेम के कवि हैं, सौंदर्य के कवि हैं। वे इस माटी के छंद गाते हैं। विभाजन बहुत हो चुकेः भारत का विभाजन, कश्मीर का विभाजन, सांप्रदायिक विभाजन, जातिगत विभाजन, राज्यगत विभाजन, भाषागत विभाजन—विभाजन -ही-विभाजन, आओ, अब एकता को अपनाएँ हीनभावगत पाश्चात्य तथा अन्य अनुकरण बहुत हो चुके जिनसे गौरव न मिल सकता था, न मिलना चाहिए और न मिला हो—आओ, अब अस्मिता को पहचानें। मणि, रत्न, स्वर्ण, रजत, आयस, सब अच्छे किंतु जीवनदाता अन्न माटी से ही उपजता है—आओ, माटी को दुलरांए।

उत्कृष्ट कला सामाजिक सरोकार को सांस्कृतिक सरोकार से परिपुष्ट करती है। कोरा सामाजिक सरोकार कला नहीं बन सकता। संस्कृति का स्पर्श उसे कला बनाता है। संस्कृति सम्यक् कृति है, संस्कार-निर्मित भी है और संस्कार-निर्मात्री भी। संस्कृति का प्रसार धर्म, दर्शन, कला, संगीत, नृत्य, साहित्य, की आत्मा कविता इत्यादि तक तो है ही, व्यक्ति और समाज की साँस-साँस तक भी हैः आँगन की तुलसी, छार की नीम, मेड़ का पीपल, डाँडे का बरगद, बाग़ की कोयल, बिरछे का पपीहा इत्यादि भी पर्यावरण-संपृक्त होने के कारण ही नहीं अपितु जीवन के स्वास्थ्य एवं सौंदर्य-बोध हेतु भी आवश्यक हैं। शैलेश जी ने सामाजिक सरोकार का ध्यान रखते हुए सांस्कृतिक सरोकार को भी जीवंत रखने का प्रशस्य प्रयत्न किया है, जो उन्हें एक गंभीर कवि प्रमाणित करता है। गीत पर उनकी पकड़ जितनी बारीक है, संस्कृति पर पकड़ उतनी ही मज़बूत भी।

शैलेश जी प्रमुखतः प्रेम एवं सौंदर्य के कवि हैं। प्रकृति-चेतना के सूक्ष्म वैतालिक भी। 'गीतों के रश्मि द्वार' में प्रेम, सौंदर्य एवं प्रकृति के चित् का प्रभावी गान है। देखेंः

तुम बिन आँगन, चौबारे
सारा जग सूना है
मन सूना, आँखे सूनी
यह दरपऩ सूना है...

(दरपन सूना है)

अंग अंग दहके पलाश और
ए फागुनी हवाएं
तुमसे दूर रहूँ तो जाने
क्या क्या ये कह जाएं...
मन की सोनचिरैया व्याकुल
भटकी स्वयं दिशाएं
ए फागुनी हवाएं...

(फागुनी हवाएं)

किंतु व अपने सांस्कृतिक सरोकार का ध्यान 'गीतों के रश्मि द्वार' में भी रखते हैं:

हमें अभावों, विपदाओं को
लोरी-गीत सुनाना होगा
अपनी ही धरती की माटी
कंचन हमें बनाना होगा
अपनी मुक्ति नहीं बाँटेंगे
कुछ झूठे दावेदारों में।
संस्कृति का बिरवा अपने
आँगन में एक लगाना होगा
मानवता की मेंहदी से
सीमा के हाथ रचाना होगा
लहराए पलकों के भीतर
निष्ठा की गंगा कोरों में।...

हर्ष का विषय है कि शैलेश जी किसी वाद के विवाद में नही फँसे; वे वाद के वंदी नहीं प्रत्युत मुक्त-गीतकार हैं। कोई वाद-बंदी कलाकार मैथिलीशरण या हरिऔध या रत्नाकर, प्रसाद या निराला या पंत नहीं बन पाया। महादेवी और दिनकर भी वाद-वंदी नहीं बने; बच्चन भी। वाद-वंदी जन-जीवन में व्यापक प्रवेश नहीं पा सके। मुक्त-कवि ही अपनी व्यापक मानववादिता एवं तलस्पर्शी सांस्कृतिकता के कारणों से लोकजीवन में प्रशस्त प्रवेश प्राप्त कर पाए। शैलेश जी का व्यक्तित्व अपना हैः रोबदार आकार! शैलेश जी का कृतित्व अपना हैः कलात्मक-संस्कृति से अतिप्रोत। उन पर कोमलता की सीमा का आरोप लग सकता है, किंतु ऐसा आरोप तो विश्वकवि कालिदास से लेकर प्रकृति के सुकुमार कवि पंत और गीत-गीर्वाणी महादेवी प्रभृति पर लगाया जा सकता है। कोमलता गीत का एक प्रायः-अपरिहार्य अंग भी है। उनकी कविता के आयाम जीवन-व्यापी नहीं है, किंतु ऐसा तो भूषण और देव प्रभृति महाकवियों में भी दीखता है। शैलेश जी को उनके निज-रूप में देखना और रखा होगा। तभी उनका चारुत्व स्पष्ट हो सकेगा।

शैलेश जी का भाषा-शिल्प विलक्षण है। गीत का निकष है, संक्षिप्तंता अथवा एक भावमयता और भाव की कोमलता का भी उससे संबंध है। गेयता तो 'गीत' शब्द से ही प्रकट है। किंतु भावानुरूप कोमल-कांत-पदावली भी प्रायः- अप्रतिवार्य है। (विद्यापति, मीराँ, सूर, तुलसी जैसे महान् गीतकारों ने इसका ध्यान रखा है। प्रसाद ('बीती विभावरी जाग दी' एवं 'लाज-भरे सौंदर्य, जैसे, महान् गीतों में) और महादेवी ने भी। पंत की शब्द-मैत्री विश्व-स्तरीय है। शैलेश जी भाषा-शिल्पी के रूप में भी बहुत सफल हैः

सपनाई अरहर की कच्ची सब डालियाँ
खेत खेत गदराईं गेहूँ की बालियाँ
पीत पत्र सरसों ने आमंत्रण के भेजे–
निकल पड़ीं भौंरो की मदमाती टोलियाँ।
राधा ने अर्थ पढ़े सेंदुरी लकीर के।...

(दर्पण के आर पारः रिश्ते जंजाल हैं)

अर्थ बोझिल हुए मौन शब्दावली
पढ़ रहे चाँद का दूधिया व्याकरण...

(वहीः दूधिया व्याकरण)

बर्फीली उम्र का गलाव
आज लिए आँखों में
नियति का छलाव।...

(गीतों के रश्मि द्वारः मुस्काने कैद हुईं)

पलकों पर छितर गई
रसवंती शाम
छाँव छाँव मन भटके
दुबक गया धाम।

(वहीः रसवंती शाम)

शैलेश, जी के प्रतीकों और बिम्बों की विवेचना हेतु एक पृथक् आलेख आवश्यक होगा। उनका 'पत्थरों से भरी मुट्ठियाँ है यहाँ" (दर्पण के आर पार) गीत तो इस दिशा की प्रतिनिधि (चना मात्री जा सकती है। कहीं-कहीं उनकी उपमाएं बड़ी सजीव हैं।

अपनी दोनों गीत-कृतियों ('दर्पण के आर पार' एवं 'गीतों के रश्मि द्वार') में शैलेश जी ने सरलता एवं सहजता के साथ प्रेम, सौंदर्य, स्मृति, विरह इत्यादि गीत के नितांत अनुरूप शाश्वत भावों की प्रभावी विवृति तो की ही है, युग-विडंबनाओं, पाखंड, विषमताओं इत्यादि सामायिक भावों को भी सफल अभिव्यक्ति प्रदान की हैं आक्रोश एवं प्रहार का अभाव उनकी विशेषता है; कई आवेशी महानुभाव इसे दुर्बलता तक कह सकते हैं। वे सिंह हैं, बघेल है; किंतु हृदय से सारस, हंस! उनके काव्य में 'सुमेर' (सुमेरु) का स्वर्ण है, शैलेश का सूर्योदय-स्वर्ण है; उनका जन्म मनकेशर (जनपद सतना) में हुआ था और केशर स्वर्ण-वर्ण है ही; स्वर्ण-ही-स्वर्ण, सुरभित-स्वर्ण। उनके यहाँ आयस ढूँढ़ने का आयास व्यर्थ होगा।

शैलेश जी ने आतंकवाद, हिंसा, शोषण, प्रपीड़न पर भी दृग्पात किया है, कई आत्मपरक-कविताओं में परिवार, संबंध-जटिलता, ढलती आयु की समस्या का भी। इन रचनाओं में वे मार्मिक रचनाकार और जीवन-कवि के रूप में प्रकट होते हैं। उन्होंने जीवन की व्यापकता के उद्गार का प्रभावी वर्णन किया है:

एक छंद चाँदनी का एक छंद रागिनी का,
एक छंद मातु वीणापाणि के शृंगार का।
एक छंद सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् सनेहवारो,
एक छंद वीण की गूँजती झनकार का।
एक छंद आदिशक्ति की पुनीत भक्ति का हो,
एक छंद शारदा के नेह औ दुलार का।
शब्द-शब्द गूँथ रहे भाव के प्रसून लिए,
अर्पित है छंदमाल माँ के कंठहार का।

परंपरा एवं प्रगति का नियोजन व्यापकतम दृष्टि की अपरिहार्य अपेक्षा करता है; संकीर्णता की उपेक्षा ही कला की अपेक्षा है। पुनरुक्ति-दोष की प्रतीति के साथ भी, उक्त छंद शैलेश जी की कविता का घोषणापत्र बन गया है।

शैलेश जी ने ग़ज़लें भी लिखी हैं, जो बस-ठीकठाक हैं। उर्दू-ग़ज़ल (मीर और ग़ालिब से फ़ैज़ और फ़िराक़ तक) इतनी व्यापक और विशद है कि हिंदी का कोई ग़ज़लकार बड़ी-पहचान नहीं बना पाया उनका 'हिंदी-ग़ज़लः विवेचनात्मक अनुशीलन' अच्छा किंतु अनेक में एक ग्रंथ मात्र है। वास्तव में, शैलेश जी तन-मन-जीवन से गीतमय है तथा इस रूप में श्लध्यितः स्मरणीय।

8. हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ

हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ!
मैं कण नहीं, सरगमाथा हूँ
बिंदु नहीं, सागरगाथा हूँ
कोई नहीं अलग है मुझसे
इस अनुभव की ज्योति जगाओ
हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ!

मैं तिनका, मैं आसमान हूँ
मैं पैदल, मैं वायुयान हूँ
मैं डोंगी, मैं युद्धपोत हूँ
विशद आत्मा-भाव बढ़ाओ
हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ!

मैं हिंदू, मैं मुसलमान हूँ
वेद-शास्त्र मैं, मैं कुरान हूँ
मैं ईसाई, जैन और सिख
चरम सत्य प्रत्यय उपजाओ
हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ!

भारोपीय आर्य, मैं वानर
नीग्रो, द्रविड़, यक्ष औ किन्नर
मैं गोरा, मैं काला, पीला
मैं सब कुछ, सबरंग बनाओ
हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ!

मैं ही राम, बुद्ध, मोहम्मद
कहीं भी नहीं है मेरी हद
सारे छोटेपन बनावटी
सहज-रूप मुझमें विकसाओ
हे प्रभु, मेरा द्वैत मिटाओ!

1. सरगमाथा (स्वर्गमस्तक) नेपाल में सागरमाथा (ग़लत) बोलते हैं; एवरेस्ट।

9. करगिल

"कर! कुछ कर!!" करगिल से यह हुंकार आ रही
"बलिदानों का पर्व!" भारती स्वयं गा रही।
कर! गिल्ला-शिकवा मत कर! यह रक्त पर्व है
जननी-जन्मभूमि करती बलिदान-गर्व है।

सैंतालिस, पैंसठ, इकहत्तर मत दुहराओ
निन्यान्बे के फेर में पड़े! शत्रु ढहाओ!
सारा ही नेतृत्व ख्यातिआखेटक, रोगी—
कोई सफल नहीं हो पाया बनकर ढोंगी।

शांतिरोग ने सदा, आह! भारत को तोड़ा
चंद्रगुप्त-चाणक्य धन्य, गौरव से जोड़ा।
चंद्रगुप्त-विक्रमादित्य शकराज ढहाता
इन्हीं अंचलों में गौरव की गाथा गाता।

युवा रक्त ही स्वतंत्रता की प्यास बुझाता
नेताओं का वृद्ध रक्त थोथा यश पाता।
एक शहीद हज़ारों नेताओं पर भारी—
बलिदानी-सम्मुख नत है मानवता सारी।

सारा राष्ट्र बने सैनिक, हथियार सम्हाले—
ले किसान हल, श्रमिक हथौड़ा हाथ उठा ले।
कवि! लेखनी-खड्ग मसि-लोहू, छेड़ तराना
अभिनेता-अभिनेत्री को भी फ़र्ज़ निभाना।

जाएं मोर्चों पर, वीरों का जोश बढ़ाएं
बड़े खिलाड़ी सर्वोच्चों को शीश नवाएं।
गृहिणी भेजें वस्तु, सभी दें कुछ-कुछ चंदा
पल-पल जागृति रहे, जोश हो कभी न मंदा।

पापिस्तान[1] बनाया केवल नेताओं ने
घृणावाद फैलाया इसके कोने-कोने।
एक लोग, भाषा संस्कृति भी नहीं पराए
किंतु पापियों के कारण से ही भरमाए।

शव तक का अपमान विकट पैशाचिक ताण्डव!
इन शैतानों के ही लिए बना है रौख!
"रिपु पर कृपा परम कदराई" मंत्र न भूलो
समझौतों में छिपे रहे षड्यंत्र न भूलो।

पाकिस्तान से अधिक मुस्लिम भारतवासी
पर जिहाद का नारा देते मानवनाशी।
केवल सीमायुद्ध नहीं, यह मानवता का
युद्ध! हरा कर नष्ट करो इस दानवता का।

छोड़ो गोलमटोल तर्क, छाती को चीरो
वह भी यह आह्वान करे, "आओ अब वीरो!
मानवता में भेद नहीं रहने पाएंगे
इसी सत्य के लिए जिएंगे, मर जाएंगे!

1. 1947 (नेहरू), 1965 (शास्त्री), 1971 (इंदिरा) की जीतें दूरगामी लाभों से रहित रहीं। 1999 (वाजपेयी) के बलिदान भी लाभदायक न हो सके।

2. आतंकवाद, ड्रग्स, तस्करी के कारण पाकिस्तान वस्तुतः पापिस्तान है।

10. माँ! भेजो ये जामुन करगिल[1]

है प्रबोध दस साल का
मस्त खिलाड़ी-चाल का।
मैडम कक्षा में आई
थैला एक साथ लाई।
करगिल पर कुछ समझाया
बलिदानों पर बतलाया—
"करगिल कहता है कुछ कर
अपने देश के लिए मर
कर! गिल्ले-शिकवे रख दूर
धन दे बाधाओं को पूर!"
लड़कों ने उत्साह दिखाया
सौंपा जो था मन को भाया।
एक अठन्नी, रुपया, पाँच
दिए; दान में कहीं न आँच।

जेबें, बस्ता, सब को ख़ोला
"केवल सवानौ बने" बोला—
कल सौ रुपए लाऊँगा
भारत-माँ पे चढ़ाऊँगा।
सुन प्रबोध की गहरी बात
मैडम के थे पुलकित गात।

घर में पा जामुन का दाना
कई दिनों का था हठ, रोना

लख प्रबोध हरषाए थे
दादा दूर से लाए थे।
पर केवल कुछ ही खा पाए
तभी याद मैडम-स्वर आए–

"करगिल कहता है कुछ कर"
आँखें थीं आँसू से तर!
अम्मा! भेजो जामुन करगिल
वहाँ नहीं पाते होंगे मिल
सैनिक वीर जवानों को
मातृभूमि-दीवानों को।

1. 'कारगिल' ग़लत है। 'करगिल' का अर्थ 'श्वेतभवन' भी होता है, चतुष्पथ भी।

11. कश्मीर

सतीसरस् से कश्यपसागर, ऋषि-पावन कश्मीर है
धरती पावन शस्य-श्यामला, उजला-उजला नीर है।
जुड़ा श्रीनगर है अशोक से, परदेसी कनिष्क आया
ललितादित्य महान् विजेता, इतिहासों ने यश गाया।
हिंदू और बौद्ध आचार्यों की संख्या का पार नहीं
सूफ़ी शेख़ फ़कीरों की वाणी की भी रसधार यहीं।
हैं अवंतिवर्मन् जीवित, पग-पग पर मंदिर की गाथा
लल्लेश्वरी रहस्यवादिनी ऊँचा करती है माथा।
चिर हब्बा ख़ातून शायरा, छाया नेहरू-वंश है
हक्सर, सप्रु, कौल बहुत-से जिनका सेवा-अंश है।
भारत का मस्तक, सुंदरता का आलय कश्मीर है
जिस पर गर्व हिमालय करता वह अक्षय कश्मीर है।
शत-शत नमन पवित्र धरित्री का प्रतीक कश्मीर है
है ऐश्वर्य प्रकृति का, सुषमा-प्रथमलीक कश्मीर है।

12. केरल

पावन नारिकेर का धाम
मेरा केरल ललित-ललाम।
यहाँ शंकराचार्य हुए थे
दर्शन के सब छोर छुए थे।
एडुत्तच्छन्, वल्लत्तोल
भारत के कविरत्न अमोल।
हिंदी के कवि श्री तिरुनाल
शंकर कुरुप् विजेता-काल।
चंद्रशेखरन् भारत-लाल
हिंदी पाकर जिन्हें निहाल।
राष्ट्र-एकता शुभ निष्काम
मेरा केरल ललित-ललाम।

यहां सेंट टॉमस थे आए
पुर्तगाल ने चर्च बनाए।
मुस्लिम सूफ़ी भी मनभाए
राष्ट्र-एकता चित्र बनाए।
नारायण गुरू समता-संत
सर्वपूज्य वे हैं मतिमंत।
मानव-ऐक्य निदर्शन देख
राष्ट्र रहा महिमा अवरेख।
जनसंख्या-आदर्श महान्
शिक्षा में अनुपम अवदान।

विविध प्रगति का उत्तम धाम
मेरा केरल ललित-ललाम।

काजू, रबर, मसाले देता
सबल विश्व-मुद्राएं लेता।
नर्सें हुई विश्वविख्यात
अन्य राज्य खा जाते मात।
सागर का रत्नाकार-रूप
नदियों, नौका-क्रीड़ा भूप।
रसमय धरा, हरा, परिवेश
प्रकृति-छटा दर्शन अनिमेष।
नील व्योम, रत्नाकर नील
शस्यों का है आकर नील।
नील विष्णु, राघव, घनश्याम
मेरा केरल ललित-ललाम।

13. महाराष्ट्र

महाराष्ट्र जिसने स्वराज्य का शंख बजाया
भारत-माता के मस्तक पर तिलक लगाया
वीर शिवाजी शौर्य-रूप जग में यश छाया
मध्यकाल के अंधकार को दूर भगाया।

नानाराव, तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई
अतुल वीरता से स्वातंत्र्य समय अगुवाई
कायरता-दासताभावना दूर भगाई
युगों-युगों के लिए क्रांति की ज्योति जलाई।

पुलकेशिन् ने अरब-आक्रमण विफल बनाया
चाफेकर-बंधुत्रय ने बलिदान भगाया
सावरकर ने अमर क्रांति का बिगुल बजाया
हेडगेवार-तपस् ने नव-इतिहास रचाया।

ज्ञानेश्वर के ज्ञान-योग की गौरव-गाथा
नामदेव की मानवता है पावन-पाथा
एकनाथ-रामायण करती ऊँचा माथा
रामदास का 'बोध', भूमि ना रही अनाथा।

पंचवटी में राम आज भी विद्यमान हैं-
सीता-लक्ष्मण साथ! गूँजते भक्तिगान हैं

पंढरपुर के तीर्थ, बिठोबा विद्यमान हैं
और मुबंई में उन्नति के नवविहान हैं।

दयानंद ने आर्यसमाज महान् बनाया
यहीं ह्यूम ने काँग्रेस का ठाट सजाया
यहीं संघ ने राष्ट्रवाद का स्वर लहराया
महाराष्ट्र है सारे इतिहासों की छाया।

अमर फाल्के ने पहला चलचित्र बनाया
और लता मंगेश्कर ने सर्वाधिक गाया
गावस्कर-तेंदुलकर का यशध्वज लहराया
इन सब ने भी महाराष्ट्र का नाम बढ़ाया।

कृषि हो या व्यापार, धर्म या कला सुहानी
महाराष्ट्र है सभी दिशाओं में लासानी
एक ओर साहित्य अमर है, भरी रवानी
और दूसरी ओर चमकती 'शिवा-'भवानी'।[1]

स्वयं नाम से ही महान् चिर-गौरवशाली
भूमि और सागर पर छाई है हरियाली
धरा शस्य लहराती, फल हैं डाली-डाली
महाराष्ट्र की पावन धरती अतुल निराली।

1. शिवाजी की कृपाण का नाम 'भवानी था।

14. स्वतंत्रता का युद्ध अनवरत

स्वतंत्रता का युद्ध अनवरत
सदा चला है, सदा चलेगा
हुआ राष्ट्र निश्चित तभी तो
उसको कोई शत्रु दलेगा।
भारत ही बस एक देश है
लगातार जो लड़ता आया
बेची नहीं संस्कृति उसने
इसका भारी-मूल्य चुकाया।
देवासुर-संग्राम चिरंतन
उनसे ही इतिहास खुला है
वैदिककाल साक्षी इसका
शब्द-शब्द बलिदान-घुला है।
चंद्रगुप्त-चाणक्य धन्य थे
सेल्यूकस को धूल चटाया
बढ़ उपमहाद्धीप से आगे
भारत-विजयध्वजा फहराया।
हैं शकारि-विक्रमादित्य ही
महत् राष्ट्र के शाश्वत नेता
स्कंदगुप्त, दाहिर यश सुस्थिर-
जो जूझा है वही विजेता।
अमर पद्मिनी और प्रताप हैं
छत्रसाल औ वीर शिवाजी
बलिदानी-वर योद्धा जीते

सीधी हो या उलटी बाज़ी।
जय चाफेकर-बंधुत्रय की
खुदीराम की जय-जय बोलो
जय बिस्मिल, अशफ़ाकुल्ला की
भगतसिंह से मन-पट खोलो!
ज्वलित जवानी का शरीर है
जो आज़ाद झुकाना माथा
जिया-मरा आज़ाद ही रहा
शाश्वत है उसकी यशगाथा!
"अहं राष्ट्री" का स्वर इसका
"माता भूमिः" पहली वाणी
"जननी-जन्मभूमि स्वर्गोपरि"
राम-गिरा शाश्वत कल्याणी।

15. जो जीवन से जूझे वह साहित्यकार है

जो जीवन से जूझे वह साहित्यकार है
अग्निपान से संभव होता नवविचार है
ओ सुविधाभोगियो! छलोमत जगत् स्वयं को
बर्फ़ नहीं यह जीवन, यह गतिमय अँगार है।

केवल नवता से जीवन अनाथ हो जाता
केवल परंपरा से जीवन जड़ता पाता
अए क्रांति को ठगने वालो! ओ पोंगाओं!
जिसने देखा है समग्र वह युग-चिर गाता।

तुलसी की मसि ने असि को भी पीछे छोड़ा
सूरदास ने रास-रंग से जीवन जोड़ा
महावीर[1] ने युग-चिर नूतन-सेतु बनाया
नव-संवेदन हेतु निराला ने कवि मोड़ा।

अंतर-बाह्य द्वैत की दुर्बलताएं छोड़ो
पर कबीर के सदृश सभी मनुजों को जोड़ो
कोरे संवेदन से आगे बढ़ो, सुधारो
मानव को! उसके पशुत्व को पहले तोड़ो!

क्रांति बन गई धंधा, लेखक है व्यापारी
सबल करो दुर्बल को, देखो मत लाचारी
बंद नक़ल कर राष्ट्र अस्मितापूर्ण बनाओ
देशद्रोहियों पर टूटो बनकर के भारी।

1. आधुनिक हिंदी-भाषा के नियामक और साहित्य-निर्माता आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी (15-5-1864 से 21-12-1938)।

16. देशद्रोहियों के विकराल काल बन जाओ!

किसने "पाकिस्तान लाश पर" प्रण को तोड़ा?
किसने घाटी बाँटी, अंश पाक से जोड़ा?
किसने कंजरकोट न्याय का विषय बनाया?
किसने बांग्लादेश बनाकर लाभ गँवाया?

किसने बांग्लादेशी भारत बुला बसाए?
किसने जातिवाद घातक विषवृक्ष लगाए?
किसने बसयात्रा के प्रहसन रचे-रचाए?
किसने करगिल में युवकों के रक्त बहाए?

किसने खरबों है विदेश-बैंकों में डाला?
किसने देशद्रोहियों के नागों को पाला?
किसने-किसने हत्या की इतिहास विषय की?
किसने है साहित्य बनाया रचना क्षय की?

दीन-दरिद्र भारतीयो! सच को पहचानो
तजो व्यक्तिपूजा, निज के महत्त्व को जानो
मनमानी जो करे मारकर पुण्य कमाओ
देशद्रोहियों के विकराल काल बन जाओ!

17. प्यारा हिंदी-गीत महान्

विद्यापति का "सब जन मिट्ठा
देसिल बअना" सदा लुभाता
गीत-सुमेरु सूर मोहक स्वर
प्रेम के सभी रूप दिखाता।
गीतों की देवी मीराँ का
विष-प्याला पीयूष पिलाता
विश्व-गहनतम विनय पत्रिका
तुलसी का चिर-गान।
प्यारा हिंदी-गीत महान्।

गीत प्रसाद, निराला गाते
पंत ताल में ताल मिलाते
और महादेवी नव-मीराँ
है हर गीत चमकता हीरा
बच्चन विरह गीत के नायक
और अनेक शब्द के पायक
देश, विश्व-भागों में गूँजे
चलचित्रों की तान।
प्यारा हिंदी-गीत महान्।

प्रेम विरह औ भक्ति प्रमुख हैं
हास-लास हैं; सुख हैं, दुख हैं
गीत समेटे सब भावों को
अंतर और बाह्य चावों को

गीत हाथ में विश्व उठाए
गीत सकल जीवन को गाए
गीत राग है अंतरतम का
बाह्य जगत् का मान।
प्यारा हिंदी-गीत महान्

गीत गीत था, गीत गीत है
गीत रहेगा, प्राण-मीत है
बहुत विधाएं आतीं-जातीं
अपने-अपने रूप दिखातीं
उनके अपने हाव-भाव हैं
उनकी अपनी चाल, ढंग हैं
किंतु गीत का गायन शाश्वत
अंतस् का अभिधान।
प्यारा हिंदी-गीत महान्।

18. विश्वकवि तुलसी

तुलसी जिसने रामचरित नवरूप सजाया
तुलसी जिसने पुरूषोत्तम को ब्रह्म बनाया
तुलसी जिसने रामचंद्र-दरबार रचाया
तुलसी जिसने हनुमत्-पूजा को फैलया।[1]

नहीं राम-दरबार संग्रहालय में मिलता
यह तुलसी-अवदान, हृदय श्रद्धा से खिलता
पग-पग हनुमत्-मूर्ति देख दुर्जन-मन हिलता
तुलसी ने प्रचलित कर दी हनुमान-अखिलता।[2]

तुलसी जिसके राम अहल्या के घर जाते
शबरी को आश्रम में जाकर अमर बनाते
नारी-संवेदन की सीमा को दिखलाते
"कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं" तुलसी गाते।

नई राम-टकसालः सभी प्रेरक औ पावन
नहीं भरत दशरथ-निंदक, लक्ष्मण सुहावन
सीता लक्ष्मण से ना कहती' शब्द अशोभन
रावण कामुक नहीं, महामानव, संयत-मन।

1. सुग्रीव के सचिव हनुमान स्वामी के साथ किष्किंधा चले गऐ थे।
2. राम-दरबार और हनमान्-पूजा तुलसी ने लोकप्रिय की।

मानस ने सीता-बनवास नहीं स्वीकारा
परवर्ती शंबूक-कथा को तजा, नकारा
कोल, किरात, शबर, वानर से काव्य सँवारा
दे मानवतावाद, सभी का प्राण निखारा।

मुक्तक, गीति, प्रबंध सभी में भरी रवानी
अवधी, व्रजी, संस्कृत व्यापकता लासानी
शासक-महिमागान नहीं, जनहृदय-कहानी
"सुरसरि-क्षम सब कहुँ हित" सृजन-प्रेरणा ठनी।

मालवीय के भक्ति-भावना ने सरसाया
रामराज्य को गांधी ने जी भर अपनाया
चित्रण आदिवासियों का भावे को भाया[1]
संस्कृति-गरिमा-लुब्ध निराला काव्य रचाया।

भारत या नेपाल, फिजी, ट्रिनिडाड, गुयाना
सूरीनाम और मॉरीशस, माना
कथावाचकों ने यश का वितान जग ताना
हुआ 'विश्वकवि' शब्द सत्य, सार्थक, सुहाना।

1. विनोबा भावे।

19. संसद

संसद लोकतंत्र की मथुरा
संसद लोकतंत्र की काशी
संविधान ही वेद यहाँ का
है इतिहास धवल अविनाशी।

भवन मात्र यह नहीं; भावना गौरवशाली
लोकतंत्र, जनता की उन्नति जिसने पाली
व्यक्ति-राष्ट्र की गरिमा की करता रखवाली
भारत-भारतीयता प्रतिमा इसने ढाली।

पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्खिन एक बन गए
मानो सारे जल नूतन अभिषेक बन गए
जाति-वर्ण सीमाएं टूटीं, मनुज हम नए
नर-नारी के भेद हटे, सिद्धांत सम नए।

संसद समता का प्रतीक, सबसे महान् है
अधुनातन इतिहासों का यह विशद गान है
सभी राष्ट्रनिर्माताओं का प्रत्यक्ष मान है[1]
नित्य नवल, आशाओं का नितनव विहान है।

प्रस्तर-प्रस्तर संविधान-परिषद् की गाथा
"वादे-वादे तत्त्वबोध" से उन्नत माथा
मानवता की गंगा बहती पावनपाथा
इसके कारण समता लगती नहीं अनाथा।

जग-व्यापकतम-लोकतंत्र का गौरव-धन है
जनसत्तावादी मानव का मोहित मन है
भारत मात्र नहीं; जग भर का आशा-स्वन है
प्रति भारतवासी का प्राण और जीवन है।

1. भव्य चित्रमाला एवं कुछ मूर्तियाँ।

20. रक्तदान

रक्त प्रतीक एकता का, यह 'वर्ग' बताते
रक्तकेन्द्र है हृदय, गीत अगणित कवि गाते
रक्त वस्तु सर्वोपरि, सब शोभा को पाते
तप्त रक्त पर ही सारे संग्राम लुभाते।
रक्तदान सर्वोपरि दान कहा जाता है
मरणासन्न व्यक्ति को जीवन का दाता है
रक्तदान से दाता परजीवन पाता है
रक्तदान का चिरता से पक्का नाता है
मरने पर अनमोल रक्त बन जाता पानी
रक्तदान से जीवन पाता अमर जवानी
धन्य! धन्य! है रक्तदान की जिसने ठानी
रक्तदान जाज्वल्यमान् हो प्रखर जवानी।

21. मैं बिकाऊ हूँ!

मैं बिकाऊ हूँ
डॉलर, स्टर्लिंग या पॉउण्ड, रूबल, युवान, येन,
दीनार, रियाल देकर मुझको ख़रीद लो-
मैं भारत का इतिहास तीन हज़ार साल
में समेट दूँगाः सामी मज़हब प्राचीनतर!
यूनान से भारत में नाटक, मूर्तिकला
इत्यादि आए! इस्लाम शांतिपथ!
ईसाई मानववादी! आदिवासी अहिंदू।
'हिंदुत्व' पापपूर्ण, सांप्रदायिक, जघन्य!
राम सांप्रदायिक और बुद्ध धर्मनिरपेक्ष!
कृष्ण सांप्रदायिक और ईसा धर्मनिरपेक्ष!
शंकराचार्य सांप्रदायिक, मोहम्मद धर्मनिरपेक्ष!
तुलसी सांप्रदायिक और कबीर धर्मनिरपेक्ष!
तिलक सांप्रदायिक, गांधी धर्मनिरपेक्ष!
पटेल सांप्रदायिक, नेहरू धर्मनिरपेक्ष!
महावीरप्रसाद द्विवेदी सांप्रदायिक, भारतेंदु धर्मनिरपेक्ष!
गुप्त सांप्रदायिक, प्रेमचंद्र धर्मनिरपेक्ष
प्रसाद सांप्रदायिक, निराला धर्मनिरपेक्ष
आर्यसमाज, सावरकर, हेडगेवार
भारत के विभाजन के प्रधान उत्तरदायी!

आर्य नरपशु कठोर विदेशी आक्रांता
खेतिहर चरवाहे प्रतिक्रिया-प्रदाता

मोहम्मद बिन-क़ासिम पावन इस्लाम-वाहक
महमूद ग़ज़नवी स्वतंत्रता का नायक
मोहम्मद ग़ोरी भारत का निर्माता
बाबर स्वर्णकाल का चिर-भाग्य विधाता
औरंगज़ेब फ़रिश्ता, शिवाजी लुटेरा था
अंग्रेज-काल गुलामी का घेरा था
प्रतिक्रियावादी बुतपरस्त हिंदू काफ़िर
इस बार नहीं उठ पाएगा गया यदि गिर।

हिंदू गिराऊँगा
वेद ढहाऊँगा
राम मिटाऊँगा
तुलसी चबाऊँगा
संस्कृत खाऊँगा
उर्दू चढ़ाऊँगा
सेक्युलर कहाऊँगा
वर्ल्ड फ़ेमाऊँगा
पुरस्कार पाऊँगा
अमर हो जाऊँगा।

22. हरसिंगार : इक्कीसवीं सदी

हरसिंगार हर नासिका का सिंगार करता है
पर इसकी सुगंध को ज़ोर से मत सूँघो
पेट्रोल और डीज़ल का धुआँ फेफड़ों पर जम जाएगा
धूल के सारे कण रक्त न धो पाएगाः
इक्कीसवीं सदी के सारे हृदय काले होंगे।

उस दौड़ाक युवक को मैंने रोका थाः
कारख़ानों की धुआँ उगलती चिमनियों से घिरे
इस पार्क में लंबी तेज दौड़ का अभ्यास
मत करो! पर वह न माना। अब हॉस्पिटल
में पड़ा बेहाल; सुना है, बच जाएगा
विज्ञान का उत्कर्ष उसको बचाएगा!

इक्कीसवीं सदी का स्वागत

इक्कीसवीं, सदी का स्वागत! सभ्यता का वितान
चंद्रलोक तथा अन्य लोकों तक तनेगा
पर मानव की पहचानः मुख वस्तुत; म्लान
रम-व्हिस्की-बीअर की ख़रीदी हुई मुस्कान
मुक्त-संभोग-क्रांत स्वतंत्रता-आह्वान।
ऑक्सीजन-पेटी बाँधे टहलता हुआ इंसान!
सभ्य विटामिन-संपन्न प्रोटीन-रिच खान!
स्वच्छ बोतल में बंद खनिजयुक्त उच्च 'पान'!
नदियाँ विष-प्रवाह ढोतीं, नंगे नग हिमवान्!
"वन कभी होते थे" का पुस्तकीय ज्ञान!
कुछ पशुओं की नस्लें बस ज़ू में विद्यमान!
शेष मूर्तियों एवं चित्रों में विद्यमान!
"किसी समय रिश्तों और नातों का मान!"-
यह पढ़कर बालवृंद होएंगे हैरान।

23. बीसवीं सदी का सारांश

धन्य पिछली सदी के चार्ल्स डार्विन जिन्होंने
बंदर को मानव-पूर्वज बता मानवता क्रांत की
धन्य पिछली सदी के कार्ल मार्क्स जिन्होंने
ईश्वर-आत्मा-रहित मानवता निर्भान्त की
धन्य इस सदी के सिग्मंड फ्रायड जिन्होंने
दिव्यता की कल्पना पूर्णतः ध्वान्त की
धन्य इस सदी के आइंस्टाइन जिन्होंने
जीवन की व्यापक अनंतता सांत की!

24. गीत

गीत हृदय-धड़कन की भाषा
मानव की शाश्वत अभिलाषा।

गीत प्रकृति का सहज गान है
सागर, सरिता, निर्भर गायक
कोकिल कुहू, पपीहा को 'पी'
श्यामा को सीटी की आशा
गीत हृदय-धड़कन की भाषा।

गीत नहीं कवि की रचना है
गीत स्वयं कवि को उपजाता
शत अनुभव ही एक गीत बन
करते कवि की दूर निराशा
गीत हृदय-धड़कन की भाषा।

गीत प्राण का अमर शिखर है
तल अगीत, नवगीत आदि हैं
छद्मगीत, अनुगीत, अन्य भी
दिखलाते हैं बहुत तमाशा
गीत हृदय-धड़कन की भाषा।

शिशु का रोदन गीत श्रेष्ठतम
प्रणय गीत-भाषा में बोले
राम नाम का सत्य गीत है-
गीत व्याप्त आशा-प्रत्याशा।
गीत हृदय-धड़कन की भाषा।

25. बेईमान दुनिया में कविता भी बेईमान हो गई है!

विजातीयतावादी (कई-कई रूपों में)
विवादी
संवादी
प्रवादी
दलितवादी
उत्तरआधुनिकतावादी
इस 'वादी' उस 'वादी' में कविता खो गई है
रो गई है।
यह मुखौटों का युग है
किसी की शक्ल असली नहीं रह पाई
मानव-मूल्यों की रुलाई
मानवाधिकारों की ढुलाई
मानवता की दुहाई
देश की तिहाई
नैतिकता की चौहाई
बलिदान की पँचहाई
सब असली दूध की तरह खरगोश के सींग
भूले बिना पींग

भारत एक भीड़ है, राष्ट्र नहीं
देश एक नक्शा है, स्वराट् नहीं।
मनुष्यों की भयानक भीड़ में मानवता खो गई है
बेईमान युग में कविता भी बेईमान हो गई है।

26. तराना इक्कीसवीं सदी का

जितना गुलाम आज है उतना न था कभी
भारत! तेरा मस्तक झुका, परतंत्र तू अभी।
हा, मर गई 'स्वदेशी', म्रियमाण पड़ी हिंदी
इंग्लिश उड़ा रही है हिंदी की चिंदी-चिंदी।
भारत है एक भीड़, राष्ट्र नहीं! सब जगह
हर एक की है डफली अपनी ही रही कह।
खंडित है देश, फ़िरकापरस्ती है अखंडित
है निरपराध जनता ही बार-बार दंडित।
था जुड़ रहा समाज, जातिवाद ला के तोड़ा
हा, स्वार्थग्रस्त नेतागण ने न राष्ट्र जोड़ा।
सुरसा बना नेता है निगल रहा देश को
वह सर्वदा भुनाता एक-एक क्लेश को।
कीड़ों-सी बिलबिलाती जनता भी जानती
फिर भी, नहीं है एकता के बल को मानती।
जनसंख्या-पर्यावरण-भ्रष्टाचार त्रासदी
पिछली सदी-सी होगी इक्कीसवीं सदी।

27. आह, शोकतंत्र!

सड़क पर
फुटपाथ पर
बस में, रेल के डिब्बे में, प्लेटफ़ार्म पर
गाँव में, स्लम में, हाट में, बाज़ार में
चुपचाप देखता हूँ 'एक भारतीय' कोः
नर या नारी बस इसी में समान हैं-
चेहरे की किताब पर कुंठा की कहानी
पल-पल परेशानी
अदालत, थाना-चौकी, यह दफ़्तर वह दफ़्तर
बस, पसीने से तर
बेबस, बेकस, बेज़र
कोई चेहरा दोरंगा, कोई बदरंगा
कोई पीला-सा, कोई बेढ़ंगा
आँखें खोई-सी या फिर रोई-सी...
और, शिथिल पड़ जाता मेरी देह का यंत्रः
लोकतंत्र नाम का, वास्तविक शोकतंत्र!

28. कैसे गाऊँ गीत प्रीत के वाणी रूठी?

कैसे गाऊँ गीत प्रीत की वाणी रूठी?
बिखर उड़ गए भाव हृदय की झोरी खूटी।

मॉनसून के बादल-सा मन, विरह हिमालय
रोक-रोक वापस भटकाता, किए अश्रुमय
कहीं तरजता, कहीं लरजता, कहीं गरजता
पर भटकाव नहीं रुकता, पल नहीं है सदय।
मन में बाढ़, अंग पर सूखे, आँखें लूटी
कैसे गाऊँ गीत प्रीत के वाणी रूठी।

अपनी दुनिया सदा-सर्वदा छोटी होती
यह टूटी जब खंडित होती, बेहद रोती
अरबों की आबादी में मन हुआ अकेला
टुकुर-टुकुर ताकता, दिशाएं रंगत खोतीं।
हृदय लुटा देता सब, संसृति फूटी-फूटी
कैसे गाऊँ गीत प्रीत के वाणी रूठी?

29. मैं बूढ़ा हो गया...

मैं बूढ़ा हो गया और अब मान भी गया
किंतु लोक-आलोक दीखता नए-पर-नया!
प्राणी आता, बढ़ता, जीता औ मर जाता
किंतु जगत् यह संतत जीता, नहीं बुढ़ाता।
नित्य नया संसार संसरणशील नहीं है
यह है सम्यक् सार, स्वर्ग औ नरक यहीं है।
स्वर्ग जहाँ हम स्वयं गमन करके जाते हैं
नरक अर्थ नरकृत, तब क्यों हम भय खाते हैं?
एक हाथ में स्वर्ग, अपर में नरक उठाए
लक्ष्यहीनता लक्ष्य बनाए मानव धाए।

शैशव रहता पाँच, बालपन सात वर्ष का
सात वर्ष कैशोर्यकाल है निलय हर्ष का।
एकादश वर्षों का यौवन आता-जाता
प्रौढ़काल है तीस वर्ष तक साथ निभाता।
धन्य बुढ़ापा जो बस केवल आना जाने-
अंत समय तक साथ! जगत्-जीवन पहचाने।
शैशव बाहों में, बालापन हृदय छिपाए
यौवन मन में, प्रौढ़काल को गले लगाए।
गहन बुढ़ापा सारे जीवन का प्रतीक है
अनुभव की सीमा, गौरव की अमिट लीक है।
झुका हुआ तन प्रकट बताताः भली नम्रता
एक-न-एक दिवस सबको ही झुकना पड़ता।

लाठी बतलाती, सर्वोपरि दंड रहा है
जिस समाज के कर से छूटा, वही ढहा है।
दंड दुष्ट को, राष्ट्र-शत्रु को ना दे पाया
जिस पामर ने उसने जीवन व्यर्थ गँवाया।

मैं न झुका, ना लाठी टेकी, किंतु वृद्ध हूँ
तन-बल थका, किंतु मन-बल से अतिसमृद्ध हूँ।
रोग, जरा औ मरण पूर्णतः अप्रतिवार्य हैं
केवल कर्म चिरंतन, बस वे ही विचार्य हैं।
मैं हूँ अमर क्योंकि संतानों में जीऊँगा
परंपरामय जीवन-अमृतरस पीऊँगा।
जीवन में साहित्यधर्म को मैंने साधा
ग्रंथ-रूप जीऊँगा; क्या है कोई वाधा?
अक्षर के तेजस् को मैंने रक्षित रक्खा
उच्चादर्श-विहंग को सदा पक्षित रक्खा।
मेरा अलग-थलग पड़ना सच का है साक्षी
देख रही है सरस्वती माता विपुलाक्षी।

यह सिद्धांत-भाग था, इसका अपना गौरव
किंतु व्यावहारिक जो भाग चला उस पर भव।
"अंग गलित" सत्य, "पलितं मुंडम्" भी संभव
"दशनविहीनं जातं तुंडम्" में दंतक नव।
"करधृतकंपित शोभित दंडम्" अब बेहद कम
"तदपि न मुंचत्याशा पिंडम्" में बेहद दम।
थकित दृष्टि पर शल्यचिकित्सा काम चलाऊ
जितने रोएं उतने रोग सदैव उबाऊ।
बाल सफ़ेद कफ़न से सर पर चढ़ सच बोलें
काले जो करते उनकी कलई भी खोलें।
किंतु कफ़न मेरे सिर पर चढ़ने से डरता
वह भी समझ गया साहित्यिक कभी न मरता!
कृत्रिम दंतक, शल्यित लोचन, कुंतल काले
धोखा देते बहुतों को! कोई न सम्हाले!
वैसे तो अपसंस्कृति है मानवताधाती
पर सज्जन से है जरायु कुछ सेवा पाती।

मुझे नहीं उपलब्ध। कहूँ या मौन को गहूँ?
"अतिशय रुग्ग नहीं मैं" कहते लोग, मैं दहूँ।
पोर-पोर में टूटन, अवयव-अवयव ढीला
पर चेहरा छलिया, बहुतों को लगे सजीला।
अतिविशिष्ट लगता, चाहे हूँ लुंगी टाँचे
मेरी अंतर्व्यथा, आह! कोई ना बाँचे।
उधर सत्य का दंड चिरंतन, पर मुझको अति
है निंदा, अपवाद, प्रवाद, उपेक्षा, दुर्गति।
किंतु लेखनी मेरी कौन छीन सकता है?
जब तक सक्षम प्राण सत्य को ही तकता है।
वाग्देवी का दास नहीं व्यापारी होता
राम दास अस्मिता स्वप्न में भी ना खोता।
झुकना और टूटना संभव नहीं मरण तक
गरलपान वरदान रहेगा श्वास-क्षरण तक।

30. क्यों देखता हूँ?

कभी-कभी मैं अपने पुस्तकालय में किसी भी कार्य
से प्रवेश करता पर हाथ में अनायास
आ जाता एक छोटा अंग्रेज़ी-हिंदी-कोश
निर्दोष
लेकिन न खामोश
और मैं उसे उठा मस्तक पर लगा लेता
कुछ देर देखता, सादर रख देता
याद-सा आता उन्नीस सौ-पचास ईसवी
का वर्ष जिसमें इसे ख़रीदा था...और...
और एक दिन एक मित्र के साथ बैठा
पढ़ाई और गप्पबाजी में व्यस्त था
तभी अचानक आई सुदर्शना चोपड़ा ने
मित्र से बतियाया, मैं आँखें नीची किए
बैठा रहा चुपचाप, सुदर्शना ने यों ही
इस कोश को उठाकर देखा कुछ पल...
और तभी से यह कोश अमरकोश बन गया!
सुदर्शना को कभी पूरी तरह नहीं देखा
एक बिखरी रेखा
भावी की लेखा
उन्नीस सौ-अड़तालीस में अज्ञात-सुप्त कवि
को उसने जगाया था अनायास, मौन, शांत!
कई युग बीत गए सुदर्शना अर्द्धदर्शन
भी नहीं प्राप्त हुआ, उस पर कविताएं लिखीं

कुछ छपीं, शेष उड़ गई जीवन-झंझा में
फिर भी, अवसर पाते, पल पाते कोश को
देखता, विकल होता, अनिर्वचनीय दशाः
सोचता, आँसू तक नहीं आ पाते, समय
रुक जाता, कभी लगता श्वास रुक जाएगा!
पर क्या पाएगा?
अशरीर गाएगा?

ज्यों ही कोश रखता यथास्थान त्यों ही 'पंचवटी'
निकालता मैथिलीशरण के काव्यों में से और
अंतिम पृष्ठ पर अंकित 'स्वर्ण अमीन' में
खो जाता, शब्दों को मस्तक पर लगा लेता।
नया शिक्षक था, शिष्या एकांत में आकर
बतियाती और एक बार "हाथ देख लेते?"
कहा, किंतु मैंने "नहीं" उत्तर दिया, छुआ नहीं
पर "नाम स्वर्ण रंग लाल का" कविताएं
सुनाता था, वह हाथ बढ़ातीः दीजिए!
किंतु मैं कृपण हो अपनी जेब में रखता
सुधा का रस चखता
एक पल निरखता
उन्नीस सौ-अट्ठावन से नहीं देखा, पर
'स्वर्ण अमीन' देख हृदय क्यों आता भर?

31. पूजे जाते यहाँ राष्ट्रद्रोही, अपराधी

पूजे जाते यहाँ राष्ट्रद्रोही, अपराधी
धन्य वही बस जिसने स्वार्थसाधना साधी।
हम हैं पतित अतः पतितों को पूज रहे हैं
परममूर्ख वे जो जीवन से जूझ रहे हैं।

दिल्ली के नेता सुवर्ण-सरिता में डूबे
और मुंबई अभिनेता नैतिकता ऊबे।
विकट माफ़िआ कर अरबों के वारे-न्यारे
बैठ कराची या दुबई में यहाँ सँहारे।

स्विट्ज़रलैंड पापधन-धरती बनी हुई है
वहाँ जमा खरबों, दरिद्रता धनी हुई है।
"धन विदेस चलि जात" व्यथा है आज सौगुनी
नेता-अभिनेता-तस्कर की गाज सौगुनी।

राजनीति, चलचित्र, क्रिकेट, सब में गद्दारी
लेकिन जनता द्वारा पूजा बेहद न्यारी।
कभी, कहीं भी, राष्ट्र न इतना नीच हुआ था
रौरव से कोसों आगे का नरक छुआ था।

आरक्षी आभक्षी, भीषण अन्यायालय
संसद न्यस्त-स्वार्थों का अड्डा, सब विधिक्षय।
स्वत्व, महत्त्व, राष्ट्र, मानवता, सभी बिकाऊ-
सारा राष्ट्र बन गया केवल पीऊ-खाऊ।

राष्ट्र बन गया भीड़, देश-रेखाएं टूटीं
नेता कर से जनता-रथ-वल्गाएं छूटीं।
जहाँ पाप पुजता, वह राष्ट्र टूट जाता है
अत्याचार को नमन करने वाला दुख पाता है।

अंधलोक में अंधे भटक रहे अनजाने।
अपने और पराए को कैसे पहचाने?
हार गया मीदास देखता आँखें फाड़े
भस्मासुर कर अट्टहास उन्मुक्त दहाड़े।

32. अब शरीर छल करने लगा है

अब अपना शरीर भी छल करने लगा है
बहुतों ने ठगा, अब इसने ठगा है।
किसी ने शोध के नाम पर ठगा
किसी ने शुभ अक्षरधाम पर ठगा।
किसी ने मंदिर के बनाम पर ठगा
किसी ने निजता-विराम पर ठगा।
जीवन भर ठगा गया क्योंकि पात्र था
होशियार नहीं, ढपोरशंख मात्र था।
ठगने वालों ने मुझे ठीक पहचाना
प्रकाशकों ने लूटा, दयापात्र भी माना।
मैं नियतिवादी नहीं परंतु कहता हूँ
"ठगा जाना ही नियति", ठीक ही दहता हूँ।
कभी जान, कभी अनजान ठगाता रहा
ताबड़तोड़ विषपायी गौरव पाता रहा।

किंतु अब अपना शरीर छल करने लगा
व्यथालोक में नए-नए कष्ट भरने लगा।
"जितने रोएं उतने रोग" कहावत गढी
"पोर-पोर पीड़ा" सत्यकथा से जो मढ़ी।
पैर से सिर तक व्यथाओं की कथा-
इनसे तनसागर से हलाहल ही मथा।
पंजों में मरोड़ कभी पिंडलियों का 'कटान'
जानुओं में जानलेवा दर्द की उठान।

जाँघों में कभी-कभी खुजली, कटि में पीड़ा
पीठ में कभी खुजली, कभी ज्वलन की क्रीड़ा।
कंठ कभी दाएं, कभी बाएं दुखाता है
कभी सिर का कसाव प्राण को सुखाता है।
यह खाओ वह कष्ट, वह खाओ यह कष्ट
कम खाओ दुर्बलता, अधिक से निद्रा नष्ट।
चर्मरोग बुढ़ापे को अधिक चाहते
उनके बहुरूप अंग-अंग को दाहते।
शल्यक्रिया व्यय पर भी नेत्र व्यंग्य करते हैं
कान भी कभी-कभी चेतावनी भरते हैं।
घ्राण भी कभी-कभार भ्रम उपजाता है
सारी इंद्रियों का कष्ट से नाता है।

काले केश तन-मन की कालिमा के प्रतीक
भ्रम उपजाते, मिटा देते संवेदन-लीक।
मेरा तन बूढ़ा, मन बूढ़ा, जीवन बूढ़ा
किंतु काले केश षड्यंत्र-वृत्ति निगूढ़ा!
बूढ़े नेत्रों का एक लाभ-पक्ष : दो दिखते!
आकार की लघुता-गुरूता अद्वय सिखते!!
नीले-हरे, पीले-नारंगी रंग एक-से
'अनेकता में एकता' की सुदृढ़ टेक-से!
लेकिन बुढ़ापा एक अभिशाप मात्र नहीं-
अनुभव-संपन्नता उसकी-सी क्या कहीं?
बुढ़ापा इधर-उधर नहीं भटकाता है-
पीड़ा-अतिरेक पर कलम पकड़ाता है!

33. आह, पराजय-अंधकार में विजय-दीप किस भाँति जलाँऊ?

राम क़ैद हैं अपने घर में
दिपावली स्वतंत्र कहाँ है?
मथुरा में हैं क़ैद कृष्ण भी
आत्मवाद का मंत्र कहाँ है?
विश्वनाथ काशी में वंदी-
पुलिस, तलाशी में क्या गाऊँ?
आह, पराजय-अंधकार में
विजयदीप किस भाँति जलाऊँ?

मस्तक में जल रहीं चिताएं
अमरनाथ-यात्री भक्तों की
जलें रेल में नर-नारी-शिशु-
नियति राम के अनुरक्तों की!
हिंदू श्वानों-सदृश लड़ रहे-
कैसे समय सृजन का पाऊँ?
आह, पराजय-अंधकार में
विजयदीप किस भाँति जलाऊँ?

सारे धर्मों के अनुयायी
अटल आस्था का सुख पाते

केवल हिंदू आपस में ही
गुँथते, लड़ते और गरियाते।
विजातीय-धनदास समादृत-
मैं धनक्रीत कीट बन जाऊँ?
आह, पराजय-अंधकार में
विजयदीप किस भाँति जलाऊँ?

जाति-पाँति औ ऊँच-नीच के
कीट-जगत में हम मदमाते
लक्ष्मी की माया विडंबना
गृहलक्ष्मी हम स्वयं जलाते!
सिर पर लटका खड्ग किंतु हठ-
अपनों को ही मार गिराऊ!
आह, पराजय-अंधकार मे
विजयदीप किस भाँति जलाऊँ?

34. परिचय

हाइकुकार
नहीं, हाइकुप्रेमी-
है मनुहार।

सूत्र की शैली
गागर में सागर-
प्राण में फैली।

एक का नहीं
साहित्यिक आवारा
हूँ सभी कहीं।

बना है मंत्र
"घर का न घाट का"
किंतु स्वतंत्र।

माटी के धागे
अनुराग में पागे
भावना जागे।

35. पता नहीं क्या होता जीवन?

बचपन केवल आज जानता
केवल वर्तमान को यौवन
बेसुध-व्यस्त प्रौढ़ता होती
और अतीत बुढ़ापे का धन।

बच्चे सदा खेलते जीवन
युवक जानते केवल जीना
प्रौढ़ बिताते हैं जीवन को
ढोते वृद्ध दहलता सीना।

सदा स्वर्णयुग है अतीत में
भले रहा हो वह माटी का
वही चमकता है सुमेरू बन
भले रहा निचली घाटी का।

पत्नी केवल पत्नी होती
पति भी बस केवल पति होता
आधा और अधूरा जो भी
यादों की दुनिया में खोता।

तकरारों से दरकारों तक
दिवस, मास औ वर्ष बीतते

कितने सत्य लगे थे सारे
किंतु समय के साथ रीतते।

कहीं नचाता काम किसी को
कहीं किसी को क्रोध नचाता
कहीं नचाता मोह बना नट
कहीं अहं ज्वाला धधकाता।

सफल-विफल ऊपर के चकमे
अंदर जरा-जीर्णता का सच
कहना, सुनना, मन बहलाना
कोई नहीं सका सच से बच।

जीवन बस अभिशाप नहीं है
जीवन बस वरदान नहीं है
मात्र अमिय-आचमन नहीं यह
और गरल का पान नहीं है।

पता नहीं क्या होता जीवन?
हम-सब बस जीते जाते हैं!
जीवन सत्य? असत्य? उभय? क्या?
सभी प्रश्न बस भरमाते हैं।

36. कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

रोम-रोम से हारा है तन
विधवा की साँसों-सा है मन
जला मोम बेचारा जीवन
मैं हूँ प्रतिक्षण-प्रतिपल हारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

सत्य-दंड की शाश्वत गाथा
पर यश गरिमा पावन पाथा
अब प्रचार-युग में जड़ माथा
क्योंकि गया बहुविधि धिक्कारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

जिन्हों-जिन्हों ने राष्ट्र गिराया
जिन्हों-जिन्हों ने देश घिराया
जिन्हों-जिन्हों ने सुयश मिटाया
वे ही पूज्य, शेष नाकारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

तीर्थों पर है भारी पहरा
वंदीकरण राम का गहरा
न्याय-टेर पर सब जग बहरा
हिंदू को है भारत कारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

है जिहाद सेक्यूलर बलमयी
है 'हिंदुत्व' शब्द ही क्षयी
हिंदू के घेराव में कई
उसको छोड़े है जग सारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

संस्कृति पर है पश्चिम छाया
भारतीय अस्मिता मिटाया
हम-सब ने भारतीय ढहाया
आज जगद्गुरू सबका मारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

मानवत्व का मंत्रप्रदाता
मैत्री का प्रधान उद्गाता
ललित-कलाओं का निर्माता
भारत आज स्वयं से हारा-
कैसे दीप जलाऊँ मेरा मन अँधियारा?

37. अतीत निहारा करता

अब जीवन पर जड़ता छाई अतः अतीत निहारा करता
मानव कई बार जीता है, मानव कई बार है मरता

निज को लखता ब्रह्म देखता
ब्रह्म देखता निज को लखता
इस अद्वय में डूब-डूब कर
मैं इस भवसागर को तरता
मरणांतर भवसागर मेरी
रुचि के बाहर! किंतु लहराता!
अब जीवन पर जड़ता छाई
अतः अतीत निहारा करता।

जड़ से चेतन, चेतन से जड़
यह निसर्ग की अमर कहानी
जड़ से सृजन, कला चेतन से
दोनों में ही एक रवानी
अद्वय मेरा श्वास बन गया
सुख-दुख में सबंरग विहरता
अब जीवन पर जड़ता छाई
अतः अतीत निहारा करता।

38. घर का घमंड

लामकाँ हूँ, लावारिस हूँ, खानबदोश हूँ-
ऐ अदब! तूने मुझे बेअदब बना डाला।"

ज़माना बीता जब उक्त शेर लिखा था
बस में आवासऋण हेतु जाते-जाते
छह नवंबर उन्नीससौ-नवासी को
'अपने घर' में आया, तब तक धक्के खाते
मैं, पत्नी, ज्येष्ठ-पुत्रवधू-शिशु पौत्र के
घर-संसार में तन-मन थे अघाते
क्या उपाहार, क्या आहार, कई बार
क्या पौत्रक्रीड़ा, क्या लेखनः सुधा नहाते।

पास ही कनिष्ठ पुत्र का अपना आवास
तब अकेला था, प्रायः आता-जाता
मध्यम पुत्र का अवास दूर था किंतु प्रेम
उसे भी प्रायशः खींच-खींच कर लाता
मैं शैशव से एकांत बंदी अहंलीन
लेखन से विश्राम तक व्यवधान पाता
घर का घमंड़ दिखा था हेकड़ी जमाता
क्रोध-भस्मासुर' चले जाओ' कह कल पाता।

मध्यम-कनिष्ठ पुत्रों के निजावास थे
ज्येष्ठ पुत्र की सेवाएं गुजरात में

अतः पुत्रवधू-पौत्र को वहाँ जाना था
सभी पीड़ा पाते मेरे अहं-अघात में
अब हम टुटुरू-टूँ पति-पत्नी बचे
पत्नी को ऐंठ दिखाता बात-बात में
एक बार वे मध्यम पुत्र घर चली गईं
किंतु प्रेम खींच लाया भाव अवदात में।

एकाकीपन से रक्षा हेतु दौहित्री और
दौहित्र को बुला लिया कानपुर से
बिना मुझसे पूछे अतः मैं रुष्ट हुआ
सभी ने समर्थन किया उनका एक सुर से
वे उच्च-रक्तचाप की पुरानी मरीज़
दौहित्री-दौहित्र लगते प्राण-उर-से
पर मैं अकड़ता, डाँटता, दौहित्र पर
हाथ भी चलाता, आहत करता शब्द-सुर से।

"सौ सुनार की एक लुहार की" करतीं
पत्नी सीमातीत दूरी तक चली गईं
मैं स्वयं की ही नहीं देखभाल कर पाता
क्या कर पाता दौहित्री-दौहित्र की तईं
दोनों को कानुपर भेज दिया, दौहित्र
को निज परिवार में खुशियाँ मिलीं नई
किंतु दौहित्री रोकर, हठ कर लौटी
अच्छा लगा, नातिन लगी आभामयी।

कई गृहसेवक आए-गए क्योंकि मेरा अहं
और एकाकी-रोग कौन झेल सकता है?
मैंने भी भारी भार, भारी व्यय बचाना
उचित समझा, सेवक भी सुविधा तकता है
मैं-दौहित्री दो भी ठीक रह सकते थे
पर घर का घमंड बकता, न थकता है
अतः बाईस मई दो हज़ार-दो से एक-
किंतु अब तन-मन रोता, बहकता है।

वही कक्ष, वही पाकशाला, वही छज्जे
वही स्नानगृह, वही बैठक! सब काटते!!
कहीं पत्नी, कहीं पुत्रवधू, कहीं दौहित्री
कहीं दौहित्र-पौत्र स्मृति-व्यथा बाँटते
मेरे ही भाव आज "घर का घमंड व्यर्थ-
तू कितना मूर्ख था!" कह-कह कर डाँटते
"बड़ा साहित्यकार बनता था, सब भार
समझाता!" घर को व्यंग्य-वाणों से पाटते।

"जितने रोएं उतने रोग" कहावत गढ़ी
शरीर की शरारत बढ़ती ही जाती है
परिवार-योग्य घर में अकेले रहते
स्वजन-परिजन याद बार-बार आती है
बुढ़ापा बस आना जानता, जाना नहीं
केवल मृत्यु उससे त्राण दिलाती है
'मैं' चूर-चूर, 'घर का घमंड' टूक-टूक
बस पश्चात्ताप से छाती जुड़ाती है।

39. आपे से बाहर बुढ़ापा

आपे से बाहर है क्रुद्ध बुढ़ापा भीषण
बहुत लड़ा पर अब लगता है हार गया रण।
जब वह आया स्वागत करने से कतराया
काले बालों ने भी उसको ख़ूब छकाया।
दाँतों पर आक्रमण किया तो दंतक शोभा
नेत्रों पर तो शल्यचिकित्सा पर मन लोभा।
मन को "अभी जवान"-मूर्खता से बहलाया
हुआ बुढ़ापा क्रुद्ध शिथिल कर दी सब काया।
आरंभिक आक्रमण राजयक्ष्मा[1] का झेला
किंतु बन गया तन क्रमशः रोगों का खेला।
बोल उठा मधुमेह[2], शर्करा से कतराओ
चर्मरोग[3] गरजा, खट्टे से प्राण बचाओ।
रक्त-अल्पता ने पंजों को ख़ूब मरोड़ा।
मांसपेशियों की ऐंठन ने मनबल तोड़ा।
वायुविकार हृदय-सीमा पर घात लगाए
गतिशैथिल्य डराता, कब औ कहाँ गिराए।
यह खाओ तो खुजली, वह तो नींद कट गई
उष्ण पियो बेचैनी, शीतल व्याधि कफ नई।
"मैं वार्द्धक्यजयी" जो कहता वह झूठा है
इस धरती पर काल सभी से ही रूठा है।
पर जिसने तन के प्रति न्याय किया उसका तन
ध्यान अंत तक रखता, होता है प्रसन्न मन।
मैंने, ओ साहित्य! तुझी पर तन-मन वारा
जीवन तक की चिंता नहीं; किंतु अब हारा।
हारा द्विविध किंतु प्रति अवयव बदला लेता
नन्हें-नन्हें अहं भरा जग पीड़ा देता।
आज अकेला जूझ रहा अपने जीवन से
तन टूटे पर झुकूँगा नहीं शाश्वत मन से।
सफल या विफल तेरे सारे रूप सँवारे-
स्वागत है यदि मृत्यु आ रही जीवन द्वारे!

1. 1980-81 ई०। 2. 1983 ई० से। 3. 1997 ई० से।

40. सब हैं अपने, सभी पराए

"कोई अपना नहीं, सभी पराए" झूठा
पर सच "सभी पराए जब अपना तन रूठा"।
जब निज से निज रूठा तब 'पर' क्यों हो अपना?
रोम-रोम में रोग वहाँ अपनापन सपना!
सबके अपने जीवन, व्यस्त सभी हैं कहते-
तब अपनेपन का रोना क्या जीवन दहते?
दहता जीवन, दहने दो; इसको दहना है
"जो संवेदन देता वह अपना" कहना है।
उपालंभ यदि तो निज से ही उत्तम होता
दुनिया का रोना अवशिष्ट शांति भी खोता।
समय अजेय अतः जैसा भी आए-स्वागत!
सुख औ दुख अनिवार्य अतः "आदर अभ्यागत"!!
सफल? विफल? यह? सब साथ चले जाएंगे-
अतः राम के मंत्र-जाप से सुख पाएंगे!

41. हाइकु-पत्र

चला चली की
टलाटली का दौर-
छलाछली है

धुर अकेला
जीवन की त्रासदी-
अवलोकन!

संभावना है
अंतिम पत्र यह
सहेज रखे!

42. आस्था हिलती लगती

"जितने रोए उतने रोग" कहावत गढ़ते
नहीं कल्पना की थी, मुझ पर यही घटेगा
कब सोचा था रजनी नहीं कटेगी काटे
कब सोचा था दिवस करवटें बदल कटेगा?

आज पैर के पंजों में जड़ता का डेरा
पिंडली, धुटने, जाघें, कमर पीर के डेरे
उदर-समस्या, वामपक्ष में ज्वलनशीलता
वाम भुजा अवसन्न, उदर में पीड़ा फेरे।

मस्तक पर इन सारी पीड़ाओं की चिंता
बड़े चिकित्सक, बड़ी लूट, परिणाम निराशा
जीवन लगता बोझ, रीतती जिजीविषा है
शेष नहीं कुछ करने-कहने की अभिलाषा।

मैं बौद्धिक अद्वैतवाद दर्शन विश्वासी
आस्था और अनास्था के झूले में झूला
आज सरस्वती को बतलाया, हिलती आस्था
रोम-रोम लगता है बेबस, लँगड़ा, लूला।

यदि जीवन की सारी व्यथा स्वयं ही ढोनी
तो आस्था की आवश्यकता क्यों और कैसी?
जब जीवन से मृत्यु श्रेष्ठतर और श्रेयस्कर
लगती तब आस्था की हो ऐसी की तैसी।

सरस्वती का तैलचित्र जीवंत शांत था
किंतु देर तक घूरा तो हल्का मुसकाया
स्मित ने बतलाया जो आस्था हिल जाए
वह आस्था ही नहीं! स्वयं को क्यों झुठलाया?

स्मित का विशद अपरिमित वह उद्‌गार चुभ गया
प्राण द्वंद्व में उलझा, स्याद्वाद को माना
जन्म और जीवनयापन, रूजता, पीड़ा सब
अंग मरण के अतः व्यर्थ रोना या गाना!

43. कसाइयों और कसाईघरों में

यदि भाग्यवादी या नियतिवादी होता तो कहता
भाग्य में कसाइयों और कसाईघरों की ज़ियारत लिखी थी
या मेरी यही नियति है
किंतु मैं बौद्धिक-अद्वैतवादी हूँ
आस्तिक-नास्तिक दोनों
दोनों का आदरकर्ता
भाग्यवादी था नियतिवादी कतई नहीं।
अतः कुछ रोग, कुछ पुत्रों-दौहित्री के प्रेम के कारण
जाना पड़ा, जाना पड़ा, बार-बार जाना पड़ा।

आह, मधुमेह! तेरा यह नाम किस हृदयहीन ने रखा था?
निश्चय ही उसने तेरा मधु नहीं देखा था, मेह भी नहीं!
तेरा नाम तो विषमरू होना था।

44. दिन में जीता, रात में मरता

दिन में जीता, रात में मरता
नित जीना-मरना चलता
अब मरने की साध बड़ी है
किंतु न मरता, यह खलता।

कितनी पीड़ा! जीवन पीड़ा!
जग पीड़ा! ईश्वर पीड़ा!
दक्षिण पद आद्यंत तड़पता
वाम भुजा की खल क्रीड़ा।

मैं मर चुका, शेष बस पीड़ा
तन जा चुका, शेष औषधि है
मैं औषधियों का ढाँचा हूँ
आह, शेष क्यों अभी अवधि है!

व्यय हो चुके सहस्रों रूपए
डॉक्टर, नर्सिंग होम लुटेरे
किंतु लगाने पड़ते इनके
वधशालाओं के शत् डेरे।

मैं जीवित शव मात्र बचा हूँ
तन टूटा और सभी लुट गया
आस्था, पुनर्जन्म, सब टूटे
जर्जर जीवन, सोच पर नया!

45. अब तो लिखने पढ़ने से भी मन कतराता है

अब तो लिखने पढ़ने से भी मन कतराता है
लगता जीता नहीं; समय बस बीता जाता है।
मैं था भिक्षुक, पढ़ना-लिखना ही मेरा धन था
लिखने-पढ़ने बिना निरीह-अकिंचन पाता है।

46. मृत्युपूर्व (?) की क्षणिकाएं

(1)

मेरी बाईं हथेली पर बबूल उग आए हैं
मैं दाएं हाथ से उन्हें काटना चाहता हूँ
लेकिन उस पर बिच्छू बैठे हैं।

(2)

मैं शौचविरोध से पीड़ित हूँ
बुद्ध भी थे और छह महीने रहे
मैं छह मास की सीमा पार कर गया हूँ:
बुद्ध कितने भाग्यशाली थे!
अकबर की संग्रहिणी
नेहरू को एक सेवक कमोड पर पकड़े रहता था
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
प्रेमचंद
निराला के जलोदर...
शत-शत निदर्शन
मुझे समतावाद सिखाते हैं
बहुत याद आते हैं।

47. रोग शय्या पर

मुझको तो बस मुस्कराना है
कहाँ आना और कहाँ जाना है?
कीमती पलँग हैं कीमती गद्दे
ए-सी. है, ट्रांजिस्टर का मधुर गाना है।
अक्सर टी.वी. भी देख लेता हूँ
सुनता कि बढ़ रहा जमाना है
सेविका है, रात-दिन ध्यान रखती है
शाही आलम को मानो आना है।
खुद सवाल करता और खुद ही जवाब देता
प्रश्नोत्तर-जाल में फँसा रह जाना है।

48. दर्पण झूठ बोलता है

मैं जब कभी दर्पण देखता हूँ
या वह अनायास सामने आ खड़ा होता है
तब पूछता हूँ
तू कौन है?
मैं तू हूँ!
गलत; मैं तो औषधियों का पुलिंदा हूँ!
मैं मैं कहाँ रहा?
तब मैं तू कैसे बना?
कहते हैं, दर्पण झूठ नहीं बोलता-
पर मेरे रोगापत्तिकाल में तुम भी बोलने लगे?

49. तपेदिक-सौंदर्य

राजयक्ष्मा! तपेदिक राजरोग है-
राजाओं, चिंतकों, कवियों का होता 'था'...
प्राचीन काल में रोगी को बकरी के साथ
वन भेज देते थे:
पर्यावरण, वातावरण, कंद-मूल-फल, दुग्ध
बचा तो वापस अन्यथा चला जाता!
तन कृश होता और पीत विलक्षण आभा
रोगी को बहुत सुंदर बना देती है।

मुझे 1980-81 ईसवी में
राजयक्ष्मा हुआ किंतु आरंभ में ज्ञान
योग्यतम चिकित्सक तथा असाधारण पत्नी
के कारण कोई भारी व्यवधान नहीं पड़ा
कृशांग, 'पीतमासंपन' रूप-रंग!
बस में भारी भीड़, मैं कोने में-
अचानक एक असाधारण सुंदरी तरूणी
छात्राः लाल-सा वर्ण, विलक्षण फ़ेस-कट्स
से आंखे मिली और वह अभिभूत हो गई
एकदम समीप आई, अधर-ओष्ठ खुले हुए!
मैं इंजेक्शन नित्य लगवाता, दवा लेता
बढ़िया भोजन करता, खतरे से बाहर था
फिर भी, डर लगा-संक्रमण न हो जाए!
उस दिन मैं ने कामना का रूपक देखाः
अहा! वे क्षण कितने अक्षुण्ण, पावन थे!
(आह, तपेदिक कितना विषम रोग होता है!)

50 ये ही 'अतिम शब्द' हों!

चलाचली की बात है टलाटली के बीच।
थोड़े अक्षर जो बचे, रहा अश्रुजल सींच।।
जाता हूँ, साहित्य! बस, यही एक संतोष।
तन-मन-धन अर्पित किया, राष्ट्रव्यथा-आक्रोश।।
मेरी निष्ठा को मिली कठिन उपेक्षा क्रूर।
किंतु सदा तन्मय रहा अक्षर से भरपूर।।

51. हाल-बेहाल

'डाक' ही 'खाना'!
बहुत डराता है-
डाक का डाका!!

पुलिस-थाना
अपराधों का अड्डा!
कहाँ ठिकाना?

बिजली गिरी-
बिजली का दफ़्तर
अँधेरा भरा!

रेल की यात्रा
लाठीवाले की भैंस-
धन्य बिहार!

नए मुग़ल
नया मुग़ल-काल
हाल-बेहाल।

52. समाचारपत्र में पढ़ा, फागुन आया!

समाचारपत्र में पढ़ा, फागुन आया
तकता इधर, तकता उधर और मन भर माया।
कुछ दिन हुए बिखरी-सी, छितरी-सी बदरिया
आई, स्वेदकणों को देखा, हुलसा हिया
थकी थी, बिरमी कुछ बिरछों के छोरों पर
तनिक देर हर्ष भरा अँखियों की कोरों पर।
फिर, वही धुआँ-धूल या 'विकास' का शासन
महानगर महादिवस-महारात्रि भीषण स्वन
आज पढ़ा (सुना नहीं; गुना नहीं), फागुन है—
कहीं नहीं-फागुनी-रंगत, फागुनी-धुन है!
इकताला, (दुताला, तिताला, दहंकवा)
फाग नहीं (फाग बिना फागुन क्या?), न वह हवा!
होली भी आती है, 'हो ली'; बस, जाती है
मन को नहीं, उमगाती, हिया न हुलसाती है।

फिर भी, आमों में बौर, कोयल भी कूकती
ध्यान देने पर कुछ समझाती, न चूकती!
जीवन का चिरंतन प्रवाह न रुकता कभी
एक साथ जी नहीं सकते हैं काल सभी।

53. सेक्युलरइज़्म

धन्य सेक्युलरइज़्म महान्-
करो राष्ट्र, संस्कृति बलिदान!
वेद रहे चरवाहा-गीत
है कुरआन-शरीफ पुनीत।
हैं पुराण गप्पों के कोष
पर हदीस देते परितोष।
राम, कृष्ण, पांडव आख्यान
करो मार्क्स-लेनिन-रसपान।
कालिदास-बूर्ज़्वा कामांध
सामंती-तुलसी धर्मान्ध।
राष्ट्रकाव्य गुंडों का गान-
धन्य सेक्यूलरइज़्म महान्!

"आर्य बोल्गा-तट के" ठीक
शून्य चीन का, नाटक ग्रीक।
मूर्तिकला भी ग्रीक-प्रतीक
"चित्रकल इस्लामी" ठीक।
योरप के दर्शन, सिद्धांत
भारत तो था चिर-विभ्रांत।
तीन-सहस्र वर्ष इतिहास
पुराचीनता बस बकवास।
व्यर्थ स्वर्णयुग का वाग्जाल
यह तो है बूर्ज़्वाजी चाल।

स्वर्ण (सोनिआ)-युग आह्वान-
धन्य सेक्यूलरइज़म महान्!

गांधी स्वतंत्रता के दाता
नेहरू थे भारत-निर्माता।
गांधी ने यह राष्ट्र बनाया
नेहरू ने इसको चमकाया।
रहे शिवाजी विकट लुटेरे
सावरकर अंग्रेज़ी चेरे।
तिलक प्रतिक्रियावादी व्यर्थ
मालवीय ने किया अनर्थ।
हेडगेवार रहे संकीर्ण
हिंदू किए देश को जीर्ण।
"हो हिंदुत्व-नाश" की तान-
धन्य सेक्युलरइज़म महान्!

54. सम्राज्ञी सोनिआ महान्!

सम्राज्ञी सोनिआ महान्-
गूँजे नित शत चारण-गान।
सभी काँग्रेसी चरणों पर
कॉम्युनिस्ट गद्गद सेवा कर।
हैं समाजवादी द्विविधारत
जातिवादियों का ढुलमूल मत।
लालू बने हुए हैं भाट
जोकर का भी रचते ठाट।
राहुल हैं प्यारे युवराज
रहीं प्रियंका उनको साज।
बहनोई रॉबर्ट सुजान
सम्राज्ञी सोनिआ महान्।

बातें सभी सेक्यूलर-साजः
भारत में ईसाई-राज!
"नागालैण्ड फ़ॉर क्राइस्ट"
मिज़ोराम आज़ाद-विशिष्ट।
मेघालय भी है ईसाई
तीन ज़िलों की 'राज्य'-सजाई।
साम्राज्ञी चरणों की छाया
आंध्र-मुख्यमंत्री[1] की माया!
गोआ, केरल या कि उड़ीसा
हुए सभी के शासक ईसा!
ऑस्कर, अल्वा का है मान
सम्राज्ञी सोनिआ महान्।

पावन पोप 'वैटिकन'-राज!
राष्ट्रपति-भवन गए विराज!
पति राजीव-सहित घुटनों पर
बैठी पूजा की आस्था भर।
राजनीति मंदिर ले जाती

गुरूद्वारों में भी पुजवाती।
गुप्तप्राय ईसाई - छाया
किंतु प्रकट आस्था की छाया।
सबसे प्यारा अपना धर्म
करें सोनिआ ईसा-कर्म।
किंतु नहीं 'हिंदूत्व' समाज
सम्राज्ञी सोनिआ महान्।

मुसलमान-भाई की चाँदी
आबादी की बढ़ती आधी।
अमर शरीयत मात्र प्रमाण
करे क़यामत से वह त्राण।
हैं विशेष-अधिकार अनेक
हज तक लिए 'सेक्युलर'-टेक।
हैं गुलाम आज़ाद समीप
अहमद, मुफ़्ती जैसे दीप।
चरणावनत मुलायम, लालू
उर्दू पर धनवर्षा चालू।
खुली हुई 'अधिकार'-दुकान
सम्राज्ञी सोनिआ महान्।

अपनी ढपली अपना राग-
नहीं विरोधी सकते जाग!
वाणी एक न नेता एक
सब करते अपना अभिषेक।
आज एक कल दूजी बात
गिरगिट भी खा जाता मात।
त्याग-शिथिल था इनका शासन
छू न सके ये जनता का मन।
दिशाहीन जनता का वोट
इन पर ही पड़नी थी चोट।
इससे बढ़ी काँग्रेस-शान
सम्राज्ञी सोनिआ महान्।

1. राजशेखर रेड्डी ईसाई हैं।

55. भारत-चालीसा

धन्य देश भारत सदा 'भा'-'रत' जग-विख्यात।
भरत सूर्य या विष्णु की भूमि रूप अवदात।।
सूर्य-देश है सूर्य के वंशजात का देश।
चंद्रवंश के भरत से सजा रहा परिवेश।।
ऋषभदेव-सुत भरत से भी जो है संपृक्त।
सूर्यवंश के राम का देश भरत-त्रय तृप्त।।
यह है आर्यावर्त और ब्रह्मवर्त अक्लेश।
मानवता-प्रेरक सदा, नहीं घृणा का लेश।।
हिंदुस्तान औ इंडिआ जैसे इसके नाम।
विश्व-व्याप्ति में अप्रतिम, अनुपम और प्रकाश।।

केवल एक देश पर 'ओशन'।
इतिहासों में अनुपम पावन।
जग में सदा हिमालय जाना।
भारत-नामित ही पहचाना।।
रेड-इंडिअन और इंडाना।
वेस्टिंडीज महान् प्रमाणा।।
इंडोनेसिआ बृहत्तर-भारत।
हैं सिओल, से गाँव शिवनिरत।।
क्वालालामपुर औ सिंगापुर।
भारत के ही फूटे अंकुर।।
चीनी-जापानी रामायण।

कोटि-कोटि करते पारायण।।
इंडोनेसिआ राम की लीला।
स्वयं करे, करता गतिशीला।।
मलेशिया में व्याप्त रामरस।
'हज़रत राम' व्याप्त पावन यश।।
मिस्र रामशशि के अवशेषा।
रामकथामय था यह देशा।।
रामदान है पावन मासा।
है अहराम वस्त्र-विश्वासा।।
रामअल्लाह, रामथा कहते।
राम-प्रभाव आज भी वहते।।
रॉम्स (रोम), 'रावना' कहानी।
इटली पर प्रभाव अवदानी।।
सेटा एक पहाड़ी पावन।
लिंग वैटिकन में ही भावन।।
अर्जेन्टीना और मेक्सिको।
पेरू कहते राम पर टिको।।
खेल 'पचोली' है 'पच्चीसी'।
'मय'-सभ्यता, आज भी दीखी।।
'अय्यर'-शासन के अवशेषा।
कहते परिचित थे ये देशा।।
आर्यक, आर्यायन की गाथा।
आयर्लैण्ड झुकाता माथा।
मुहेंजादड़ो वृषभ सुहाता।
स्वस्तिक रहा हड़प्पा-भाता।।
पाँच हज़ार साल चलचित्रा।
केवल भारत जो जग-मित्रा।।
किंतु आज दुर्दशा भयंकर।
नेता देशद्रोहरत तस्कर।।
कई मूढ़ इतिहास नकारें।
पा विदेश-धन द्रोह प्रचारें।
बेच आत्मा, बेचें भारत।
हैं इतिहासघात में ही रत।।
चिंता नहीं बढ़ी आबादी।

उससे ही सारी बर्बादी।।
पशुलज्जितकर संतति बढ़ती।
चिंता कभी न सर पर-चढ़ती।।
है अभाव का यह ही कारण।
इसका करते नहीं निवारण।।
घुसपैठी से आँखें मूँदे।
पर आवास-समस्या खूँदे।।

पूँजीपतियों के बस दासा।
जनता को बस देते झाँसा।।

कोई साँपनाथ तो कोई।
नागनाथ! मानवता रोई।।
देश भुजंगनाथ की लीला।
उरगनाथ है लाल औ पीला।।
हैं 'वंदेमातरम्'-विरोधी।
गौरवत-गाथा पर भी क्रोधी।।
चित्रित करते भारत गारत।
हीनभावरत, भूखा, आरत।।
कितनों की ही पाक-परस्ती।
मिटा रही भारत की हस्ती।।
चीन-दास निज मद में माते।
देशद्रोह-भाषा में गाते।।
कितनों का ही इष्ट कमीना।
भारत-माता लखते दीना।।
संस्कृतिघात बनाकर रोजी।
दुर्बलताओं के ही खोजी।।
हैं साहित्यघात में डूबे।
राष्ट्र-अस्मिता से हैं ऊबे।।
थे आतंकवादरत भारत।
के शहीद-कहते बेगैरत।।
ये जीएं, भारत मृत होगा।
इन्हें मिटा भारत-हित होगा।।
राजनीति में इन्हें पछाड़ो।

गदहों पर बन शेर दहाड़ो।।
परम पुण्य ऐसों का मर्दन।
इनकी सदा झुकाओ गर्दन।।

आते रहते थे जहाँ जग-जीविका विहीन।
भाग रहे हैं वहाँ से लोग बने अति दीन।।
जिसे जगद्गुरु-रूप में प्राप्त रहा सम्मान।
यत्र-तत्र-सर्वत्र हैं अपमानी अम्लान।।
प्रथम ग्रंथ 'श्रुति'-रूप में जग को दाता-धन्य!
अंकगणित-जन्मस्थली, औषधिदान-अनन्य!!
अद्वय-योग-प्रदानकर, आत्मवाद का क्रोड़।
सकता अब भी विश्व को उदात्तता से जोड़।।
राम-कृष्ण का कठिन पथ ही वरेण्य इतिहास।
शक्ति और बलिदान से लौटेगा उल्लास।।

56. द्विपद-चालीसा

एक अरब के देश में मानव एक करोड़।
शेष द्विपद जो रहे हैं मानव-कंठ मरोड़।।
बस हो या हो रेल या कोई वाहन, टाँग।
फैला कर ही बैठते, करते बल का स्वाँग।।
खड़े हुए छीकें तथा खाँसें बिना विचार।
"इससे फैलें रोग" यदि कहो, करें तकरार।।
सार्वजनिक वाहन डटे धूम्रपान उन्मुक्त।।
जूता तगड़ा देखकर होते नम तत्काल।
जैसे डंडा देखकर गदहा सरपट चाल।।

दफ्तर में क्यू लोग लगाए।
दूर-दूर से बूढ़े आए।।
बालक, वृद्धा, सभी खड़े हैं।
क्लर्क किंतु रेस्ट्राँ अड़े हैं।।
पापालय अथवा न्यायालय।
न्याय नहीं चाहे जी वनक्षम।।
थाना हत्यारों का अड्डा।
अपराधों से गड्डमगड्डा।।
संवेदनविहीनता छाई।
पर उत्कोच सर्वफलदोषी।।
संवेदनविहीन जो होता।
द्विपद, न मानव, जीवन ढोता।।
जो निज-जन का शोषण करता।

यशविहीन अपशब्दित मरता।।
राष्ट्रप्रेम जनता की सेवा।
कर्त्तव्यों का बल ही खेवा।।
मत्स्य-न्याय में कौन सुरक्षित।
सब लूटें! रक्षित किसका हित?
अतः ध्येयमय सेवा इच्छित?
सबल राष्ट्र सर्वोच्च अभीप्सित।।
जइसन गदहा तइसन घासा।
नेता पर अटूट विश्वास।।
धन्य गांधी जगविख्याता।
खंडित भारत! जग लतियाता।।
धन्य नेहरू भारी नामा।
भारत भ्रष्टाचार-कुधामा।।

धनि विषनाथ 'इक्वैलिटी' गायक।
जातिवाद-हिंसा के नायक।।
धन्य राव अतिविद्याधारी।
बहुभाषाविद् भ्रष्टाचारी।।
धनि गुजराल कॉम्युनिस्ट-सेवक।
पंजाबीयत-उर्दू-भेवक।।
धन्य मुलायम पाकपरस्ती।
यादववादी जिनकी हस्ती।।
भ्रष्टाचार धन्य पा लालू।
जनतासेवा खरस्वर चालू।
धनि जयललिता विजयिनि देवी।
परम भ्रष्ट पर लाखों सेवी।।
धन्य ज्योति वसु चिपके गद्दी।
व्याप रहा है यश चौहदी।।
हिंदू धन्य फूट पर गौरव।
राष्ट्र बनाए भीषण रौरव।।
छुवाछुत को ना तज पाए।
मृतसुत बंदरिया चिपकाए।।
वरपक्षीय श्रेष्ठता ताए।
वधूदाह नवप्रथा चलाए।।

मुस्लिम धन्य शरीयत-पायक।
पाकिस्तान प्रशंसा-गायक।।
हैं 'वंदेमातरम्'-विरोधी।
'देशभक्ति' पर भारी क्रोधी।।
वैसे, संविधान की ढपली।
किंतु शरीयत दंगा चपली।।
पाकिस्तान हित सदा साधें।
पापिस्तान! किंतु अवराधें!!

आएं मुस्लिम बांग्लादेशी!
स्वागत! आओ कांग्लादेशी!!
उर्दू-राजनीति पर रीझे।
हिंदी पर सदैव ही खीझे।।
सबसे अधिक धन्य ईसाई।
त्रय-जनपद त्रय-राज्य बनाई।।
धनि सोनिआ, उषा नारायण।
धन्य संगमा, ख्रीष्टपरायण।।
मिशनरीज़ बाहर से आएं।
अस्पताल औ स्कूल चलाएं।।
'मदर' टेरेसा का धर्मान्तर।
केवल हिंदू-सीमित! जयकर!!
अरबों रुपए का है खेला।
सी.आई.ए. रेलमपेला!!
राष्ट्रवित्त त्रयराज्य प्रभोगी।
ऊपर से 'सेक्यूलर'-बोगी!!
प्रबल पंचमांगी-स्वर छेड़ें।
युद्धविराम'-द्वार भी भेड़ें।।
धनि सिख धनी, और-भी पाते।
नई समस्याएं उपजाते।।
माफ़ पचासी-अरब कराए।
एक सीट! गुजराल लुभाए!!
एक अरब की अटल घोषणा।
पंथ-त्रयशती प्रबल पोषणा।।

"पूर्ण सेक्युलर मैं" का गौरव।
इतने पर भी रहते भैरव।।

"खाओ, पीओ औ मरो" भारतीय का मंत्र।
जनसंख्या-विस्फोट को सुलझाएगा तंत्र।।
व्यर्थ प्रदूषण-चिंतना, भ्रष्टाचार-विरोध।
"सब चलता..."दर्शन बना, नहीं समस्या-क्रोध।।
झुग्गी डालो सब कहीं, नेता-क्षेत्र बचाय।
तस्कर-चरण पखार लो! बाकी जनता गाय!!
बीड़ी, हुक्का, चिलम में गुटका जोड़ो-नव्य!
पी शराब पत्नी दलो! देश बनेगा भव्य!!
नेता का कर्तव्य बस एक : तुष्ट सब लोग।
बस, इससे ही चलेगा उनका गद्दी-भोग।।

57. हिंदू-चालीसा।

'लतमरूवा' के रूप में हिंदू जग कुख्यात।
उसके तलवे चूमता जिसकी खाता लात।।
सी.आई.ए., मिशनरी और चीन-एजेंट।
आई.एस.आई. को करे अंदर-बाहर 'डेंट'।।
प्रबल कैथलिक सोनिआ और ज्योति वसु घात
सदा मुलायम कंठ से निकले पाकी-बात।।
लालू यादव जाति के पायक, मुस्लिम-दास।
हिंदू-गदहों को खिला रहे 'सेक्युलर'-घास।।
ख़त्म एकता कर गए धूमकेतु विषनाथ।
जाति-जहर-म्रियमाण है हिंदू पूर्ण-अनाथ।।

जिसने मुस्लिम-हमले झेले।
देखे मिशनरियों के खेले।।
जज़िया, अस्पताल, विद्यालय।
कर न सके थे हिंदू का क्षय।।
चिर-अजेय हिंदू अब ढीला!
आह, मिट रहा रूप सजीला!!
दाहिर औ हरपाल को भूला।
पश्चिम के झूले में झूला।।
साँगा औ हेमू को भूला।
धर्मरहित धन पाकर फूला।।
पाखंड़ी - नेतादल - लूटा।
आज दीखता बेहद टूटा।।

बौद्ध, मुसलमाँ औ ईसाई।
करते जाते नाश, पिटाई।।
लंका में बौद्धों ने मारा।
तो कश्मीर बना हत्यारा।।
करते ईसाई धर्मान्तर।
टेरेसाओं का पर आदर।।
बौद्ध, मुसलमाँ, सिख, ईसाई।
सबने ही की विकट पिटाई!!
हिंदू की हत्या 'सेक्यूलर'!
'कम्युनल' यदि देता आहें भर!!
ईसाई करते 'कन्वर्शन'।
बाहर से पा अरबों का धन।।
पनपा 'कॉन्वेन्टों' का धंधा।
डाल अस्पतालों का फंदा।।
यदि हिंदू ने 'ची' भी बोला।
तो हो जाता भीषण रोला।।

हिंदू-नेता धर्म बेचते।
संस्कृति-भाषा-वर्ग बेचते।।
बने देशद्रोही अब नायक।
संस्कृतिघाती संस्कृतिपायक।।
फ़िल्में उर्दू को फैलातीं।
अल्ला, रब के मंत्र सुनाती।।
खुदा भरा औ राम मिट गए!
गाँवों तक मिल्लती रंग नए!!
कम्युनिस्टों ने देशद्रोह कर।
साहित्यों को किया हीनतर।।
बाँग्लादेशी, पाकिस्तानी।
घुस आते, करते मनमानी।।
करें मुलायम-जैसे रक्षा।
मातृभूमि कर विदीर्णवक्षा।।
हिंदु दुश्मन से ना टूटा।
किंतु आज आपस में फूटा।।
सौ हिंदू मर जाएं-कुछ ना!

दो मुस्लिम यदि मरें-सूचना!!
पाकर पेट्रो-डॉलर गाते।
हिंदू हिंदू को गरियाते।
सी.आई.ए. से जो पाते धन।
हिंदूघात बना उनका फ़न।।
जो चीनी-एजेन्ट सयाने।
साम्यवाद के गाते गाने।।
'हिंदू' शब्द सुना और भड़के।
मुस्लिम-पक्ष साँझ औ तड़के।।

सदा 'अल्पसंख्यक'-अतिहित-रत।
'हिंदू अत्याचारी!' चिर-मत।।
राम, कृष्ण, तुलसी से घातें।
ईसा, बुद्ध, मोहम्मद बातें।
शिक्षा पर छुटभैये छाए।
साम्यवाद-डफली फटकाए।।
ये साहित्य 'वाद' में बाँधें।।
संस्कृति पर भीषण शर साँधें।।
कर साहित्यघात धन पाएं।
'प्रगतिशील' तमग़ा लटकाएं।।
बिड़ला, साहू-जैन औ मोदी।
इनके चरण बनाए गोदी।।
बस, धन-ख्याति, न देश न धर्मा।
पूँजीपति हैं भीषणकर्मा।।
यू.एस.ए. ईसाई-नेता।
बनी सोनिआ देश-विजेता।।
बिड़ला पड़ा चरण पर लोटे।
अन्य चलाते अपने गोटे।
नवबौद्धों को जापानी धन।
अच्छा लगता, काट रहे मन।।
मुस्लिम 'दारुलहरब' सुधारें।
तन-मन पाकिस्तान पे वारें।।
निष्ठामय हिंदू नतशिर है।
लुटता जाता धर्म-अचिर है।

संस्कृति पर पश्चिम की लातें।
हिंदी पर उर्दू की घातें।।

किया ख्याति-आखेट से भारत को बर्बाद।
लतमरूवे हिंदू किया करते उनकी याद।।
लगा-लगा पद-ठोकरें तोड़ गए जो धर्म।
उनके प्रति आदर बना लतमरुवों का कर्म।।
हीनभाववश पश्चिमी विकृतियों की ओढ़।
छिपा रहे म्रियमाणता का हम नाशक कोढ़।।
जो हिंदू सहते रहे संस्कृतिरक्षा कष्ट।
वही कर रहे व्यस्त हो आज अस्मिता नष्ट।।
नाम, रूप, भाषा तथा संस्कृति सब विपरीत।
बड़े गर्व से बन रहे पश्चिमदास विक्रीत।।

58. समस्या-चालीसा

नहीं समस्याएं अगर तो जीवन है व्यर्थ।
अतः बढ़ाना है इन्हें तज आलस्य-अमर्ष।।
भारत का प्रत्येक नर-नारी है 'जीवंत'!
एक समस्या स्वयं में! एक अरब! विकसंत!!
न हों समस्याएं अगर तो करते निर्माण!
तदनंतर रोते विकटः कोई कर दे त्राण!!
विकसित जग में समस्या अन्य ग्रहों की खोज!
भारतीय की समस्याः दो गृद्धों को भोज!!
हिंदू 'वंदेमातरम्'-रक्षण में सन्नद्ध!
मुसलमान 'दारुलहरब' में 'जिहाद' से बद्ध।।

'सरस्वती-वंदना' समस्या।
'सेक्यूलर'-छंदना समस्या।।
"ख़तरे में इस्लाम" समस्या।
"चार विवाह ललाम" समस्या!!
"जनसंख्या-विस्फोट' समस्या!
"इसको रक्खो ओट! समस्या!!
'पर्यावरण-विकार' समस्या!
"इससे सब लाचार!" समस्या!!
"गाँव उपेक्षित रहा!" समस्या।
"नागर गौरव ढहा!" समस्या।।
"पर्वत टाट सपाट" समस्या।
"नदियाँ बारहबाट' समस्या।।

"जातिवाद का नाद" समस्या।
"राष्ट्र हुआ बर्बाद" समस्या।।
"नेता पर व्ययभार" समस्या।
"नेतागण-उपचार' समस्या।।
'नेता देशी-भ्रमण' समस्या।
'विशद विदेशी-रमण' समस्या।।
'नेता-रक्षा' विकट समस्या।।
'जनता-रक्षा' चिकट समस्या।।
रक्षापात्र सोनिआ रानी।
स-पति प्रियंका शोभाखानी।।
रक्षापात्र दुलारे राहुल।
रक्षापात्र सकल नेहरू-कुल।।
उचित मनन-व्यय शोभ प्रियंका।
भवन सुरक्षित जैसे लंका।।

शत-शत नेता जनता-हारे।
पर सत्ता-आवास विहारे।।
विश्वनाथ की 'ज्ञापित' निष्ठा।
"वायुयान-धन गड़प" प्रतिष्ठा।।
चंदू बहुत भूमि हथियाए।
फिर भी, गद्दी आँख गड़ाए।।
लालू लाल गाल अति चिकने।
दलित-मसीहा! जेल अनमने!!
नाम मुलायम पर हत्यारे!
विकल अयोध्या सदा पुकारे!!
काल मुजफ्फ़रनगर न भूला।
पर पेट्रो-डॉलर का झूला।।
मृत्युदण्ड के जो अधिकारी
वही प्रभावी! हा, लाचारी!!
वृद्ध ज्योति वसु पके गद्दी।
हुई केसरी-हालत भद्दी।।
गंगा मैली, यमुना मैली।
लज्जा क्या यदि मैली शैली।।
टैक्सचोर अभिनेता मैला।

गदहा-पूजा! भारी थैला!!
टैक्सचोर अभिनेत्री मैली।
अंग-प्रदर्शन भरती थैली।।
तस्कर राजा, तस्कर रानी।
फ़िल्म बनाएं, हैं लासानी।।
तस्कर-धन या पेट्रो-डॉलर!
फ़िल्मों में देता उर्दू भर।।

अल्ला, रब औ खुदा भराने।
राम और भगवान् पराने।।
'धोका', 'झूट', झूक का फ़ैशन।
'धोखा', झूठ', 'भूख' हैं हृतधन
संस्कृति-संस्कृत-हिंदी-हत्या।
फ़िल्में हैं अब ताण्डवनृत्या।।
देश बिकाऊ, लोग बिकाऊ
भोग बिकाऊ योग बिकाऊ
है सारा इतिहास बिकाऊ।
रूबल, डॉलर, पौण्ड टिकाऊ।।
है हिंदी-साहित्य बिकाऊ।
गुप्त, प्रसाद, पंत, सब झाऊ।।
तुलसी हैं समाज के तोड़क।
बस केवल कबीर हैं जोड़क।।
है आचार्य द्विवेदी संस्कृत!
धन्य करे जो वाङ्मय विकृत!!
भारत को जी भर गरियावो!
'सेक्यूलर' बन मेवा खाओ!!
आर्य विदेशी, द्रविड़ विदेशी:
जाट, जैन विभिन्न-परिवेशी!!
है इतिहास समस्या भारी।
है साहित्य भरे बदकारी।।
बदलों भारत! पश्चिम ढालो!
इस प्रकार, 'समता' को पालो!!
राष्ट्रवाद को जड़ से खोदो!
परकीयता भाल पर गोदो!!

भारत-भारतीयता भीषण!
शत्रु! ढ़ो, जीतो, इनसे रण!!

भारत! बदलो नाम यह, शब्द 'इंडिआ' धन्य!
हिंदी-ठोकर मार दो! 'इंग्लिश' विश्व-अनन्य!!
पश्चिम वालों ने 'रचा' जो भारत-इतिहास।
वही अतर्कित सत्य है, वह विज्ञान-प्रकाश!!
वेद, शास्त्र, सब हानिकर, भीषण ज़हर पुराण!
धम्मपदम् पढ़ते रहो बाइबिल और कुरान!!
ये 'वैज्ञानिक' ग्रंथ हैं मानवसमतापूर्ण!
यही 'सेक्यूलर'! कॉम्युनल' को कर डालो चूर्ण!!
"धनि अमेरिका, रूस और चीन" रटो यह मंत्र!
"पाकिस्तान महान् है जिसका पावन तंत्र!"

59. काँग्रेस-चालीसा

बंदउं काँग्रेस पार्टी, स्थापक ए.ओ. ह्यूम।
वृद्धा! लेकिन सोनिआ-पदरज लेती चूम।।
गौर-चरणचुम्बन रहा है जिसका इतिहास।
अंग्रेज़ी-माध्यम रही, भारी बाग्विलास।।
तिलक, शास्त्री तक नहीं बन पाए अध्यक्ष।
अपमानित मोरारजी, वंशवाद का पक्ष।।
नहीं 'गरम दल' भा सका, रहा 'नरम दल' शक्त।
जिसके नेता सदा से हैं पश्चिम के भक्त।।
जूता फेका तिलक पर और सुभाष पर 'नर्भ'।
हिंसा-वृद्धि सदैव की, लगा अहिंसा-वर्म।।

बंदउँ गांधी पद जलजाता।
बिड़ला औ बजाज से नाता।।
थे दरिद्रनारायण में रत।
सदा अरबपति उनके अनुगत।।
धन्य सादगी कुटिया छप्पर।
चरखा औ बकरी पावनतर।।
छप्पर पर खस-छप्पर सोहा।
जल छिड़काव देखि मन मोहा।।
"बापू की निर्धनता व्ययकर"।
सरोजिनी नायडू थीं मुखर।।
टाँग खिलाफ़त में अटकाई।
मालवीय को यह दुखदायी।।

हुए लाजपतराय दुखारी।
हेडगेवार बढ़ी लाचारी।।
इन सब ने पार्टी को त्यागा।
'निजता'-रोग हृदय में जागा।।
हुआ विभाजन, हिंसा भारी।
अब अशांति औ मारामारी।।
नेहरू पश्चिमवाद लुभाने।
"इंडिआ, दैट इज़ भारत" माने।।
अंग्रेज़ी की चली दासता।
उर्दू से था सदा वास्ता।।
हिंदी बस गद्दी-वश चाही।
संस्कृति की हो गई तवाही।।
शिक्षा में कम्युनिस्ट ढकेले।
वाङ्मय से वे खुलकर खेले।।
विजातीयता का है शासन।
शिक्षा औ साहित्य बने 'फन'।।

बनी विदेश-नीति अय्याशी।
नेता लगने लगे प्रवासी।।
छिना अंश कश्मीर तिहाई।
हुई चीन से विकट पिटाई।।
गद्दी से चिपके आद्यंता।
महिमा-गाथा भट्ट-भणंता।।
गद्दी जगीं इंदिरा गांधी।
वे थीं सत्तालिप्सा-आँधी।।
यद्यपि मिली सफलता भारी।
वंशवाद की पर लाचारी।।
हिंसा, भ्रष्टाचार बढ़ाया।
भस्मासुर बन स्वयं नसाया।।
तब राजीव गांधी आए।
"वंशवाद गतिशील" कहाए।।
था "गणतंत्र-दिवस" बतलाया।
लालक़िला झंडा फहराया।
"स्वतंत्रता का दिवस" न जाना।

किंतु राष्ट्र का नेता माना।।
आह, व्यक्तिपूजा हितघाती!
पीपल बनी राष्ट्र की छाती।।
प्रभाकरन्-अपमान किया था।
उसने ही अवसान किया था।।
तब भाए इतिहास के भुनगे।
अनायास ही भाग्य जगमगे।।
अज-पद सिंधु बनाय, बिगाड़े।
बहु निर्वाचन लड़े अखाड़े।।
सब में पिट कर टाँग फँसाना।
एकमात्र बल को पहचाना।।

बना 'अभाव' काँग्रेस-जीवन!
भरी अस्मिता, हत हैं सर्वप्रण।।
लगी आँख, कब दूजे हारें।
तब हम अपनी टाँग पसारें।।
अपनी जीत, ग़ैर जब हारे!
तब हों अपने वारे-न्याये!!
तुच्छ नकारात्मक है जीवन।
जिसमें ना होए कुछ-निजपन।।
वंशवाद की दास बन गई।
पदचुंबन की होड़ ठन गई।।
इटली-जन्मीं शुद्ध विदेशी।
मुसोलिनी-सेवक-परिवेशी।।
कोई ज्ञात न भारत-भाषा।
कट्टर कैथोलिक-अभिलाषा।।
था दलाल क़्वाट्रोची भागा।
वह इटैलिअन अति अनुरागा।।
अरबों रूपया देस-बिदेसा।
'नेतागीरी' का ही पेशा।।
वह सोनिआ बनीं अब नेता
वृद्ध केसरी-दलन! विजेता!
शत धिक्कार काँग्रेस को! हा!
शत धिक्कार कुदल जो मोहा!!

गौर-दासता राष्ट्र-कुष्ठ-सम।
अंग्रेज़ी-दासता अति विषमा।।

काँग्रेस ने देश को बाँटा, किया तवाह।
किंतु, आह, इसके बिना हो न सका निर्वाह।।
लाल, बाल या बोस हों, मालवीय या अन्य।
कभी नहीं स्थापित किया, माना नहीं अनन्य।।
होता रहा पटेल से लगातार अन्याय।
लोकेषणा-प्रबुद्ध की दुहता भारत-गाय।।
रुग्ण राष्ट्र की दीनता की प्रतीक काँग्रेस।
सदा लगाती जो रही राष्ट्र-हितों को ठेस।।
राष्ट्र-विभाजन, जाति का ज़हर, भयाकन लूट।
मुस्लिम-तुष्टीकरण के विषमय मारक घूँट।।

60. भाजपा-चालीसा

ओढ़ रामनामी सुखद करते राम-शिकार।
संस्कृति का नारा तथा अपसंस्कृति-प्रसार।।
संघ और परिषद् रहे दोनों बाहें खींच।
भानमती-कुनबा दले बत्तीसी को भींच।।
गद्दी चिपके जोंक-से तिल भर हया न शर्म।
खींसे सदा निपोरते बेशर्मी का वर्म।।
रोती हेडगेवार की आत्मा देख विलास।
राष्ट्रवाद का दलन औ जनता का संत्रास।।
सावरकर हैं स्वर्ग में चकित देख यह खेल।
सारे बन अंधे करें सत्ता-रेलमपेल।।

मुस्लिम-तुष्टीकरण विघातक।
आई.एस.आई. के पाठक।।
सी.आई.ए.औ ईसाई।
धर्मान्तरण-कुनीति चलाई।।
तुष्टीकरण सिखों का घातक।
जातिवाद-पोषण अतित्रासक।।
सी.आई.ए. से धन खाते।
आई.एस.आई. धन पाते।।
ऐसे देशद्रोहरत नेता।
बने 'सेक्युलर' और विजेता।।
हिंदू-प्रतिक्रिया स्वाभाविक।
बने राष्ट्र-नौका के नाविक।।

किंतु नहीं बहुमत मिल पाया।
सत्तालिप्सा ने भरमाया।।
हिंदू-प्रतिक्रिया का शोषण।
केवल निज स्वार्थों का पोषण।।
यह सच भारतीय हैं भटके।
जाति और धर्मों में अटके।।
राष्ट्र नहीं है, भीड़ मात्र है।
नहीं नागरिक, स्वार्थपात्र है।।
किंतु कार्य नेता क्या करता?
राष्ट्रवाद प्राणों में भरता।।
तिलक, पटेल कर गए ऐसा।
क्यों न भाजपा करती वैसा?
कारण? स्वार्थ! स्वार्थरत सारे!
कौन राष्ट्र पर तन-मन वारे?

रोग 'सेक्यूलर' इन्हें भी लगा।
पाखंडों से रहा जो पगा।।
अंग्रेज़ी-व्यामोह न त्यागा!
आह, राष्ट्र यह बड़ा अभागा!!
हिंदी में अंग्रेजी ठूसें।
हिंदी पर अडवाणी रूसें।।
कृष्णलाल, सुषमा की भाषा।
करती व्यक्त छिपी अभिलाषा।।
पदलोलुप अपराधी लाए।
मंत्रिपदों पर खूब जमाए।।
"सब ऐसा करते" की वाणी।
कभी नहीं होती कल्याणी।।
क्या आदर्श? ध्येय क्या? सारे।
में तुम एक? बनो कुछ न्यारे!!
यदि नेता भारत में होते।
पहले जनसंख्या पर रोते।।
दूजे, भ्रष्टाचार दबाते।
तीजे, पर्यावरण सजाते।।
पड़ते टूट सांप्रदायिकता।

पर, जिसकी है विकट अधिकता।।
जातिवाद-दानव से लड़ते।
द्विपदों पर वज्रों से पड़ते।।
जनसंख्या पर चुप्पी साधी।
पार्टी में पाले अपराधी।।
पर्यावरण बिगड़ता जाता।
कोई नहीं उपाय दिखाता।
फ़ेक-सेक्युलर बनने में रुचि।
मानववाद बिलखता जो शुचि।।

मस्जिद अटल-जेठमालानी।
पढ़ें नमाज़! न बेईमानी?
मुस्लिम 'मान्य' आडवाणी के!
संबंधी-प्रभाव वाणी के?
कर्णावती-सुनाम-विरोधी!
सुन 'हिंदुत्व' गरजते क्रोधी!!
दामादों का ही हितसाधन!
फिर क्यों किया राम-आराधन?
सच्ची समता का जो घोषक।
एक धर्म का कैसे पोषक?
गांधी, नेहरू की ही भूले।
रहे पाल, जनता को शूलें।।
सब धर्मों का समुचित आदर।
तब क्यों मुसलमान प्रति कादर?
हिंदू को ईसाई झाँसे।।
देता, धर्मान्तर में फाँसे।।
क्या सिख-पक्षपात 'सेक्यूलर'?
क्या गुजराली-पथ ही वरतर?
बौद्ध-तीर्थ-व्यय, वे अति जगमग।
हिंदू-तीर्थ उपेक्षित सब जग।।
नागनाथ वे, साँपनाथ ये।
हिंदू है अब भी अनाथ-से।।
फ़िल्में हों या हो क़व्वाली।
इस्लामी साँचों में ढाली।।

हिंदू सबका ही शिकार है।
उसकी ही हो रही हार है।।

फूटग्रस्त हिंदू बना, उसकी लूट-खसोट।
उस पर तुर्रा, सब दिखा देते उसकी खोट।।
बहुमत का अपमान है लोकतंत्र-अवसान।
सभी दलों का बन गया एकमात्र अभिमान।।
कभी धर्मनिरपेक्षता का आया ना दौर।
हिंदू की क्षति के बने अपने-अपने तौर।।
बहती गंगा, भाजपा भी धोती है हाथ।
हिंदू सदा अनाथ था, अब भी बना अनाथ।।
हिंदू के कर्तव्य हैं औ सबके अधिकार
वही 'धर्मनिरपेक्ष' जो सकता हिंदू मार।।

61. कॉम्युनिस्ट-चालीसा

तन-मन-धन जो बेचते विदेशियों के हाथ।
'भारतीय-हिंदू-दलन' ही बस इनकी गाथ।।
आज पूज्य हिटलर रहा, कल फ़ासिस्ट पिशाच।
आज गालियाँ गांधी! स्वामी-इंगित नाच!!
कल सुभाष फ़ासिस्ट थे, आज परम श्रद्धेय।
कल रवीन्द्र बूर्ज्वा परम, आज प्रेय औ श्रेय।।
बनने से भी पूर्व ये चारण-पाकिस्तान।
चरणवंदना आज भी सततसद्य अम्लान।।
के.जी.बी. के दास अब सी.आई.ए. के मित्र।
भारतीय कॉम्युनिस्ट हैं देशद्रोह के चित्र।।

"रूस चलो" का गाना गाया।
"चीनी हमला ठीक" बताया।।
रोमन लिपि में हिन्दुस्तानी।
बने राष्ट्रभाषा मन ठानी।।
राहुल और यशपाल निकाले।
न थे गुलामी साँचे ढाले।।
जो चिपका गद्दी ना छोड़े।
काल कराल मात्र मुँह मोंड़े।।
दसलखिया ही हैं जनवादी।
कॉफीहॉउस दीर्ध-विवादी।।
जो करोड़पति वह जनसेवक।
अंग्रेज़ी-नैया का खेवक।।

आर्य रूस से भारत आए।
नाटक यूनानी बतलाए।।
मूर्तिकला भी है यूनानी।
भारत की ना कौड़ी कानी।।
तुलसी बड़े प्रतिक्रियावादी।
गुप्त, प्रसाद, पंत बकवादी।।
अमर द्विवेदी हिंदूवादी।
भाषा ना दी सीधी-सादी।।
साम्यवाद साहित्य अपावन।
छीन रहा भारत-गौरव-धन।।
घृणावाद का घृण्य प्रचारक।
केवल स्वामीजन-हितधारक।।
ये इतिहासों के हत्यारे।
मिथ्यामय अपमान प्रचारें।।

तीनहज़ार साल इतिहासा।
यह ग़द्दारों की परिभाषा।।
राम, कृष्ण के परम विरोधी
सुन शंकराचार्य अति क्रोधी।
राम नाम सुन मिर्गी-दौरे!
पेट्रो-डॉलर-रस के भौंरे!!
भारत-गौरवभाव नसाते।
हीनभाव-रासभस्वर गाते।।
निर्धन नंगा-नाच दिखाते।
हितकारी बन ठसक जमाते।।
झूठा जीवन, झूठ फलसफा।
कॉम्युनिस्ट सत्य से है ख़फ़ा।।
रहा 'साम्यवादी' का मतलब।
'क्लीव' संस्कृत में, वह ही ढब।।
सदा रहे इतिहास-शिखंडी।
जो पैसा दे उसकी कंडी।।
राम-कृष्ण को कथा बताते।
बुद्ध और ईसा पर भाते।।
मोहम्मद-चरणों के पायक।

वैसे तर्कवाद के भत्रर्क।।
घृणावाद के मार्क्स प्रवर्तक।
उनकी श्रद्धा में चिरनर्तक।।
भाते हैं महमूद ग़ज़नवी।
ग़ोरी, बाबर चारण कई।।
औंरगज़ेब इन्हें भा जाते।
किंतु शिवाजी से अनखाते।।
दशरथ-जातक सच्चा पावन।
रामायण के झूठे हैं स्वन।।

बाबर ने कुछ भी ना तोड़ा।
सुस्थल को मस्जिद से जोड़ा।।
न था अयोध्या में देवालय।
रामकोट के प्रति अति अविनय।।
सत्ताइस सौ वर्ष पुराने!
प्रबल प्रमाणों को ना मानें।।
सागरतल-द्वारिका मिली है।
खिली न इनकी हृदय-कली है
साढ़े तीन हज़ार वर्ष की।
सिद्धि बडी इतिहास-हर्ष की
मोहेजोदड़ों मूर्ति नर्तकी।
ये टस-से-मस नहीं कुतर्की।
स्नानागार, वृषभ की मुद्रा
पशुपति योगी मुद्रा भद्रा
स्वस्ति,. चिह्न हड़प्पा वाला।
पर मन इनका केवल काला।।
स्नान, वृषभ, स्वस्तिक, नर्तकी!
पाँचहज़ार वर्ष! मति जकी!!
जड़बुद्धिता संस्कृतिधाती।
पत्थर अड़ता इनकी छाती।।
हैं इतिहासघात में डूबे।
सत्साहित्य देखकर ऊबे।।
है साहित्यघात व्रत इनका।
सब-कुछ हीनभाव-कृत इनका।

दाँव-धात की राजनीति है।
जनता की व्यापक न प्रीति है।।

जनवादी पर जन नहीं चलते इनके साथ।
अवसरवादी! पकड़ते रहते सबके हाथ।।
पड़े सोनिआ के चरण पर अब! सत्ता-भूख!
चिकने-चिकने गाल हैं कभी न पाते सूख!!
लीग, काँग्रेस, संघ के सत्तावादी मित्र।
हैं सिद्धान्तविहीनता के रोचक चलचित्र।।
दिया राष्ट्रनेता नहीं एक, क्षेत्रताबद्ध!
व्यापकता की कथा को गढ़ने पर सन्नद्ध!!
नहीं जड़ें हैं देश में, लगते कटी पतंग!
राष्ट्रघात-तत्पर सदा, पर गिरगिटिया रंग!!

62. गांधी-चालीसा

बंदऊँ गांधी के चरण, सजे पाँच सौ नोट।
जब सिक्कों, टिकटों छपे तब कैसी, क्या खोट?
जब असंख्य मूर्तियाँ हैं खड़ी देस-परदेस।
तब महानता पर कहीं लग सकती है ठेस?
जन्म सुदामापुरी[1] में, जीवन तद्वत् साज।
पहले जनमानस-नृपति! अब सिक्कों पर राज!!

पिता रहे दीवान सुजाना।
वैभव का था ताना-बाना।।
रहा पोरबंदर लघु राजा।
जूनागढ़ नवाब से काजा।।
कोनिश औ आदाब बजाए।
मन में शाही अदब समाए।।
मुस्लिम सेठ मुवक्किल पाए।
दक्षिण अफ्रीका जा छाए।।
संस्कारों से मुस्लिम-नत मन।
रोज़ी में पाया था बहु धन।।
टॉल्स्टॉय पदसेवक[2] माना!
ईसाई-जग प्रेम समाना।।
रही बुद्ध पर श्रद्धा भारी।
सत्य-अहिंसा के व्रतधारी।।
हिंदू जन्म, विश्व-संस्कारा।
विश्ववाद का मंत्र प्रसारा।।

थे अफ़ग़ान-अमीर-भक्तिरत!
हमले पर बनने को अनुगत!!
पुनः राजपद मुस्लिम पाएं!
जयति ख़िलाफ़त! गोरे जाएं!!
बड़ा प्रभाव जगत में जागा।
जिन्ना ने काँग्रेस को त्यागा।
असहयोग-संग्राम चलाया।
जब मन में आया, पलटाया।।
हुई अवज्ञा-सविनय भारी।
कुछ ना मिला, बढ़ी लाचारी।।
'डिक्टेटर'[3] बनने में रुचि थी।
केवल आत्मपरकता शुचि थी।।

मालवीय औ लाल हट गए।
हारे खरे, सुभाष नट गए।।
हेडगेवार संघ-निर्माता।
केवल गांधी भाग्यविधाता।।
भगतसिंह-आज़ाद-विरोधी।
केवल अपने पथ के शोधी।।
'भारत छोड़ो' कर से छूटा।
हिंसा से गोरा मन टूटा।।
विश्वयुद्ध-परिणाम विशाला।
ब्रिटिश-फ्रेंच थे हालबेहाला।।
"पाकिस्तान लाश पर" भूले।
काँग्रेसी सत्ता पा फूले।।
पिटी अहिंसा, थी लाचारी।
हुई भयंकर हिंसा भारी।।
सदा रहे मुस्लिम-हित साधक।
कुछ हिंदू बन गए विधातक।।
तीन अरब भारत के भूले।
पचपन-कोटि न देता शूले।।
अनशन कर था धन दिलवाया।
जग ने 'मानवता-हित' गाया।।
पर अनेक हिंदू मन धधके।

लगा, पार जाते हर हद के।।
सहते आए थे मनमानी।
हिंदी पर उर्दू लदवानी।।
भूषण के विरोध की ठानी।
बने समर्थक हिन्दुस्तानी।।
हिंदू पत्नी, मुस्लिम पति हो।
रहे समझते, ऐक्य-प्रगति हो।।

बहुत सहा, पर हुआ विभाजन।
टूटे कोटि-कोटि हिंदू-मन।।
सांध्या-सभा में चलीं गालियाँ।
रोदन मुखरित न थीं तालियाँ।।
बीस जनवरी सन् अड़तालिस।
फूटा बम, कंपित थे दस दिशा।।
तीस जनवरी भीषण हत्या!
हिंदू-हिंसा! भीषणकृत्या!!
यद्यपि वे थे नेता भारी।
नहीं 'महात्मा'-पद-अधिकारी।।
निज-पर, हिंदू-मुस्लिम सोचा।
पक्षपात में उन्हें दबोचा।।
विश्वख्याति-व्यामोह अपारा।
सत्य-अहिंसा उस पर वारा।।
"पाकिस्तान लाश पर" भूले।
जिजीविषा-विजिगीषा भूले।।
नेहरू-मोह राष्ट्रहितधारी।
लूट ले गया प्रण की थाती।।

भीषणतम हिंसा उपजाई!
आए! राष्ट्र पर अब भी छाई!!
सभी भाँति नेतृत्व विफल था।
केवल विश्व-ख्याति में कल था।
फिर भी, विश्वदृष्टि थी अनुपम।
जगत पूजता होकर निर्भ्रम!!

राजनीति में लिप्त, पर जीवन सर्वायाम।
निज-पर-मोह, तथापि थे पदविमुक्त निष्काम।।
सत्यव्रती ना रह सके, गई अहिंसा व्यर्थ।
तिलक[4], लाजपत[5], मदन[6] ने देखे पूर्व, अनर्थ।।
"ओह, विस्मया किष्टकर पाखंडी![7] गये शब्द!
नेहरू के हैं!! भूल क्या पाएंगे शत अब्द?

1. पोरबंदर (बाद का नाम)।
2. मोस्ट ओवीडीएंट सर्वेन्ट!
3. इतिहास साक्षी है। आंदोलन में भी।
4. गांधी भारत को कहाँ ले जाएगा! (चतुरसेन शास्त्री की आत्मकथा)
5. काँग्रेस छोड़ी।
6. काँग्रेस छोड़ी।
7. लेस्टर पीअर्सन की आत्मकथा।

63. नेहरू-चालीसा

धन्य जवाहर लाल जो स्थापक नेहरू-वंश।
मोतीलाल-प्रभाव औ राज कौल के अंश।।
मुग़ल-वंश था ढह रहा पर ऊपरला ठाट।
बुला श्रीनगर से बसा दिया क़िले की बाट।।
नहर चाँदनीचौक की, पास रहा आवास।
इससे नेहरू, नेहरू प्रचलित हुआ उजास।।

था फ़र्रुखसियार का शासन।
राज कौल अर्पित तन-मन-धन।।
हुई आनुवंशिक सेवाएं।
खाते थे शाही मेवाएं।।
गंगाधर नेहरू थे ख़ादिम।
शाह ज़फ़र का युग था मद्धिम।।
क्रमशः दिल्ली के कोतवाला।
ज़फ़र गए, पर नहीं कसाला।।
अंग्रेज़ों की सेवा भारी।
करते रहे बिना लाचारी।।
निधनांतर-सुत मोतीलाला।
मुग़ल-ब्रिटिश संस्कृति को पाला।।
उनकी चली वकालत भारी।
नेता, पर इंग्लिश-दरबारी।।
नियम बनाया बस अंग्रेज़ी।
घर में बही हवा चंगेज़ी।।

हुआ नर्स गोरी से पालन।
बुक्स करें शिक्षा-संचालन।।
तब हैरो ब्रिटेन प्रस्थाना।
भव्य रईसी तानाबाना।।
ऊँची शिक्षा कैम्ब्रिज पाई।
"शिक्षा से मैं हूँ ईसाई।।"
"संस्कारों से मुस्लिम" बोले।
'भारत खोजा' जग में डोले।।
गांधी ने निज-पूजा देखी।
नेहरू में सत्ता अवरेखी।।
बजट लियाक़त का गिरवाया।
जिन्ना को प्रतिद्वंद्वी पाया।।

गांधी का प्रण-प्राण हिलाया।
भारत टूटा, पर पद पाया।।
तृतीयांश कश्मीर का खोया।
तिब्बत में देशहित बिगोया।।
बसे दलाई लामा, भड़का।
चीन रहा तबसे ही हड़का।।
शक्ति-समय खोयाः यश पाऊँ
शांतिदूत बन पूजा जाऊँ!!
नोबेल प्राइज़ को पा जाऊँ!
विश्व-ख्याति को सतत बढ़ाऊँ!!
पिटता रहा देश, वे घूमे!
जगयात्रा-यश-मद में झूमे!!
चीनी मार पड़ी पर भारी।
दुर्बलता भीषण लाचारी।।
बने शेख़ चिल्ली औ टूटे।
किंतु भाग्य भारत के फूटे।।
श्रम-संस्कृति पनपा ना पाए।
उत्पादकता - धर्म नसाए।।
'सार्वजनिक-उद्योग'-रोग था!
श्रम-संस्कृति का पर न योग था।।
'कीर्तिमान'-आडंबर भारी।

आज देश की है लाचारी।।
अजगर-शहर बनाए तुमने!
छोटे - ग्राम नसाए तुमनें!!
नेता - यात्रारोग लगाया।
अरबों का धन व्यर्थ नसाया।।
दो विदेश-खाते चलते थे!
अन्यों को भी ना खलते थे!!

आज देश-धन है विदेश में
जनता सड़ती कठिन क्लेश में
उद्घाटन, आश्वासन भाषण।
नेता-रोग! जलाते जन-मन
नेता-रक्षा पर अपार व्यय
निर्धन राष्ट्रवित्त भीषण-क्षय
विविध भोज, लुटती थी जनता
भोगवाद का ताना तनता।।
पश्चिमवाद देश पर छाया।
राष्ट्र-अस्मिता हेतु छलावा,
दल-दलदल साहित्य फँसाया
कवियों ने भोंपू बन गाया।
नेतामरण-समाधि-वित्तक्षय
रोग लगाया तुमने निश्चय
निधन हुआ तो स्मारक छाए।
अरबों-खबरों का धन जाए।।
शव की भस्म जीवितों के सिर।
संस्कृति-पतन हो गया है स्थिर।।
मूर्ति, संग्रहालय, वन, शत पथ।
प्रतिमाएं, संस्थाएं, व्ययगथ।।
पुरस्कार, स्मारक-भाषण व्यय।
राष्ट्रवित्त का दुर्वहतर क्षय।।

वंशवाद ने रोग बढ़ाए।
राष्ट्रोन्नति के पथ बिनसाए।।

स्वतंत्रता-संघर्ष के नेता एक महान्
शासक प्रथम सुदीर्घ-पद, विश्वख्याति अम्लान्।।
किंतु राष्ट्रहित कर नहीं पाए औ इतिहास।
होता बहुत कठोर है, ना भविष्य की आस।।
सर्वायामी विफलता नेहरू की पर्याय।
जो निजता-आबद्ध हो उसकी कीर्ति नसाय।।

64. विषनाथ-चालीसा

विश्वनाथ विषनाथ हैं, जातिवाद-फूत्कार!
बढ़े सांप्रदायिक बहुत, लेकिन फिर भी हार!!
जाति-पाँति ढहती लखी, खड़ा किया कर यत्न।
जातिवाद-ज्वाला जली, वे चमके ज्यों रत्न।।
मंडल का बंडल खुला, पैंडोरा का बॉक्स!
हुए बुख़ारी राजगुरू, 'सोशलीक्विटी' टॉक्स!!

माँडा का राजा क्या माँड़ा?
जिसने था राजीव पछाड़ा।।
स्वयं वित्तमंत्री-पद सोहे!
पर 'बोफ़र्स'-कांड पर कौह!!
चरण इंदिरा के थे चूमे।
संजय के इंगित पर घूमे।।
थे राजीव गांधी पायक।
पीठ छुरा मारा बन नायक।।
सत्तालिप्सा-अवसरवादी।
आह, राष्ट्रघाती! बर्बादी।।
जाति-विशेषाधिकारवादी।
की विभक्त सारी आबादी।।
आत्मदाह युवकों का होता।
नेता पर अवसर ना खोता।।
मरें लोग, हो भारत गारत।
बस, अपनी गद्दी हो अक्षत।।

स्वयं सवर्ण, सवर्ण-विरोधी!
जातिवाद-मथ नूतन-शोधी!!
चढ़ वातानुकूल-कॉन्टेसा!
कुछ पल बस पर समतावेशा!!
राजनीति में थे जब आए।
शास्त्री से टीका लगवाए।।
किया विनोबा को भूदाना।
त्याग-प्रशंसामय था बाना।।
पर पत्नी ने सब लौटाया।
पागलपन का करके दावा।।
सटीफ़िकेट डॉक्टर वाली।
आवेदन में बढ़िया घाली।।

श्रेय प्रेय का दास बनाया।
पाखंडी बन स्वार्थ बढ़ाया।।
नेहरू-वंश गुलाम पुराने!
'इमरजेन्सी' अच्छी मानें!!
छुरा पीठ पर उसके मारा,
केवल अपना स्वार्थ पसारा।।
'अनुसूचित' सज्जन हरवाया।
लालू को बिहार पर ढाया।।
थे उत्तर प्रदेश के नेता।
बने मुलायमसिंह विजेता।।
लालू भ्रष्टाचार-रूप हैं।
लटकों-झटकों में अनूप है।।
बना बिहार मज़ाक जगत् में।
'दलित मसीहा' अपने मत में।।
बने मुलायम मुस्लिम-नेता!
यादववादी समताचेता!!
देश मुज़फ़्फ़रनगर न भूले!
पर वे निज गौरव में फूले!!
आह, अयोध्या के अपराधी!
आह, 'धर्मनिरपेक्ष' उपाधी!!
जब विषनाथ रहे ना नेता।

सबने त्यागा! सभी विजेता!!
रोगी-रूप करोड़ों नासे।
दीन देश को अब भी झाँसे।।
देश-विदेश इलाज कराते।
भूखे भारत का धन खाते।।
पर पापों का दंड भयानक!
सभी जानते, स्वयं रहे तक!!

युवक-आत्मदाहों के कारण!
कैसे होगा कष्ट-निवारण?
जातिवाद-आखेटक पापी!
सुखी न रहता परसंतापी।।
नेता जो लिंकन-सा लड़ता।
राष्ट्रविखंडन कभी न करता।।
नेता स्टालिन विजय दिलाता।
शत्रु-नगर झंडे फहराता।।
क्या अंफ़ीमची चीन सँवारा।
माओ मुक्त ख्याति की कारा।।

क्या अमेरिका को लतियाया!
हो ची मिन्ह! जगत् यश छाया!!

सफल रहे हैं पाकी-नेता!
छदम् युद्ध के दीर्घ-विजेता!!

भारत को सब विधि लतियाते!
पर भारतवासी पद-राते!!

भारत-नेता राष्ट्र-विघातक!
विश्वख्यातिरत भारत त्रासक!!

विश्व-कूटचक्रों का दंगल!
राष्ट्र-विभाजन करते मंगल!!

धिक् भारत-जन रोटी-राते!
निर्वाचन-धारा बह जाते!!

व्यक्ति पूजते, राष्ट्र ढहाते!
ऐसे राष्ट्र न नेता पाते!!

वंशज हैं जयचंद्र के, कैसे हो न प्रभाव?
जीते हैं राजा-सदृश, पर समता का भाव!!

'जातिवाद-दाहक' सदा मानेगा इतिहास!
जीवन में भी मारता दुष्कर्मों का त्रास!!

पाते जो इतिहास के भुनगे, उनके कर्म!
सदियों को पददलित कर राष्ट्रवाद का धर्म!!

65. सोनिआ-चालीसा

पहले नेहरू-वंश को करूं विनम्र प्रणाम!
जो सदैव से ही रहा सत्ता-वैभव-धाम!!
मुग़ल-ब्रिटिश-ऐश्वर्य का संगम हुआ महान्।
रचे चारणों ने सदा चरणों पर शत गान!!

फ़र्रूखसियर देहली लाए।
राज कौल दरबार सुहाए।
गंगाधर नेहरू की सेवा।
शाह ज़फर की खाई मेवा।।
सत्ता बदली, गोरे आए।
उनको भी वे बेहद भाए।।
मोतीलाल वकालत भारी!
अंग्रेज़ों के भी दरबारी।।
हैरो-हीरो बने जवाहर।
नटनागर भी वे नरनाहर।।
देश-विभाजक-सत्ता पाई।
पंचशील-डफली फटकाई।।
बाँट दिया कश्मीर सुहाना।
शांतिदूत बनना-प्रण ठाना।।
तिब्बत चीनी झोली डाला।
फिर भी सहना पड़ा कसाला।।
सत्रह वर्ष सजे सिंहासन।
मरने पर अरबों का व्यय धन।।
पुनः इंदिरा गांधी आईं।

सत्तालिप्सा में भरमाई।।
हटना पड़ा, किंतु दोबारा।
सिंहासन ने उन्हें पुकारा।।
तब राजीव गांधी आए।
जीन्स-शर्ट त्यागा, मनमाए।।
स्वतंत्रता का दिवस मनाया।
पर 'गणतंत्र-दिवस' बतलाया।।
लंका में सेना भिजवाई।
बदनामी के साथ पिटाई।।
राहुल थे नाबालिग़ प्यारे।
'नरसिम्हा' के वारे-न्यारे।।
रहे परम-विद्वान्, सयाने।
परम भ्रष्ट पर जनता माने।।
बीच-बीच के क्षेपक सारे।
व्यर्थ गए, सारे ही हारे।।
असफल होते जब देसाई।
रहे राष्ट्र के प्यारे भाई।।
चरणसिंह के चरण टिके ना।
किंतु किसी से कभी बिके ना।।
राजवंश-सेवक तब आए।
विद्रोही तमगा लटकाए।।

विश्वनाथ विषनाथ लगे थे।
चंदू अपने हाथ बिके थे।।
एक जातिवादी ज्वाला था।
दूजा धन का मतवाला था।
देवे गौड़ा औ गुजराला।
सबके ही थे हाल बेहाल।।
अटल की रही विचलित सत्ता।
अतः बढ़ी सोनिआ महत्ता।।
पुनः इन्दिरा-युग की बातें।
जिनमें मिली हुई हैं धातें।।
धन्य-धन्य सोनिआ सुहानी।
लालू तक भरते हैं पानी।।

भक्त मुलायम करते सेवा!
मुस्लिम-यादव जिसके सेवा।।
वृद्ध ज्योति वसु सीस झुकाए!
नवचारण सुरजीत सुहाए!!
प्रबल पराक्रम जगमग काया।
वृद्ध केसरी वाहन पाया!!
करते प्रणव चरण की सेवा।
जिससे फिर खा पाएं मेवा।।
लिए छत्र पीछे ही डोलें।
दीन 'छत्रपति' मुँह ना खोलें।।
मुसोलिनी-सेवक की जाया।
क्वाट्रोची-सेवाफल पाया।।
हे प्रभु! शीघ्र सोनिआ लाओ।
भारत पर सोना बरसाओ।।
काला देश, गौर महरानी।
शोभा किससे जाय बखानी।।
विक्टोरिआ-ज़माना पावन।
अमी-कटोरी सब मन भावन।।
'परम धर्मनिरपेक्ष' महाना।
'कैथोलिक' का ताना-बाना।।
गौर-जगत् की कृपा सुहानी।
उनके साथ स्वतः ही आनी।।
हिंदी चिंदी-चिंदी होए।
इंग्लिश भारत-बिंदी होए।।
होए मुसोलिनी-सा शासन।
ही आपातकाल-अनुशासन।।
सूत 'सोनिआ की जय' बोलें।
अन्य भयातुर मुख ना खोलें।।

छुएं मुलायम चरण औ जित देखो तित लाल।
सेवानत गौड़ा रहे, सेवारत गुजराल।।
भारत होए इंडिआ, इटली-सा हो देश।
कहें "सोनिआ इंडिआ एक", मिटें सब क्लेश।।

66. उर्दू-चालीसा

जय उर्दू! जय कामिनी! जय चलचित्र-जुबान!
नेहरू, सप्रू भक्त थे, मुल्ला[1] थे कुरबान।।
शाही-भाषा जीतती, लोकतंत्र नत! गर्व।
हैं गुलाम गुजराल-से अर्पित तन-मन-सर्व।।
कव्वाली है धन्य! है मध्यकाल जीवन्त।
ग़ज़ल ग़जाला का समय किए हुए द्युतिमंत।।
इश्क़, फफोले, जिगर, मय, प्याला औ जज़्बात।
वफ़ा-जफ़ा करते रफ़ा-दफ़ा विकट हालात।।
क्या कहना 'अहसास' का, मीठा खट्टा दर्द!
वे भी बेहद झूमते जिनके चेहरे ज़र्द।।

उर्दू। पावन तुर्की काया।[1]
अरबी-सम्मुख साथ झुकाया।।
चरण फ़ारसी के जो लेटी।
सेवारत हिंदी-याँ चेटी।।
बूढ़ी माँ है पान लगाती।
युवती बेटी खूब चबाती।।
परिचय पर सेविका बताती।
गुस्से पर बेहद गुर्राती।।
सलातीन सुल्तान बहुवचन।
शोअरा शायर का! मोहे मन!!
पैग़म्बर अम्बिया सगाना।
हालात का हालात सुहाना।।

तीन-तीन भाषाएं आये।
हिंदी-शैली पर ना त्यागे।।
ग़म ग़मगीनी में रंगीनी।
साक़ी से जी भर मय पीती।।
वाह, मरहबा और मुकर्रर।
उड़ती चिल्मन फर्-फर् सर्-सर्।।
शर्म-हया आँधी बन आती।
भर जाती हसरत से छाती।।
मदिरा टपके रसिया चाँटे।
जो ना चाँटे उनको डाँटें।।
मदिरा-गंध चहूँ दिशि छायी।।
मुशायरे को मस्ती भायी।।
झूम रहे शायर औ नेता।
यह सलाम देता वह लेता।।

धूम्रपान घन-घटा सुहायी!
पूस बीच सावन सुखदायी!!
वाह-वाह की उठती तानें।
कोई हाय-हाय की ठानें।।
मस्ती-चुस्ती में सब पागे।
सोये-सोये लगते जागे।।
गो मुशायरा पागलखाना।
सबको पड़ता बुद्धि गँवाना।।
लाखों पाकी फ़नकारों को।
बड़ी अक़ीदत है यारों को।।
कहीं नाम गलिब का आया।
तो यारों ने अर्श उठाया।।
हैं 'दीवान' एक औ छोटा।।
यार लगाते रहते घोटा।।
इश्क, हुस्न, औ दर्द लुभाने।
मुग़ल-पतन के ताने-बाने।।
कोई दर्शन नहीं, प्रेरणा।
पर 'महानता'-राम है घना।।
ग़ालिब कवि समतुल्य बिहारी।

कालिदास तक टाँग पसारी।।
बात शैक्स्पीअर की होती।
गेटे की सी लखते जोती।।
रहे शराबी और जुवारी।
ऐयाशी में उम्र गुजारी।।
जुआँ जेलयात्रा करवाता!
कर्ज अदालत तक दौड़ाता।।

पता नहीं, आदर्श कौन-सा?
मिलता कहाँ विमर्श कौन-सा!!
किंतु धन्य है उर्दूबाजी!
ग़ालिब-महानता पर राज़ी!!
ऐवानेग़ालिब को साजा।
ग़ालिब अकादमी से गाजा।।
है समाधि का उचित समादर।
फिर भी, सदा 'उपेक्षा' का स्वर।।
धन्य धन्य उर्दू के पायक!
गुजराली सेवा के नायक।।
दिल्ली, यू.पी. औ बिहार में।
आंध्र आदि तक हैं बहार में।।
कश्मीरी, डोगरी लद्दाखी!
किंतु राज्य है उर्दूभाषी!!
पाकिस्तान पर करे शासन!
पंजाबी-सिंधी का हर धन!!
पश्तों औ बलोच भाषाएं।
आहत सारी अभिलाषाएं।।
हिंदी है ग़रीब की जोरू।
ऊपर से उर्दू घरफोड़ू।।
किंतु अस्मिता जब भी जागी।
होगी तब सब की आज़ादी।।
बांग्लादेश बनाया किसने?
उर्दू थोपा उस पर जिसने।।
उर्दू नहीं जा सकी लादी।
बनी एक भारी बर्बादी।।

अब पेट्रोल डॉलर मदमाती।
दलती है हिंदी की छाती।।

हिंदी की बेटी, किया माँ का सदा विरोध।
किंतु निकलता ही रहा इस विरोध का शोध।।
दास्यभाव को पालती, हीनभाव को सींच।
पर कब तक रख सकेगी सत्य-नेत्र यह सींच।।
खुद उर्दू-ए-मुअल्ला, 'हिंदी मुश्किल' राग!
पर कितने दिन चलेगा यह फेक्यूलर गान।।
कहाँ रहे अब 'शाह' औ कहाँ गई वह शान!
नवयुग में कब तक चलेंगे ये शाही गज!!
आई.एस.आई. सबल, पेट्रो डॉलर जाल।
पर कितने दिन सकेगा, यह सच्चाई टाल।।

1. आनंद नारायण मुल्ला।
2. तुर्की शब्द उर्दू का अर्थ है लश्कर का सेना का छावनी जहाँ यह मिश्रित भाषा बनी।

67. 'सेक्यूलर'-चालीसा

हिंदू-गदहा धन्य है चर सेक्यूलर-धास।
फिर भी, मुस्लिम-क्रिश्चिअन-धोबी देते त्रास।।
काँग्रेसी-काम्युनिस्ट का लकलक-दगदग वेश!
धोबी-जन गद्गद रहें, गदहों का क्या क्लेश!
जोता जाता बैल है, सिंह नहीं! चिरसत्य।
स्वामी स्वामी है तथा भृत्य रहेगा भृत्य।।
सेक्यूलर महमूद था, बाबर, औरंगज़ेब।
अब है मुस्लिम लीग की सज-धज अति औरेब।।
सब ईसाई सेक्युलर और सोनिआ भाल!
ईसाई को उड़ीसा-गद्दी दिया उछाल!!
जय हो 'फ़ादर' स्कॉट की, नागालैण्ड! प्रणाम।
धन्य मिज़ोरम! धन्य है मेघालय अभिराम!!
तीसलाख जन भोगते ईसाई-त्रय-राज्य!
ईसा की जय! अन्य क्षय! भारत है अविभाज्य!!
जय कश्मीर जहाँ बना केवल मुस्लिम-राज!
क्या होता यदि काफ़िरों के सिर पड़ती गाज!!
जम्मू हिंदू-बहुल है; फिर भी, खाता मार।
बहुत कबूतर पर सदा बनते बाज़-शिकार।।
लोकतंत्र में धन्य हैं 'शाही' पाक इमाम!
'सेक्यूलर' फ़तवे सदा ही देते अभिराम।।
कहते, जब इस्लाम का होगा यहाँ निज़ाम।
तभी बनेगा राष्ट्र यह पाक 'सेक्युलर-धाम।।
उनके पावन चरण पर नत वी.पी.[1] का भाल।

मंडल का बंडल बना सारा देश कराल।।
सुहरावर्दी धन्य थे, देख विभाजन-तुष्ट।
पूछा गया कि क्षेत्र अब कमतर! कैसे पुष्ट।।
बोले, "हिंदू दूसरों के शासन-अभ्यस्त।
पैर जमाने दो ज़रा, उन्हें करेंगे पस्त।।"
जय गांधी जिनने कहा", भारत आए लोग!
क्यों बलिदान नहीं किया वही?" अहिंसा-योग!!
जय नेहरू, बरसा दिए बम बिहार पर! त्राण।
मुसलमान का लक्ष्य था! 'सेक्यूलर'-निर्माण!!
गांधी, नेहरू को नहीं नोबेल-प्राइज़ प्राप्त।
हो पाया—हा, शोक! पर नाम विश्व में व्याप्त।।
विश्व-ख्याति है परम धन! भारत जाए भाड़!
मरा-सड़ा हिंदू नहीं सकता रोम उखाड़।।
अटल फटल का शटल है धन को रहा लुटाया।
हज-व्यय पार अरब गया! 'सेक्यूलर'-छवि छाया!!
त्रिशती होती ख़ालसा परम 'सेक्यूलर' धन्य!
एकअरब तो केन्द्र से, शेष राज्य और अन्य।।

बकरा हिंदू ताकता टुकुर-टुकुर सब खेल।
ऊपर से निंदा अमित भी सकता है झेल।।
बकरा कटता, भेड़िया नहीं! यही इतिहास।
हिंदू-बकरे के लिए ना भविष्य ना आस।।
वृद्ध ज्योति वसु तक रहा चरण सोनिआ लोट।
लालू चरणों पर पड़ा अतः नहीं कुछ खोट।।
बहुत मुलायम पद मगर जब देते ठुकराय।
तब गद्दी पर दृग गड़ा चिल्लाता है 'हाय'।।
इटली पर सोलह बरस तक था व्याप्त विमोह।
भारत-वास परंतु था मातृभूमि प्रति छोह।।
भारत-भाषा एक भी सीख सकी ना, धन्य!
अंग्रेज़ी बस काम की! पर सब चरण-अनन्य!!
हीनभाव इतना कहीं ना दीखाः पद-गौर!
विनत सभी! सबको नहीं दीखा कोई ठौर।।
रहे अहमदाबाद ही, कर्णावती न नाम।
अडवाणी की गर्जना! नहीं राम से काम।।

एक भतीजी मुसलमाँ, है लंदन में वास।
दामादों के प्रति सदा आदर औ आश्वास।
अधिक प्याज़ खाता नया मुसलमानः सब देख।
रहे अटल इत्यादि का नया रूप औ लेख।
राम 'सांप्रदायिक' हुए बुद्ध 'धर्मनिरपेक्ष'।
कृष्ण बंधे 'हिंदुत्व' में, ईसा हैं जग प्रेक्ष्य
अमर शंकराचार्य हैं 'कम्युनल' कालातीत।
औ मोहम्मद 'सेक्युलर', सकते जग की जीत।।
तुलसी 'कम्युनल', 'सेक्युलर', है कबीर आदर्श।
नारीनिंदा में अतुल औ अपशब्द-विमर्श।।
अमर द्विवेदी[2] 'कॉम्युनल', गुप्त रूढ़ औ पंत।
भारतेंदु हैं 'सेक्युलर', प्रेमचंद मतिमंत।।
है प्रसाद 'कॉम्युनल' औ हिंदू से संपृक्त।
किंतु निराला 'सेक्युलर' औ 'प्रोग्रेसिव' व्यक्त।।
यही 'धर्मनिरपेक्षता! राष्ट्रद्रोह का मंत्र।
कम्युनिस्टों ने वाङ्मय किया वाद का तंत्र।।
बाँटा बस हिंदू गया और सभी हैं एक।
हिंदू निंदा ही बनी है 'सेक्यूलर'-टेक।।
हिंदू-तिलक जघन्य है, सिख-शाश्रु परम 'सुधार'।
हिंदू-चोटी हास्यप्रद, मुस्लिम-दाढी प्यार।।
पंडित पापी, मौलवी- 'फादर-'मदर' पुनीत।
ज्ञानी-ग्रंथी मानप्रद, इन-सब से ही प्रीत।
सत्य नहीं, निष्ठा नहीं, तर्क नहीं, ना न्याय।
आह, 'धर्मनिरपेक्षता' हिंदू चरती जाय।।

1. 'समता के मसीहा' विषनाथ पर-ताप सींघ जी।
2. आ० महावीरप्रसार द्विवेदी : अधुनातन हिंदी के जनक।

डॉ. रामप्रसाद मिश्र

जन्मतिथि : सोमवार, आश्विन कृष्ण 4, 1989 (19-09-1932—02-02-2007)।

जन्मस्थान: निंबई, ज़िला उन्नाव, उ.प्र.; पैतृकस्थान: दौलतपुर, ज़िला रायबरेली, उ.प्र. शिक्षादि कानपुर।

निवास : एच-41, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

दूरभाष : 28540735, 28542601

काव्य:

1. दृष्टि (22 सर्ग), 2. वेदायन (12 सर्ग), 3. मुहम्मद (7 सर्ग), 4. सार्वभौम (विशाल संग्रह), 5. कल्पांत (15 सर्ग), 6. पुरुषोत्तम (38 सर्ग)

उपन्यास:

1. कुछ खोता कुछ पाता गाँव, 2. बीसवीं सदी (सा.), 3. झूठै लेना झूठै देना

आलोचना:

1. हिन्दी साहित्य का वस्तुपरक इतिहास, 2. तुलसी-सर्वेक्षण, 3. प्रसाद: आलोचनात्मक सर्वेक्षण, 4. विश्वकवि होमर और उनके काव्य

अन्य:

1. विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य, 2. मौर्ख्यशास्त्र (ईडिऑटिक्स), 3. दलित साहित्य, 4. जीवन एक रंग अनेक, 5. जीवन तेरे कितने रंग, 6. हिंदू धर्म: फ़ेथ ऑफ़ फ्रीडम, 7. ऑउट्लाइंस ऑफ़ हिंदी लिटरेचर, 8. इंडिआज़ यूनिटी, कल्चर एंड कॉंट्रिब्यूशन, 9. ऑफ़ लांइफ़ ऑफ़्फ़ लाइफ़ (विविध निबंधादि)

- शताधिक महत्वपूर्ण भाषण, 13 पुरस्कार, लगभग 50 सम्मान एवं उपाधियाँ।
- 'वाद', 'दल' 'राजनीति' इत्यादि से मुक्त सत्य-साधना, लाभहीन लेखन।
- 7. ग्रंथों, अनेकानेक लेखों, 3 शोधग्रंथों द्वारा आकलन 3 शोध गतिमान्। अनेक कवियों द्वारा काव्य-प्रशस्ति।

नमन प्रकाशन

1/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष : 23247003, 23254306
Fax No. 011-23254306

Rs. 250/-

ISBN 81-8129-263-4

9788181292636